॥ जय सीयाराम ॥

॥૨૧૭॥

॥ रामकथा ॥

मोरारिबापू

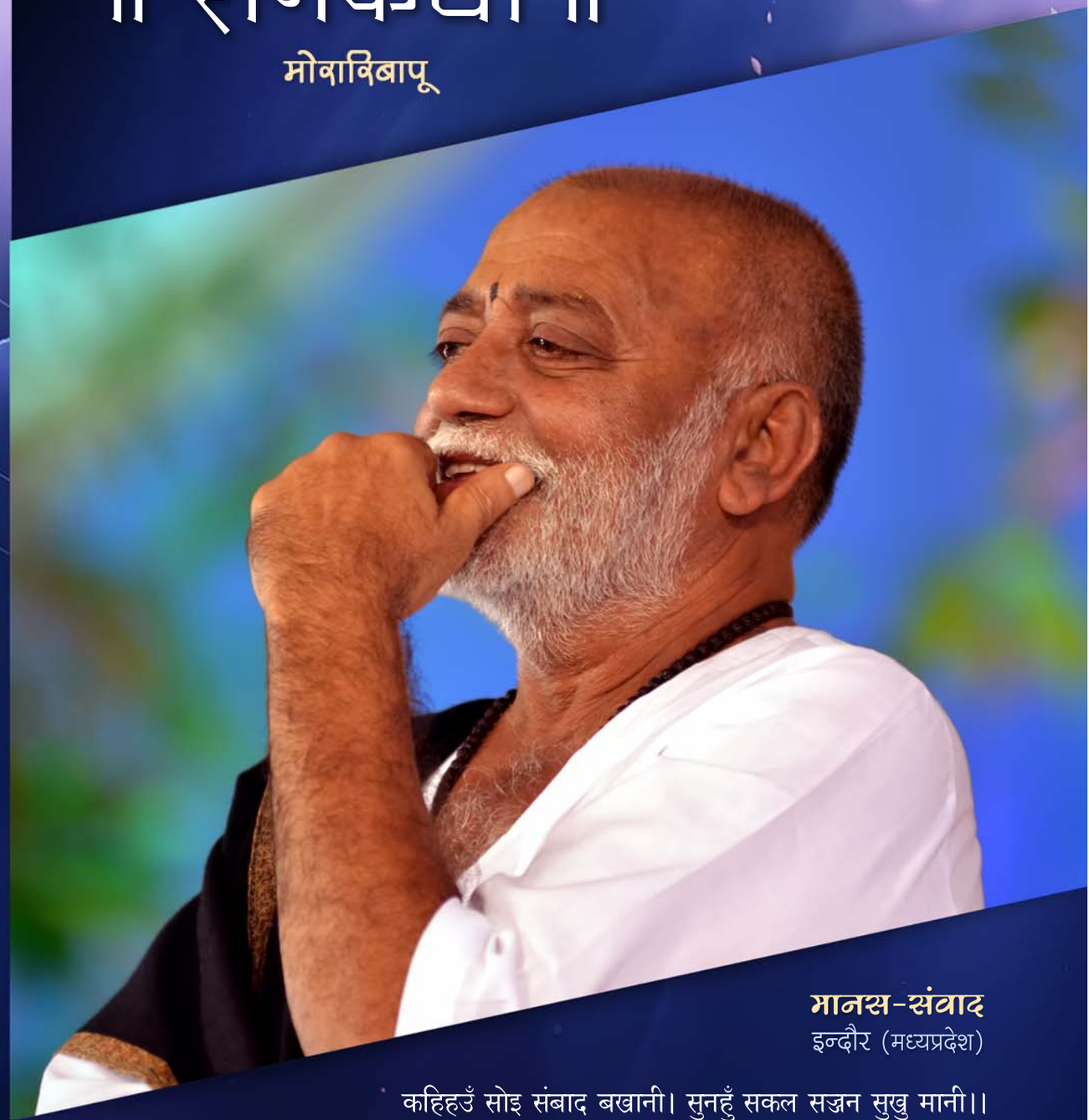

मानस-संवाद

इन्दौर (मध्यप्रदेश)

कहिहउँ सोइ संबाद बखानी। सुनहुँ सकल सज्जन सुखु मानी॥
यह संबाद जासु उर आवा। रघुपति चरन भगति सोइ पावा॥

१ रामकथा संवाद से भरा हुआ शास्त्र है

२ भक्ति का सर्वोत्तम शिखर है प्रेम

३ आदमी जब ऊंचाई पर जाएगा, विवाद करेगा ही नहीं, संवाद ही करेगा

४ विवाद पंडितों में होता है, साधुओं में नहीं

५ संवाद आध्यात्मिक जागृति है

६ शब्द भी संवाद कर सकता है और सूर भी संवाद कर सकता है

७ बुद्धपुरुषों की भाषा करुणा से भरी होती है

८ श्रद्धाजगत में गुरुचरणपादुका की बड़ी महिमा है

९ प्रेम का विश्वविद्यालय वृंदावन है

|| रामकथा ||
मानस-संवाद

मोरारिबापू
इन्दौर (मध्यप्रदेश)
दिनांक : ०३-०८-२०१३ से ११-०८-२०१३
कथा-क्रमांक : ७४८

प्रकाशन :
जनवरी, २०१४

प्रकाशक
श्री चित्रकूटधाम ट्रस्ट,
तलगाजरडा (गुजरात)
www.chitrakutdhamtalgajarda.org

कोपीराईट
© श्री चित्रकूटधाम ट्रस्ट

संपादक
नीतिन वडगमा
nitin.vadgama@yahoo.com

राम-कथा पुस्तक प्राप्ति
सम्पर्क-सूत्र :
ramkatha9@yahoo.com

ग्राफिक्स
स्वर अेनिम्स

प्रेम-पियाला

मोरारिबापू की रामकथा ता. ३-८-२०१३ से ११-८-२०१३ दरमियान इन्दौर (मध्यप्रदेश) में सम्पन्न हुई। 'मानस-संवाद' पर केन्द्रित हुई इस कथा में बापू ने संवाद का माहात्म्य व्यक्त किया एवम् 'रामचरित मानस' के नानाविध संवादों का परिचय भी दिया।

रामकथा के आरंभ में ही मोरारिबापू का निवेदन रहा कि, '' 'रामचरित मानस' संवाद से भरा हुआ शास्त्र है। याज्ञवल्क्य और भरद्वाजजी का संवाद, उमा और शिव का संवाद, लक्ष्मण और रामजी का संवाद, भरत और रामजी का संवाद, कागभुशुंडि और गरुड जीका संवाद, कितने संवाद हैं! बहुत-से संवादों से संदेश प्राप्त होता है। काश, ये संदेश हम ग्रहण करें और विश्व तक पहुंचाये रामकथा के माध्यम से।''

संवाद के कुछ प्रकार निर्दिष्ट करते हुए बापू ने कहा, ''एक, जिसको मेरी व्यासपीठ मौन संवाद कहती है। जिसमें एक भी शब्द का आदान-प्रदान न हो। दूसरा संवाद होता है आंखों से। नेत्रों से संवाद होता है और यदि विवेक न रहा तो नेत्रों से किया गया संवाद बहुत बड़ा विवाद भी पैदा कर सकता है। तीसरे प्रकार का संवाद है संकेत। हमारे यहां संकेतों में सत्संग होता था। मर्मी समझ पाते थे और संवाद हो जाता था।'' तो, साथ ही बापू ने कहा कि बुद्धपुरुष की पादुका भी संवाद बन सकती है।

'रामचरित मानस' में राजसी, तामसी और सात्त्विकी जैसे तीन प्रकार के संवादों को भी बापू ने रेखांकित किया। राजा प्रतापभानु और कपटमुनि के बीच हुआ राजसी संवाद; लक्ष्मण और परशुराम एवम् अंगद और रावण के बीच हुआ तामसी संवाद तथा नारद और राम, राम और लक्ष्मण, केवट और राम, जनक और भरत, शबरी और राम, भरत और राम के बीच हुए सात्त्विकी संवाद के दृष्टांतोंसे बापू ने इस तीनों प्रकार के संवादों का विशद विवरण किया।

'संवाद आध्यात्मिक जागृति है।' ऐसा सूत्रपात करते हुए मोरारिबापू ने 'मानस-संवाद' कथा में संवाद की महिमा प्रस्तुत की और राजकीय क्षेत्र, सामाजिक क्षेत्र, धर्मक्षेत्र, अध्यात्मक्षेत्र जैसे हरेक क्षेत्र में संवाद की हिमायत भी की।

– नीतिन वडगमा

मानस-संवाद
|| १ ||

रामकथा संवाद से भरा हुआ शास्त्र है

कहिहउँ सोइ संबाद बखानी। सुनहुँ सकल सज्जन सुखु मानी।।
यह संबाद जासु उर आवा। रघुपति चरन भगति सोइ पावा।।

बापु, बहुत सालों के बाद मध्यप्रदेश की इस इन्दोर नगरी में वैसे तो महाकालका क्षेत्र है, उसमें रामकथा लेकर फिर आने का अवसर मिला। मैं प्रथम दिन मेरी प्रसन्नता व्यक्त करता हूं कि यहां आप आये। अभी एक कथा के आरंभ में तमाम धर्मों के वरिष्ठ आदरणीय पूजनीय श्रीओंने व्यासपीठ के पास आकर, व्यासपीठ के प्रति अपना आदर प्रस्तुत किया। मैं सबको प्रणाम करता हूं। ये आदर अपनी उदारता का परिचय है। हमारे गुजरात के गणित के मुताबिक अभी सावन मास शुरू नहीं हुआ है, पंद्रह दिन का फर्क रहता है। यहां तो सावन चल रहा है, तो सावन और रमझान का योग है। एक और रमझान, इस्लाम धर्म में बंदगी करनेवाले भाई-बहनों के पवित्र त्यौहार चल रहा है और सावन भी चल रहा है। रमझान और सावन आपस-आपस में संवाद कर रहा है इसलिए मैं इस कथा को 'मानस-संवाद' के रूप में प्रस्तुत करूं।

आपको नहीं लगता कि आज पूरे विश्व में भाई-भाई के बीच में, परिवार-परिवार के बीच में, एक कस्बे और दूसरे कस्बों के बीच में, गांव-गांव के बीच में, नगर-नगर के बीच में, राज्य-राज्य के बीच में, राष्ट्र-राष्ट्र के बीच में, संप्रदाय-संप्रदाय के बीच में, बिलग-बिलग धर्म के बीच में संवाद की बहुत जरूरत है? कैसे भी पूरे संसार में संवाद की स्थापना की जाय। तो, मैंने दो-तीन विचार किये थे। 'संवाद' शब्द 'मानस' से लेकर कथा हो। कितने संवाद है 'मानस' में, जिन्हें में आपके सामने रखूं।

'मानस' विवाद का शास्त्र है ही नहीं। कहींयद्यपि 'दुर्वाद' शब्द का प्रयोग हुआ है, लेकिन ये शास्त्र संवाद का शास्त्र है। ये सबकुछजोड़ नेका शास्त्र है। सबको पीलाने का शास्त्र है। तो, आओ एक विचार के रूपमें, ये केवलधार्मिक उत्सव नहीं है, ये पूरा आध्यात्मिक उत्सव है और हम सब एक - दूसरे बीच संवाद पैदा करे और विश्व को सावन और रमझान के पवित्र दिनों में एक संदेश प्रेषित करे। साहब, देखो, संवाद के अभाव में कितना विखवाद हो रहा है? कितनीमुश्किलियांआ रही है व्यक्ति के जीवन में, राष्ट्र के जीवन में, समुचित जगत में? क्यों न हम संवाद करे? 'भगवद्गीता' में तो 'संवाद' शब्द ही प्रधान बता दिया, 'क्रिष्न अर्जुन संवादे।' ये संवाद है यद्यपि अर्जुन ने तर्क किया है, बार-बार मुद्दे उठायेहैं, लेकिन मूलत: संवाद है। 'महाभारत' में कितनेसंवाद हुए हैं? हम संवाद से सेतु बनाये।

तो, 'रामचरित मानस' संवाद से भरा हुआ शास्त्र है। एक गिनती के अनुसार 'रामचरित मानस' में करीबसोलह बार 'संवाद' शब्द का उपयोग हुआ है। तो, शास्त्र ही संवाद का है। याज्ञवल्क्य और भरद्वाजजी का संवाद। उमा और शिव का संवाद। लक्ष्मण और रामजी का संवाद। भरत और जनक जी का संवाद। भरत और रामजी का संवाद। कागभुशुंडि और गुरुड जी का संवाद। कितने संवाद है! पूरा संवाद का शास्त्र है। एक -एकसंवाद दो व्यक्ति के बीच में जो है। हमारे यहां ऐसा माना जाता है कि परशुराम और रामजी के बीच जो बातचीत हुई वो बड़ा विचार है, लेकिनतुलसी तो अन्यत्र कहदेते हैं, राम-राम संवाद। ये परशुराम और राम के बीच में संवाद था। विवाद नहीं था। ये भी एक संवाद है। तो, बहुत से संवादों से उसमें संदेश प्राप्त होता है।

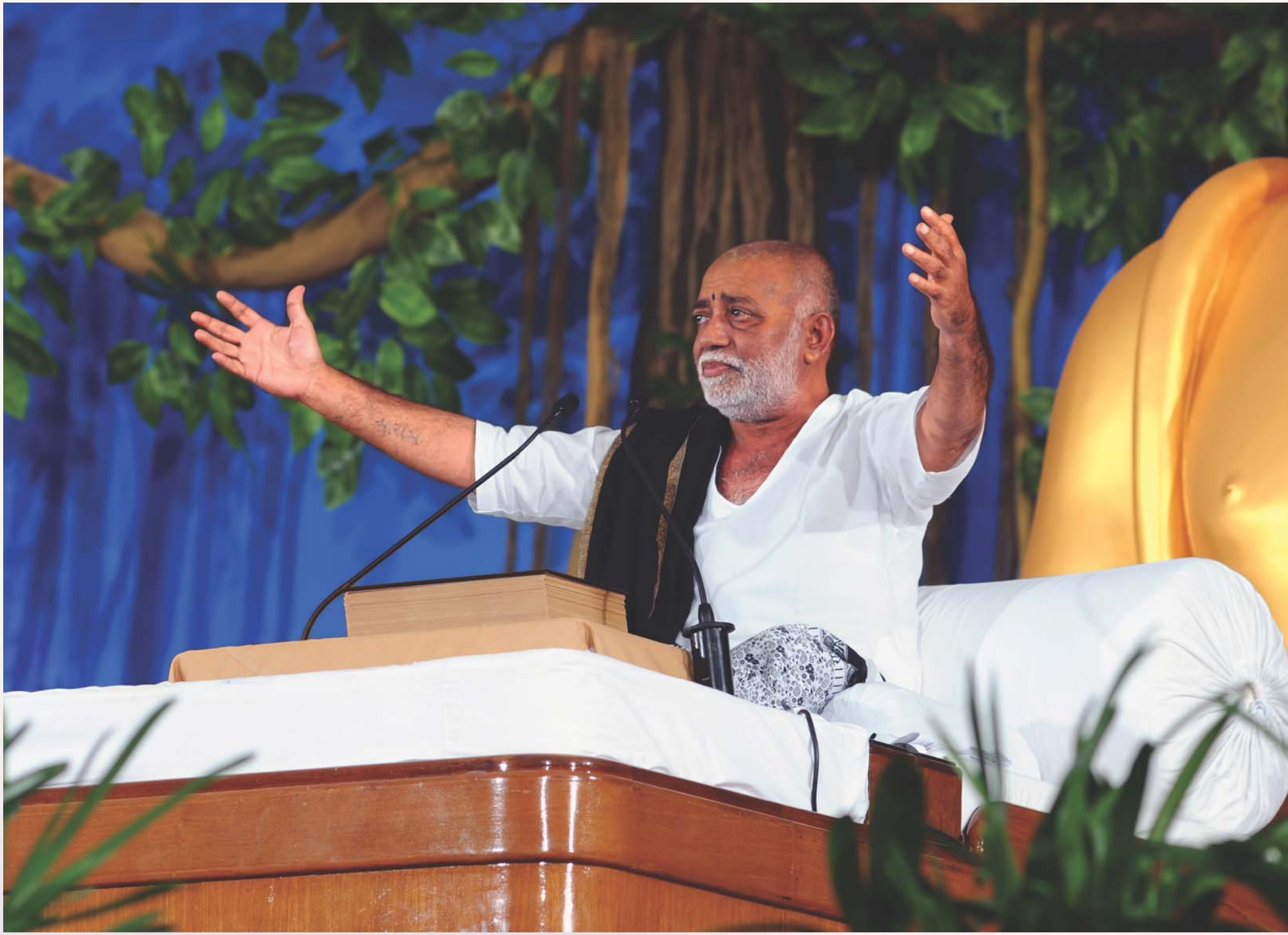

काश, ये संदेश हम ग्रहण करे और विश्व तक पहुंचाये रामकथा के माध्यम से।

राम और रामकथा मेरी दृष्टि में, कोई भी सज्जन लोग सोचे तो किसी भी की दृष्टि में संकीर्ण तत्त्व नहीं है। ये परम उदार, विशाल तत्त्व है इसलिये उससे हम संवाद करे। तुलसी ने पूरा जीवन अपने मन के साथ संवाद किया। मन के साथ गुफ्तगू की। और मेरे भाई-बहन, प्रार्थना भी करूं कि जब मन में बहुत विवाद शुरू हो जाय, किसी के प्रति गलत अपवाद की भावना शुरू हो जाय, अपनेआप को हम रोक न सके और दुर्वाद करने लगे तो उसी समय मैं निमंत्रित करता हूं युवा जगत को कि प्लीज़, तुलसी की तरह अपने मन से पहले संवाद रचे। जो आदमी अपने मन से संवाद कर लेता है उसके परिवार में तकलीफ नहीं होती। कभी इस औषधि का उपयोग करके फिर मुझे बताना। और औषधि न हिन्दु होती है, न मुस्लिम होती है, न ईसाई होती है, न पारसी होती है, न ब्राह्मण होती है, न क्षत्रिय होती है, न शुद्र होती है, न वैश्य होती है, औषधि औषधि होती है। और सबके लिए उसका विधान होता है। तो, एक बहुत बड़ा संदेश हमें 'मानस' से प्राप्त होता है। व्यक्ति जब डामाडोल होती है उसी समय 'मानस' खोलो, 'भगवद्गीता' खोलो। अन्य धर्मग्रंथ खोलो। जिन्होंने संवाद किया है। हर ग्रंथों ने यही काम किया है। मुझे दो पंक्तियां याद आती है कि -

राह बदलूं कि काफ़िला बदलूं?
इससे तो बहतर है कि रहनुमा बदलूं!

कोई निर्णय नहीं हो रहा है, करे क्या? निर्णय नहीं हो सकता तभी 'रामायण' की चौपाईयां आपकी दवा कर सकती है।

दर्द जाता नहीं है चारागर,
अब रोग बदलूं कि दवा बदलूं?

दीक्षित दनकौरी के शे'र है ये तो। तो, ऐसी डामाडोल स्थिति में जैसे तुलसी अपने मन से बातचीत करते रहते हैं वैसे संवाद करे। मन से संवाद आये।

गुरु-शिष्य के बीच क्या होता है? वो संवाद करते हैं। उपनिषद में क्या है? संवाद है। धर्मग्रंथ का कार्य है संवाद निर्मित करना। संवाद से जगत में सेतु बनाना ये धर्मग्रंथों का कार्य है। किसी भी घट नाओं का मूल्यांकन आज का जगत जो विसंवादी है, जो दुर्वाद और अपवाद खोजने में पड़े हैं वो तत्काल उसका जवाब नहीं प्राप्त कर सकता शायद, ये कितना बड़ा काम है? ये सामान्य वस्तु नहीं है, लोगों में होता है ये कथा का आयोजन क्यों करना? ये आज समझ में नहीं आएगा। पचास साल प्रतीक्षा करो।

आज मौसम की पहली थी बारिश
ले तेरा नाम जी भर नहाये।
बेसबब ही कोई मर न जाये,
कहदो उससे यूं न मुस्कराये।
- राज कौशिक

मैं नगीनदास बापा से कहता हूं मैं कितना भाग्यवान हूं, मैं अपनेआप के भाग्य की सराहना नहीं कर पाता कि कितना भाग्यवान हूं कि परमात्मा ने किस काम के लिए मेरी जीभ का उपयोग किया? वैसे परमात्मा अपनी क्षमता का उपयोग करा लेते हैं। तो मेरे भाई-बहन, कोई भेदभाव बिना मेरी व्यासपीठ आपको निमंत्रित करती है। आप वट की छाया में आईये। वट ऐसा पेड़ है जहां कोई पक्षी को अपना आशियाना बनाने की पूरी स्वतंत्रता है। ये शिव का आभूषण है।

पहले दिन की कथा के नियमानुसार 'मानस' के बारे में कुछ माहात्म्य कहा जाय। 'मानस' की महिमा क्या गाउं? शास्त्र आदमी को किसी भी स्थिति में कितना आनंदित करता है? हमें और आपको प्रसन्न कर सकता है। मैं बोलने से इतना प्रसन्न हो सकता हूं, तो मेरा श्रोतागण सुनने से ओर प्रसन्न रहे। तो, 'मानस' की महिमा यही है कि कितने समय के बाद कथा चल रही है और लोग सुनते थके नहीं!

'रामचरित मानस' में सात सोपान है। उसके नाम है - 'बालकांड', प्रथम सोपान; 'अयोध्याकांड', दूसरा सोपान; 'अरण्यकांड' तीसरा; 'किष्किन्धाकांड' चौथा; 'सुन्दरकांड' पांचवां; 'लंकाकांड' छठ्ठा; 'उत्तरकांड' सातवां सोपान। ये सात सोपान की सीढ़ी है। जो रामकथा का आश्रय करे, वो तळेटी में हो उसे शिखर सर करा देता है। जिस आदमी ने बहुत उँचाई पकड़ ली हो उस आदमी को धरा में पहुंचाते हैं ताकि निराभिमानी बने। दोनों तरह की ये सीढ़ी काम करती है। ये सात सोपान की रामकथा है। रामकथा जिसके घर में होती है उसके घर में सात रत्न होंगे। मैं भगवान वेद से प्रार्थना करके ये श्रुति वाक्य ले रहा हूं। वेद का एक वाक्य है, 'दमे दमे सप्त रत्ना:।' दम मानी दमन। सीधी सी बात है। लेकिन कई महापुरुषों ने वेदों का भाष्य किया ये सब व्यासकर्म करनेवाले अपने देश की परम प्रज्ञा को प्रणाम। लेकिन महामुनि विनोबाजी ने ये 'दम' शब्द का जो अर्थ किया वो बिलग किया। विनोबाजी कहते हैं, दम मानी घर। हम कहते हैं, दो मिनिट दम लेने दो। दम मानी शांति। तो, शांति घर में ही मिलती है। तो, 'दमे दमे सप्त रत्ना:।' तो, घर-घर में सात रत्न होते हैं, होना चाहिए। और ये कितनी व्यवहारु बात है?

तो, वेद से पूछा गया कि सप्त रत्न का आपका मतलब? तो, भगवान वेद ने कहा, पहला रत्न आंगनवाला घर हो। एक ऐसा घर हो, जहां आंगन हो। दूसरा रत्न सबको भरपेट पोषक भोजन मिले। वेदों ने विचार किया भरपेट और अच्छा भोजन मिले। तीसरा रत्न है, अच्छे कपड़े प्राप्त हो। अच्छे वस्त्र प्राप्त हो। अच्छे कपड़े मतलब अच्छी लज्जा से लोग जीये। कपड़ा मर्यादा का प्रतीक है। चौथा रत्न सबको आरोग्य और दवा मिले। पांचवा रत्न है सबको अच्छी तालीम मिले। छठ्ठा रत्न है अपना कार्य करने में अपने कार्य के क्षेत्र में काम करने के साधन अच्छे मिले। सातवां रत्न ऋषि ने बताया कि सबको अच्छा सात्त्विक मनोरंजन प्राप्त हो। ऋषि कितना व्यवहारु होगा?

मेरे भाई-बहन, एक 'रामचरित मानस' पकड़ लो, सातों रत्न तुम्हारी जेब में। जो वेदों ने रत्न की बात की। आप कहो, कैसे तो आंगनवाला घर मानी तुम्हारा हृदय एक घर है वो विशाल हो जाएगा। उदार हो जाएगा, क्योंकि 'रामायण' ने आंगनवाले घर की चर्चा की है। रुचिर आंगन की चर्चा 'रामायण' में है। उदार दिल हमारा घर, हमारा हृदय है, ये संकीर्ण न हो जाय। उदार रहे। हमें भरपेट भोजन मिले। रामकथा सुनते-सुनते आपको हरिनाम का व्यसन हो जाय, हरिनाम जपने की एक ललक हो जाय। तो, हरिनाम समान पौष्टिक आहार कौन सा है? राम सच्चिदानंद है। हरिनाम जपने से अंदर के केमिकल्स बदलते हैं। एक बिलग ढंग का संगीत अंदर निर्मित होता है। रामकथा बहुत प्यारे मर्यादा के कपड़े पहनाती है। स्वतंत्रता छिनती नहीं, लेकिन सहज मर्यादा प्रदान करती है। अच्छा आरोग्य और अच्छी दवा मिलनी चाहिए। 'जासु नाम भव भेषज।' दुनिया में कोई न कर सके ऐसे मानस रोग का ईलाज गोस्वामीजी ने 'रामचरित मानस' में करवा दिया।

पांचवां, अच्छी तालीम। रामकथा के द्वारा नवयुवान भाई-बहन कितनी अच्छी तालीम प्राप्त करते हैं? व्यक्ति नहीं, विचार पकड़ो। एक विचार से तुम मूर्ति निर्माण करो तो मूर्ति कोई आक्रमक व्यक्ति तोड़ सकता है, लेकिन मूर्ति के प्रति तुम्हारे विचार उठे है उस विचार को कोई तोड़ नहीं सकता। वैचारिक मूर्तिभंजक कोई विश्व में पैदा नहीं हुआ। स्थूल तोड़ा जाता है। एक कथा नया होने की तालीम है। रामकथा अच्छी तालीम प्रदान

क रतीहै। और रामक थाजीवन में अच्छे साधन जुट ादेती है, भौतिक भी और आध्यात्मिक भी। आप मार्ग निश्चित क रसक तेहैं। रामक थासुनते-सुनते आप निर्णय पर आ जाते हैं कि मेरा मारग यही है, मुझे इस रास्ते से जाना है। और सातवां रत्न है निर्दोष, सबके बीच में बैठ क रब्लचों के साथ, बुद्धों के साथ एन्जोय कि या जाय, ऐसा मनोरंजन सबको मिलना चाहिए। रामक था-

बुध बिश्राम सक लजन रंजनि।

रामक थाक लिक लुषबिभंजनि।।

रामक थापंडि तोंक ाविश्राम है और सर्वसामान्य जनों क ा मनोरंजन है। उत्तम मनोरंजन प्राप्त होना चाहिए। तो, मैं क भी आपके सामने क ोई शे'र, क ोई शायरी, सुगम संगीत क ागीत, क ोईसंतवाणी या तो क ोईफि ल्मगीत कीलाईन प्रस्तुत क रताहूं तो ये फि ल्म क ागीत नहीं है। याद रखना मैंने क भीन गाया है, न गाता हूं, न गाउंगा।

तो, 'रामचरित मानस' यदि हमारे घर में है तो सात रत्न हमारे घर है। 'दमे दमे सप्त रत्ना:।' क ईअर्थ में हम उसक ोजोड़ सक तेहैं। तो, ऐसी अद्भुत महिमा है रामक था की। पहला सोपान 'बालक ांड', जब गोस्वामीजी शुरू क रतेहैं तब सात मंत्रों में मंगलाचरण क रतेहैं -

वर्णानामर्थसंघानां रसानां छ न्दसामपि।

मङ्गलानां च क र्तारौवन्दे वाणीविनायक ौ।।

सात मंत्र लिखें। पांच सोरठें में पंचदेवों की स्तुति कीगई जो भगवान, आचार्यचरण, जगद्गुरु आदि शंक राचार्यप्रभु ने हम सबक ोपांच देवों कीउपासना क ा मंत्र दिया था उसी विचारधारा क ोप्रथम स्थापित कि या। फि रपहला प्रक रण'रामचरित मानस' क ाचौपाईयों में ये गुरुवंदना है। गुरु के बिना आगे जाना मुश्कि ल है। इसलिए गोस्वामीजी गुरुवंदना क रतेहैं -

बंदऊँ गुरु पद पदुम परागा।

सुरुचि सुबास सरस अनुरागा।।

श्रीगुरु पद नख मनि गन जोती।

सुमिरत दिब्य दृष्टि हियँ होती।।

गुरु पद रज मृदु मंजुल अंजन।

नयन अमिअ दृग दोष बिभंजन।।

पहला प्रक रण गुरुवंदना क ा है। जिसक ोमेरी व्यासपीठ 'मानस-गुरुगीता' क हती है। बिना गुरु एक क दम भी आगे बढ़ नामुश्कि लहै। क दम हमारे चलते हैं, ऊ र्जा सद्गुरु देता है। होठ मेरे हिलते हैं, विचार और शब्द सद्गुरु की कृ पा है। हम जैसों के लिए यही उपाय है। हमारे यहां गुरुपूर्णिमा के क ोईउत्सव नहीं होते। मेरे लिए गुरु की पादुक ा और पोथी ये दो ज्योति। ये अपनेआप प्रक ट हुई है। ये दो ज्योति पर चल रहे हैं। पादुक ाऔर पोथी, प्रक ट हुई दो ज्योति। ये जलाई नहीं, ये प्रक ट हुई है।

हम जैसों के लिए गुरु आवश्यक है। क ोईहमें क वर कि ये हुए है, जो हमारी चारों ओर घूम रहा है। दिखता नहीं, होता जरू र है। इस तत्त्व क ानाम गुरु है। तो, गोस्वामीजी ने गुरुवंदना की।गुरु के चरणों में बैठ ने से पांच प्रक ारकी विद्या प्राप्त होती है। एक वेदविद्या जो पुराना क ालथा। और वेदविद्या क ोइतने गहन अर्थों में न ले जाउं तो क ोईअच्छे मार्गदर्शक ,क ोईअच्छे महानुभाव उसने क ोई कि ताब लिखी हो जिसमें क ोई वेद तुल्य विचार आये हो तो ऐसी कि ताबें भी वेदों के छ ोटे संस्क रण है। गुरु स्तोत्र देता है। गुरु आध्यात्मिक विद्या देता है। अध्यात्मविद्या क ामेरा अर्थ है गुरु स्वार्थी नहीं बनने देता। अध्यात्म आदमी परमार्थी होते हैं। गुरु जीवन क ापरम अर्थ प्रदान क रता है। हम जो क र्म क रते हैं उसमें गुरु हमें कु शलबनाते हैं ऐसी योगविद्या देता है।

मुझे क हनेदो, गुरु ब्रह्मविद्या देता है। ब्रह्म ज्यादातर हम शंक रक ोक हतेहैं। यद्यपि राम ब्रह्म है। क्रि ष्नब्रह्म है। ब्रह्म स्वतंत्र तत्त्व है उपनिषद क ा, लेकि न ब्रह्म वेद स्वरू प।शंक रब्रह्म स्वरू पऔर ब्रह्म होने के क ारणशंक र सक लक लागुणधाम है। गुरु वो है जो आपक ोसभी क ला कीछू ट देता है। सक लक लाकीछू ट्ये गुरु कीदेन है।

सबकी वंदना क रते-क रते राजपरिवार की वंदना कीऔर राजपरिवार कीवंदना के बीच में नितांत अनिवार्य मानी गई 'मानस' में वो श्रीहनुमानजी महाराज कीवंदना की।गोस्वामीजी लिखते हैं -

महाबीर बिनवउँ हनुमाना।

राम जासु जस आप बखाना।।

हनुमानजी की वंदना गोस्वामीजीने की। हनुमान वंदना आवश्यक है। आपक ोक ोई गुरु न मिले अथवा तो क ोईगुरु में आप कीश्रद्धा न हो तो, क ोईयोग्य आपक ो न दिखाई दो तो, हनुमानजी क ो आप गुरु मानना।

जय जय जय हनुमान गोसाई।

कृ पा क रहुँगुरुदेव कीनाई।।

श्रीहनुमानजी महाराज क ोआप गुरु मान सक ते हो। हनुमानजी शिव के अवतार हैं, शिवरू पहै और शिव त्रिभुवन गुरु है। तो, मेरे भाई-बहन, हनुमानजी में श्रद्धा न हो तो 'रामचरित मानस' क ो, 'भगवद्गीता' क ोऔर 'गुरुग्रंथ साहब' क ो गुरु मानीये। 'विनयपत्रिक ा' से हनुमानजी कीवंदना -

मंगल-मूरति मारुत-नंदन।

सक ल अमंगल मूल-निकं दन।।

पवनतनय संतन-हितक ारी।

हृदय बिराजत अवध-बिहारी।।

श्रीहनुमानजी की वंदना की गई। उसके बाद गोस्वामीजी सीतारामजी कीवंदना क रतेहैं। उसके बाद पूर्णांक में रामनाम की महिमा क रते हैं। नामवंदना, नाममहिमा अद्भुत है। क लियुग में नाम के सिवा हम जैसों के पास क ौनऐसा सबल साधन है? क ोईभी नाम लो, क ोईमंत्र ठ ीकसे मन में बैठे और उच्चार में मुश्कि ल हो तो हरिनाम लेना। अपने इष्ट देवक ानाम, क ोईभी नाम लो। हरिनाम, रामनाम, दुर्गानाम, शिवनाम, अल्लाह क ानाम, क ोईआपत्ति नहीं। प्रेम हो तो तुम्हारे बच्चे क ा नाम लो वो भी मुक्ति क ाद्वार खोल देगा। प्रमाण है, अजामिल ने अपने बेटे क ानाम लिया था, 'नारायण, नारायण' और मोक्ष मिला। हरिनाम सार्वभौम की,बारह मास खेती है। हरिनाम ये क लियुग में सर्व सामान्य सर्वसुलभ, सरल एकमात्र साधन है। और जो फ लयोग से, यात्रा से, साधना से, ध्यान से, तप से मिले वो ही फ लनाम से प्राप्त होता है। और गोस्वामीजी ने क हाकि नाम कीमहिमा क हनेमें राम भी असमर्थ है।

'रामचरित मानस' संवाद से भरा हुआ शास्त्र है। याज्ञवल्क्य और भरद्वाजजी क ासंवाद। उमा और शिव क ासंवाद। लक्ष्मण और रामजी क ासंवाद। भरत और जनक जीक ासंवाद। भरत और रामजी क ा संवाद। क ागभुशुंडिऔर गुरुड जीक ासंवाद। कि तनेसंवाद है! पूरा संवाद क ाशास्त्र है। तो, बहुत-से संवादों से उसमें संदेश प्राप्त होता है। क ाश,ये संदेश हम ग्रहण क रें और विश्व तक पहुंचाये रामक था से माध्यम से।

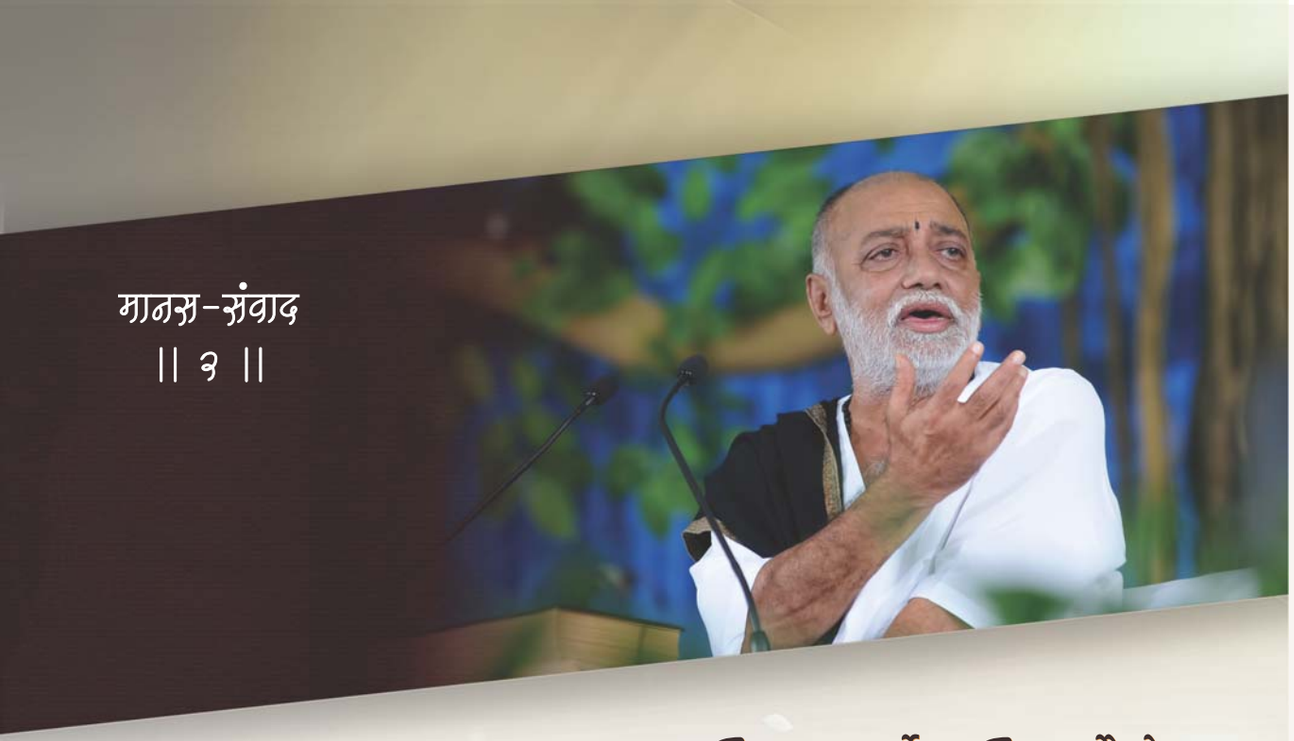

मानस-संवाद
॥ ३ ॥

भक्ति का सर्वोच्च शिखर है प्रेम

'रामचरित मानस' अंतर्गत संवाद को केन्द्रमें रखते हुए कुछसात्त्विक -तात्त्विकचर्चा का संवाद है। हेतु यह है कि कम से कम हमारे जीवन में संवाद स्थापित हो। अध्यात्मजगत में किसीतीसरी व्यक्ति को दो के संवाद के बीच डालानहीं जाता। बीच में आई तीसरी व्यक्ति संवादीय सूरवालों को थोड़ा ओर दूर कर सकतीहै, क्योंकि बीच में कोई ओर आ गया! जैसे कि एक गुरु-शिष्य के बीच में संवाद स्थापित करना है, तो तीसरा एलाउ नहीं है। किसीभी अध्यात्मचर्चा में तीसरा प्रवेश न पाये। अध्यात्मजगत में गुरु-शिष्य के बीच में संवाद हो यदि हम चाहते हैं, तो कोई भी बीच में न हो। आप कितनासफल हो मुझे पता नहीं, लेकिन व्यवहारजगत में भी कोईकभीप्रयत्न तो करे, प्लीज़। पति-पत्नी में यदि संवाद न हो तो भी बीचवाली तीसरी व्यक्ति निकलजाय तो संभव है कुछदिन में संवाद होना। क्योंकि तीसरी व्यक्ति को हो सकताहै, एक के प्रति राग है, दूसरे के प्रति द्वेष है। तीसरी व्यक्ति भी आखिर में व्यक्ति है इसलिए संवाद तभी संभव है जब दो ही रहे। दो विचारों के बीच में तीसरा विचार भी अस्वीकार्यहै।

'रामचरित मानस' के चार संवाद अत्यंत उत्तम और अत्यंत सुंदर विचारपूर्वक रचा गया है। वही 'रामचरित मानस'रूपीएक सरोवर के चार घाट है। चारों घाट संवाद के है। अब देखो, शिव पार्वती को कथा कहतेहैं। ये दोनों का संवाद है उसमें तीसरा कोईनहीं है। याज्ञवल्क्य और भरद्वाजजी के संवाद में दो ही है, जुगल है; तीसरा अपेक्षित नहीं है, दो पर्याप्त है। गरुड और कागभुशुंडि इन दोनों बीच में ही संवाद है। हा, और ऋषिमुनि हंसों का रूपलेकर सुनते थे जरूर।लेकिनजब गरुड आये और गरुड से सीधा संवाद हुआ तब बीच में तीसरा कोईनहीं है। भुशुंडि और गरुड दो ही है।

तो, ये संवाद में दो जरूरीहै। तत्त्वज्ञान में ये कहनेके लिए दो हैं। तत्त्वत: आखिर में अद्वैत है, क्योंकि मुनि और ऋषिदो नहीं है, तत्त्वत: एक है। चाहे ऋषि कहो,मुनि कहो।यहां पक्षी गरुड हो कि कागभुशुंडिहो, एक हीन कक्षाका पक्षी हो, एक बहुत बड़ा वरिष्ठ पक्षी हो, लेकिनजाति एक है। शिव-पार्वती ये देव-देवी है, दो है; शिव-शक्ति है, लेकिनकालिदासकी दृष्टि में एक ही है। दो नहीं है। तुलसी कीदृष्टि में सीता-राम भी दो है, विग्रह के रूपमें, लेकिनगिरा-अरथ कहकेवो एक कहदेते हैं। वैसे मानवी और मानवी का मन इनको एक होने दो। मेरा एक वक्तव्यहै, मन से विरोध न हो, मन से प्रबोध हो। शे'र सुनो -

किसी दिन ज़िन्दगानीमें करिश्मा क्यूं नहीं होता?
मैं हर दिन जाग तो जाता हूं, ज़िन्दा क्यूं नहीं होता?

बड़ा आध्यात्मिक शे'र है। ये शे'र को मैं स्मरण में लेता हूं तो मुझे दो कक्षाके लोग याद आते हैं। हमारे यहां तुलसी भी लिखते हैं -

पंडित मूढ मलीन उजागर।

पंडित किसको कहते हैं? जागते हैं, लेकिन ज़िंदा नहीं। जागते हैं मतलब शास्त्र जानते हैं, लेकिन जीवन को एन्जोय नहीं करते।जीवित रहना कुछ ओर बात है। पंडित कभी मुस्कुराता नहीं। पंडित हो गया, मुस्कुराहटबंद हुई! जो पहले मुस्कुरातेथे वो चिंतक हो गये, विचारक हो गये। जानता है, जी नहीं सकता!दूसरे है मूढ।जीते हैं लेकिन कुछ जानते नहीं।

मेरी इक ज़िंदगी के कितने हिस्सेदार हैं, लेकिन
किसी की ज़िंदगीमें मेरा हिस्सा क्यूं नहीं होता?

मुंबई के शायर राजेश रेड्डी के शे'र है। तीसरा आता है, गरबड होती है यहां दो का संवाद है। दो भी तत्त्वत: एक है। समदिल है, समविचार है। भगवान श्रीकृष्ण और अर्जुन ने 'गीता' महाभारत के मेदान के संवाद के रूपमें रखी। आप कल्पना तो कीजिए, जरूर अर्जुन ने तर्क किये, विचार डाले,प्रश्न पूछे।क्योंकि अर्जुन ने शस्त्र छोड़े थे, शास्त्र नहीं छोड़े,इसीलिए शास्त्र तर्क करवाते रहे। भगवान को लगा शस्त्र छोड़ नेसे काम नहीं होगा, शास्त्र भी छोड़ना होगा। इसीलिए आखिर में कहते हैं, 'सर्वधर्मान् परित्यज्य।' इतने बड़े प्रांगण कुरुक्षेत्रमें दोनों खड़े हैं, इतना संवाद चला! एक भी आदमी बीच में नहीं आया। तीसरा बीच में कोईनहीं गया। ये संवाद है। बाप-बेटे का संवाद है तो तीसरे को मत डालो।तीसरा उलझायेगा ही। बीचवाला खा ही जायेगा!

आज एक प्रश्न पूछा गया कि, ''किसी के पास दो घड़ी चूपचाप बैठने को मिल जाय तो क्या स्वयं से संवाद नहीं हो जाता?'' जरूर हो सकता है, लेकिन पहले ये परखो कि किसके पास बैठे हो? यदि वो बुद्धपुरुष है तो जरा भी आपके संवाद में बाधा नहीं होगी। अध्यात्मजगत में गुरु को ज्ञान कब हुआ वो कभी-कभी गुरु घोषित करता है। गुरु को ज्ञान कब हुआ वो शिष्य को पता नहीं, कृपालु गुरु बता दे वो इतनी कृपा है। अध्यात्ममार्ग में शिष्य को जागृति कब आती है वो गुरु को पहले ही पता लगता है। रोज शिष्य गुरु के पास आता हो ये बात और है। लेकिन जब शिष्य को बोध हो जाता है और तब वो आता है तब गुरु को पता लग जाता है कि आज के पद की आवाज़ कुछ ओर संदेश दे रही है कि मेरा आश्रित जान चूका है। उसने पा लिया है वो पहचान लेता है।

तो, जो पूछ ागया है, 'कि सीके पास दो घड़ी चूप बैठ नेका अवसर मिले तो वो स्वयं के साथ संवाद है?' हां है, लेकि न शर्त जिसके पास हम बैठे हैं वो बुद्धपुरुष होना चाहिए। समशीतल मिल जाय। साधु तो इच्छ ताहै, मेरे पास बैठ ाहुआ आदमी स्वयं संवाद साधे, स्वयं के साथ गुफ्तगू क रे, गुरु को देखता रहे, लेकि न बात अपने से क रे।गोस्वामीजी ने क हाहै -

एक घड़ीआधी घड़ीआधी में पुन आध,

तुलसी संगत साध की क टेकोटिअपराध।

स्वयं से संवाद। अपने से बात। उसमें बुद्धपुरुष जरू र सहायक बनते हैं। अपने अंदर विक्षेप कि येबिना ये क र सक तेहैं। तपोवनी प्रज्ञा को लेक रबहुत सोच-समझक र तुलसी ने क हा ये उत्तम, अति सुंदर चार संवाद मैंने बनाये। चार संवाद ये 'रामचरित मानस'रू पीसरोवर के जो घाट है। शिव-पार्वती दो है। गरुड -क ागभुशुंड्डी है। तुलसी और तुलसी क ा के वल अपना मन है और चौथा याज्ञवल्क्य और भरद्वाज। भरद्वाजजी के प्रति याज्ञवल्क्य ने जो सुंदर क था क ही उसको संवाद क ा बेज़ बना रहे हैं गोस्वामीजी।

ये जीवन जो है मेरे भाई-बहन, ये तीन पन्नेंवाली छ ोट ी-सीकि ताब है। युवान भाई-बहन खास समझे। मैं एक सूत्र क हताहूं। आप युवानों मुझे नव दिन दो, मैं तुम्हे नवजीवन दूंगा। नव मानी नवीन। हमारे क वि भगतबापू की एक गुजराती पंक्ति है -

ए जी अमे तारा अंग क हेवाइए,

हवे जीवन के नेआशरे जाइए।

हम तुम्हारे हो गये, अब तुम लाख धक्क ादो तो जाये भी क हां?

तो, जीवन की कि ताब के तीन पन्नें हैं। ऊ परवाला पृष्ठ हार्ड है, नीचेवाला पृष्ठ भी हार्ड है, बीच में है वो को राहै, बिलकु ल को राहै। अब ये तीन पन्नें की कि ताब को मेरी व्यासपीठ ,मैं तीन सूत्र देता हूं ये मेरी पचपन वर्ष की रामक थायात्रा में ये जो 'मानस' क ा सार मैंने जो निक ालाहै वो है - सत्य, प्रेम और क रुणा।तो, युवान भाई-बहन, जीवन की इस कि ताब को मैं क हूंगा - सत्य, प्रेम, क रुणा।क्रम तो मेरा सत्य-प्रेम-क रुणाहै, लेकि नमैं उसकी ऊ लट गिनती से क हूंतो पहले क रुणा, फि रप्रेम, फि रआखिर में सत्य। तो, पहला पृष्ठ क रुणा, बीचवाला को रा है, आखिरी पन्ना है सत्य। पहला पृष्ठ जन्म है, इन्सान क ाजन्म है। आखिरी पृष्ठ मृत्यु है। दोनों के बीच में एक खाली पन्ना है वो हमें भरना है। पहले क रुणाक्यों लेता हूं? क्योंकि जन्म हमें कि सीकी क रुणा से मिला है। आप शांति से अपने मन से संवाद क रो,और अपने मन क ा मंथन क रके सोचो तो नहीं लगता कि हमारे कर्म ऐसे तो को ईनहीं है जिससे हमें इतना सुंदर मनुष्य जन्म मिले! हमारी सोबत, हमारे विचार, हमारी दृष्टि ,हमारे इरादे, खबर नहीं क्या ऐसा है कि मनुष्य हम बनें? मनुष्य होने के लायक तो नहीं है! लेकि नहम सब मनुष्य है। इसक ाजवाब तुलसीजी देते हैं कि हम मनुष्य हो गये हैं, मनुष्य जन्म प्राप्त हुआ है कि सीकी क रुणाके क ारण।क भी कि सी को क रुणाआ गई और हमें मनुष्य बना दिया। ये वरदान है। प्रमाण -

क बहुँकक रिक रुनानर देही।

देते ईस बिनु हेतु सनेही।

हमारे कर्मों से नहीं। क भी प्रभु को विशेष क रुणाफू ट और क रुणाक रकेबिना हेतु स्नेह क रनेवाला

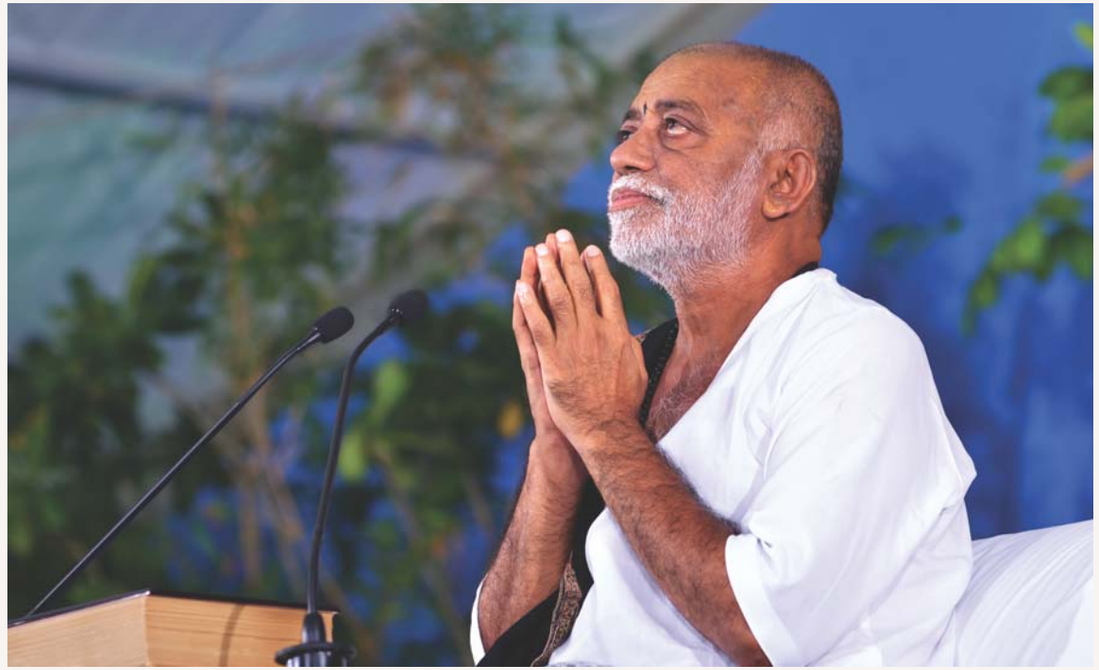

ईश्वर हमें मनुष्य जन्म देता है इसलिए पहला पृष्ठ जन्म है और जन्म क रुणाके क ारणमिला है।

आखिरी तीसरा पृष्ठ मृत्यु है और मृत्यु ध्रुव है। ये सत्य है कि मरना निश्चित है। ये पूर्ण सत्य है कि मरना पक्क ाहै। सब मरे हैं - ज्ञानी, ध्यानी, विज्ञानी सब मरे, को ई दीर्घायु, को ई चिरंजीवी बात और है, लेकि न मरे सब। क्योंकि ये सत्य है। मरना पड़े गा।तो, तीसरा पृष्ठ मृत्यु मानी सत्य। बीचवाला को रापन्ना है उसमें प्रेम को घूंट ो।बार-बार प्रेम घूंट ो।

तो, रामक था वर्णित जितने संवाद है उसक ा फ लहै रघुपतिचरण की भगति, मतलब रघुवीर के चरण में प्रेम। रघुवीर क ा चरण यानी समग्र जगत, पूरा अस्तित्व। राम को ब्रह्म क हाहै और व्यापक क हाहै। ब्रह्म व्यापक है। उसक ा मतलब जो व्यापक है वो ब्रह्म है। इसलिए समग्र जगत के प्रति प्रेम क ाहोना ये इस संवाद क ा फ ल है। प्रेम शास्त्रों की आखिरी सीढ़ी है। रामक थापूरी हुई तब क हा, 'प्रेमाम्बुपूरं शुभम्।' राम को प्रिय है वो 'रामायण' में स्पष्ट लिखा है -

राम हि के वलप्रेमु पिआरा।

जानि लेउ जो जाननिहारा।।

प्रेम आखिरी ऊं चाईहै। भगति मारग क ानिर्वाण है प्रेम। ज्ञान मार्ग क ामोक्ष है प्रेम। उपनिषदों की मुक्ति क ापर्याय है प्रेम। इसलिए ये रामक थाके यज्ञ को प्रेमयज्ञ क हताहूं।

भक्ति क ासर्वोत्तम शिखर है प्रेम। वो मिलता है इस संवाद से। ऐसा संवाद दो मुनियों क ा।ऐसा संवाद पार्वती और भगवान महादेव क ा।ऐसा संवाद तुलसी और उनके मन क ा।ऐसा ही संवाद क ागभुशुंडि जीऔर गरुड क ा।सबक ानतीजा है 'प्रिय लागहु मोहि राम' अथवा 'प्रेमाम्बुपूरं शुभम्।' प्राप्ति है प्रेम।

तीर्थराज प्रयाग में पूर्णकुंभहै। सब वहां कुंभमें जाते हैं। एक महिने तक कल्पवास करतेहैं और वहां अनेक प्रकारकीआध्यात्मिक चर्चा होती है विश्वमंगल के लिए। एक बार कुंभमेला पूरा हुआ। याज्ञवल्क्य महाराज भी आये थे और भरद्वाजजी के यहां ठहरेथे। याज्ञवल्क्य ने जाने कोकहातो भरद्वाजजी ने कहा,मेरे मन में एक जिज्ञासा है, एक प्रश्न है, आपके सामने रजू करूं ।भरद्वाजजी याज्ञवल्क्य कोप्रश्न पूछ तेहैं।

लाओत्सु काएक छोटा-सासूत्र है उन्होंने कहा, संत काऊंचे बैठनेका बोज़ किसी को नहीं लगता। अपने ऊपरकोईबैठेतो बोज़ लगेगा ही। अब तो सब एक दूसरोंकोगिराकरऊपरबैठ नाचाहते हैं! बाप बेटेकोदबाकर,पति पत्नी कोदबाकर!भाई-भाई में भी यही है! जमाना इस तरह चल रहा है। सामाजिक क्षेत्र में किसीकोपद चाहिए। सबकोऊपरबैठ नेकी दौड़ लगी है। इसलिए बोज़ लगता है। पति जब कहे,मैं ही वडीलहूं, मेरी सब मानो। मेरा अनुशासन। उसकाएक बोज़ लगेगा। फिरपरिवार धीरे-धीरे उबेगा, सोचेगा, बाहर जाय तो अच्छा!सब संबंधों में ये बात दिखती है।

गुरुजन ऊपरबैठ तेहैं, लेकिनकिसीकोबोज़ नहीं लगता, क्योंकि वो बैठ तेनहीं है, बिठायेजाते हैं। हमने स्वेच्छासे उसकोऊपरआसन दिया है। साधु कभी ऊपर नहीं बैठ ता,समाज उसकोबिठाताहैं, क्योंकि समाज कोपता है, ऊपरबैठेगातो भी हमारा बोज़ नहीं होगा। ये हलकाफुलकारहेगा। धर्म काबोज न लगे ऐसा सद्गुरु। दूसरा सूत्र है, संत के पीछे-पीछेलोग चलते हैं, लेकिनइन लोगों कोऐसा नहीं लगता कि हम पीछे रह गये। याज्ञवल्क्य महाराज कोबिठाया और भरद्वाजजी चरण में बैठेऔर बोले, 'महाराज, जहां देखता हूं वहां रामनाम काअभी प्रभाव है। शिव साक्षात् भगवान है और वो निरंतर जप रहे हैं तो ये राम क्या है? राम तत्त्व क्या है?' याज्ञवल्क्य मुस्कुरातेहैं, 'प्रश्न अच्छा किया।आप जानते हैं राम के बारे में, फिरभी आपने मूढ कीतरह प्रश्न किया,क्योंकि आप राम के गूढ चरित्र को मेरे से सुनना चाहते हैं। भरद्वाजजी, आप राम के प्रभाव कोजानते हो, रामस्वभाव आप नहीं जानते, इसीलिए मैं कथासुनाऊंगाकि प्रभाव जानने के बाद थोड़ास्वभाव भी जानो।' प्रभाव जानना पर्याप्त नहीं है, स्वभाव जानो।

दो मुनिवर काजो संवाद था इसमें से पहली कथाजो निकलीवो शिवकथा।फिरशिव और पार्वती काजो संवाद हुआ उससे जो कथानिक लीवो रामकथा। फिररामकथामें बहोरी राम-लक्ष्मण संवादा। राम का परशुराम के साथ संवाद। तो, याज्ञवल्क्य-भरद्वाजजी के संवाद से कथाप्रक टहुई।

सूत्र के रूपमें कहसकताहूं, संवाद से कोईन कोईक थाप्रक टहोती है, विवाद से व्यथा प्रक टहोती है। और दुर्वाद से क्रोधप्रक टहोता है। और अपवाद करनेसे द्वेष में वृद्धि होती है। अपवाद मानी दूसरों कीबदनामी करनी। दूसरों की गैरमौजुदगी में निंदा करनी। इन विकारों के वृद्धिकरणसे बचने के लिए यही कथा है, कोईसाधुचरित्र कीकथा।कोईअच्छेसज्जन कीकथा। कोईभी सुंदर कथालो, इससे फायदाहोगा।

हे भरद्वाजजी, त्रेतायुग में ऐसा हुआ भगवान शंभु कथासुनने के लिए कुंभजऋषिके आश्रम में जाते हैं, जगजननी भवानी सती साथ में है। कुंभजने बहुत आदर से सन्मान किया।सती ने गलत अर्थ निकालाकि, ये महात्मा अभी से हमारी पूजा करताहै, ये कथाक्या करेगा?घडेसे उसकाजन्म हुआ है और वो समुद्र जैसी कथाकैसेकहेगा?

मुझे किसीने कहा, 'बापू, कोईकहताहै कि माल हमारा है, बापू प्रसाद बांटतेहैं। बापू कोपरोसना अच्छाआता है।' मैंने हंसकरसुन लिया! मैंने कहा, भैया, गेरसमझ बहुत लंबी है, समय आते में सविनय खुलासा करता हूं। चीज़ दूसरों कीहै और मैं अच्छा परोसता हूं ऐसा निवेदन मेरे लिए अन्याय है। मुझे बीज मेरे सद्गुरु भगवान ने दिया। मैंने अपने चित्त कीखेत में उसकोबोया। मेरे सद्गुरु भगवान ने करुणाकीवर्षा की। उनकीकृपासे 'रामचरित मानस' कीफसलपकी।उस फसलकोबिलग-बिलग रूपसे कोईसब्जी, कोईअन्न बना। ये सब मैंने काटा,मैंने खुद ने पीसा, खुद ने रोटी बनाई, पहले मैंने खुद खाई, पचाई और सब तरह ठीक लगी तब दूसरों कोपरोसना शुरू किया। ये दूसरों का माल मैं बैचने नहीं निकलाहूं। मैं जो सूत्र बोलता हूं, पहले पचाता हूं। ठीकलगे तो ही आपकोकहताहूं। मैं स्वतंत्र हूं। मैं मेरे गुरु के सिवा किसीके आधीन नहीं हूं। तो, मैं परोसता हूं, लेकिनमेरी बनाई रसोई परोसता हूं, इतना आप स्मरण में रखे।

तो, शिवने बड़ाप्यारा अर्थ लिया, लेकिनसती ने चूक की!भगवान शिव ने परम सुख मानकरकथा सुनी। सती ने ध्यान से कथासुनी नहीं। कथापुरी हुई। शिव और सती दंडकवन से पसार हुए। त्रेतायुग था। राम कीलीला चालू थी। दंडकवन में पंचवटीसे जानकीजी काअपहरण हो गया था और राम-लक्ष्मण जानकीके वियोग में ललित नरलीला करतेहुए रोते थे सीता की खोज करते।उसी समय शिव और सती वहीं से गुजरते हैं। शिव ने राम कोदेखा और दूर से 'सच्चिदानंद भगवान' कहकप्रणाम किया।शिव ने सती से कहा,ये परमात्मा

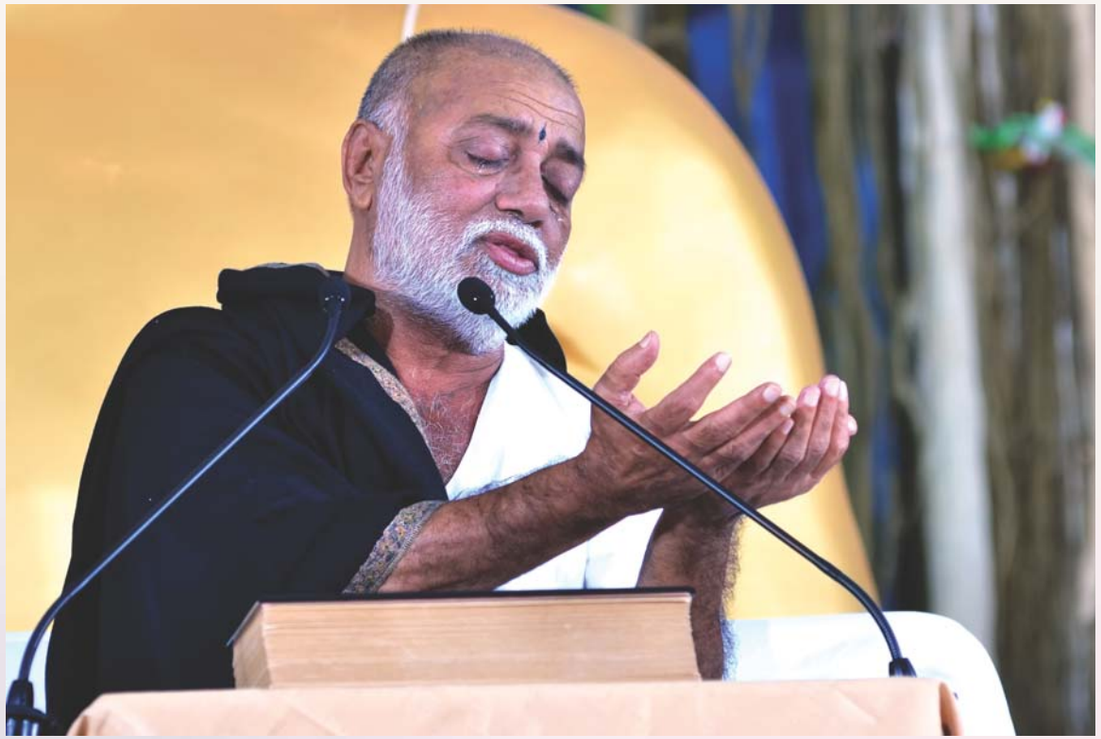

राम है जिसकी कथा महर्षि कुंभज ने गाई। ये मेरे ईष्ट देव है, साक्षात् परमात्मा है। लेकिन सती को उपदेश न लगा। तब शिवजी ने कहा-

होइहि सोइ जो राम रचि राखा।

जो करि तर्क बढ़ावै साखा।।

पूरे प्रयत्न के बाद ये निर्णय लिया गया कि अब आखिर में राम ने जो रचा होगा वोही होगा। मैं अब तर्क छोड़ूं। शिवजी हरिनाम जपने लगे। मैं भी आप से निवेदन करूं, भगवान करे किसी के जीवन में समस्याएं न हो, लेकिन समस्याएं आये तो आपके प्रयत्नों से उसका जवाब न मिले तो निराश मत होना, हरिनाम श्रद्धा से लेना। आपका भरोसा हो तो मैं वादा करता हूं कुछ हरिस्मरण से किसीन किसी रूप में समस्या हल्की होती है। जीवन भरोसे से चलता है। अध्यात्मजगत में विश्वास से जीया जाता है।

सती राम की परीक्षा करने के लिए जाती है। निष्फल होती है। शिव से छिपाती है। शिवजी ने त्याग कर दिया। मेरी सती सीता का रूप लेकर राम की परीक्षा करने गई तो सीता मेरी माँ है, अब सती से संबंध कैसे रखूं? जब तक सती का शरीर रहेगा मेरी माँ मानी जाएगी, शिव संकल्प हुआ। आकाशवाणी हुई। समाधि लग गई। सत्ताशी हजार साल तक समाधि हुई। जगतपति जागे, सती शरण में आई, सन्मुख आसन दिया, रस पड़े ऐसी कथा सुनाने लगे। दक्ष की कथा आई। सती मानी नहीं, यज्ञ में गई, पति का अपमान सह न पाई। दक्ष के यज्ञ में जलकर सती भस्म हो गई। सती जल गई। दूसरा जन्म सती ने पार्वती का लिया। हिमालय के घर पार्वती के रूप में आई। देवर्षि नारद ने नामकरण किया। हस्तरेखा से भविष्यकथन किया, उनको शिव पति मिलेगा और तप करने को कहा। सती कड़ी तपस्या करने लगी।

यहां भगवान शंकर के प्रति ठाकुर प्रकट हुए। शिवजी को कहा, 'आप भवानी का स्वीकार करो। अब वो सती मिट कर पार्वती हो गई है।' शिवजी ने प्रभु की बात कबूल कर ली। भगवान पार्वती से ब्याह करके कैलास लौटते हैं। कालव्यतीत होने पर पार्वती ने पुत्र को जन्म दिया, जिसका नाम कार्तिकेय। कार्तिकेय ने ताड़कासुर को मारा। एक दिन भगवान शिव कैलास के वट वृक्ष के नीचे सहज बैठे हैं और पार्वती आकर प्रश्न पूछती है। फिर पार्वती और शंकर का संवाद शुरू होता है जिसमें से रामकथा का प्राकट्य होगा।

मुझे किसी ने कहा, 'बापू, कोई कहता है कि माल हमारा है, बापू प्रसाद बांटते हैं। बापू को परोसना अच्छा आता है।' चीज़ दूसरों की है और मैं अच्छा परोसता हूं, ऐसा निवेदन मेरे लिए अन्याय है। मुझे बीज मेरे सद्गुरु भगवान ने दिया। मैंने अपने चित्त की खेत में उसको बोया। मेरे सद्गुरु भगवान ने करुणा की वर्षा की। उनकी कृपा से 'रामचरित मानस' की फसल पकी। उस फसल से कोई सब्जी, कोई अन्न बना। ये सब मैंने काटा, मैंने खुद ने पीसा, खुद ने रोटी बनाई, पहले मैंने खुद खाई, पचाई और दूसरों को परोसना शुरू किया। तो, मैं परोसता हूं, लेकिन मेरी बनाई रसोई परोसता हूं।

मानस-संवाद

।। ३ ।।

आदमी जब ऊंचाई पर जाएगा, विवाद करेगा ही नहीं, संवाद ही करेगा

'रामचरित मानस' यानी रामकथा अंतर्गत संवादवाले प्रसंगों को केन्द्रबिंदु बनाकर हम जीवन में संवाद स्थापित करने का प्रामाणिक प्रयास कर रहे हैं। मूलतः 'रामचरित मानस' में चार संवाद है। 'मानस' को गोस्वामीजी ने एक सरोवर की उपमा दी है। बहुधा सरोवर के चार घाट हुआ करते हैं। तो, कैलासपर यानी कैलासघाट पर शिव पार्वती को श्रोता बनाकर उससे संवाद कर रहे हैं। कागभुशुंडि जी गरुड के सामने संवाद कर रहे हैं। तीर्थराज प्रयाग में याज्ञवल्क्यजी भरद्वाजजी के साथ संवाद कर रहे हैं और पूज्यपाद गोस्वामीजी अपने मन के साथ संवाद कर रहे हैं। इन संवादों का आश्रय लेकर 'रामचरित मानस' में कई संवादों की स्थापना की है। ये जो चार घाट है उसका संतों ने नाम भी दिया है। कैलास का ज्ञानघाट, भुशुंडि सरोवर का उपासना घाट, तीर्थराज प्रयाग में कर्मघाट और तुलसीवाला घाट, जिसको शरणागति का घाट माना गया है।

मेरे पास एक प्यारा प्रश्न आया है। हम संवाद की बात कर रहे हैं और संवाद हर क्षेत्र में जरूरी है। ये चार घाट पे जो दो-दो व्यक्ति का संवाद है जहां तीसरे को प्रवेश नहीं है कि मन और आपके बीच संवाद हो तब उसमें बुद्धि को भी प्रवेश नहीं होने देना, क्योंकि बुद्धि बहुत गरबड करती है। बुद्धि बहुत सोचती है, तर्क करती है। यद्यपि तर्क को सूखा माना जाता है। हमारे यहां आचार्यों ने भक्ति-शास्त्रों में कहा है कि तर्क का अवलंबन ही न करे। लेकिन पूरे जगत में तर्क का शास्त्र भी है। जहां तर्क होता है वहां विश्वास-श्रद्धा थोड़ा कमजोर होने लगता है। प्रेमतत्त्व भी कमजोर होने लगता है। इसलिए तर्क का अवलंबन न करो। तो, मैं आप से ये कहना चाहता हूं कि संवाद में बुद्धि तर्क

करेवो जरा विक्षेप करे।जिसकोसंवाद करनाहो उसको बुद्धिमान कोबीच में रखना नहीं। राहत सा'ब काशे'र है। शे'र सुनो अर्थ में मत जाओ। वो कहतेहैं -

कि सनेदस्तक दी है दिल पर कौनहै?
आप तो अन्दर हैं, बाहर कौनहै?

बिलकुलदो छोटी-सीपंक्ति में ये इन्दौरी साहब कहते हैं। व्याख्या कोछोड़ो,सुने जाओ। बात भी तो ठीकहै, क्या व्याख्या करेहम? अद्वैत पर व्याख्या करे? किसने दस्तक दी, कौनहै? इसकामतलब कि यहां आनेवाला कोईहै ही नहीं, एक व्यक्ति यहां आ सकतीहै और वो तो अंदर है। जिसकोआने काअधिकारहै वो अंदर है तो बाहर कौनहै? भारतीय वेदांत कीओर चले तो अद्वैत कीबात हो जाएगी। शिवोऽहम् कीबात हो जाएगी। द्वैत बचता नहीं, आंतर्-बाह्य एक हो जाता है। कईप्रकार के अर्थ निकलसकतेहैं। परवाज़ साहब भी अपने ढंगसे एक उस्तादी महेसूस कियाकरतेहैं। कलटेलिफ़ोनपर शे'र पढ़ रहे थे -

लब पे बात आई दीवाने कीगहराई लिये।
एक तरफ बैठेरहे सभी अपनी दानाई लिये।

बुद्धिमान अपनी बुद्धि लेकरचूपचाप बैठेरहे। जब लब पर कोईदीवाने कीगहराई कीबात आ गई। जब कबीरबोले, जब नानक बोले, बुद्ध बोले, महावीर बोले, नरसिंह बोले, तुकारम बोले अपनी ग्राम्यगिरा में। अपनी बोली में ठाकुरसामक्रिष्न बोले। तो, संवाद में बुद्धि काप्रवेश नहीं है।

बिक गया बाज़ारमें दो पहर तक एक-एक झूठ,
शाम तक बैठे रहे सच अपनी सच्चाई लिये।

यही तो जीवन कासत्य है। सत्यवान तो शाम तक बैठे, कोईग्राहक नहीं मिला! कौनसत्य खरीदेगा? और झूठ तो तुरंत चला गया!

तो, प्रश्न आया है कि, 'संवाद से कथाप्रकट होती है तो ये संवाद कैसेप्रकटहो?' मेरी दृष्टि में मेरी जिम्मेवारी के साथ ये चार घाट काजो संवाद है, ये संवाद प्रकटनेके चारों के बिलग-बिलग कारण है। काश,हम किसीघाट पर चूपचाप बैठ जाय! साहस हो तो कैलासके घाट पर बैठ जाय। वहां तीसरा अलाव नहीं है, फिरभी मानसिक रूपमें बैठ जाय। संभव हो तो नीलगिरि के उपासना के घाट पर कहींदूर चूपचाप बैठ जाय। संभव हो तो कर्म के घाट पर हम बैठ जाय और संभव हो तो तुलसी जो मन से संवाद कररहे हैं उसकी शरणागतिवाले घाट पर हम चूपचाप बैठेतो पता लग सकता है कि संवाद कैसेप्रकटहो। चाहते है संवाद, लेकिनहो कैसे?

कलदो मुनियों कासंवाद हम ने आपके सामने रखा। उस संवाद कीपृष्ठ भूमि आप देखे तो संवाद प्राप्य करने के कुछ उपाय, कुछ कारण मेरी व्यासपीठ को मिलता है। आप भी सोचे। उपाय एक,श्रवण किया हुआ आप भूल भी सकतेहो तो प्लीज़, जो श्रवण करोवो भूल जाओ तो चिंता नहीं, लेकिनजब मौकामिले उसी श्रवण कास्मरण करो। तो, मेरे भाई-बहन, कथाका श्रवण और आचरण हो तो सुधर जाय। याद रखना मेरा ईरादा सुधारने कानहीं है। जमाने कोसुधारने कामेरा मिशन है ही नहीं। मेरा ईरादा आप जैसे हो, स्वीकारनेकाहै। मेरे अनुभव में आया है। सुधारनेवाले जितने सुधारक आये, पूरी दुनिया कोसुधार नहीं पाये! भगवान कीकृपाकि वो बिगड़ते-बिगड़तेबच गये! जमाना बिगाड देता है। मैं स्वीकारनेआया हूं। 'हिंदु, मुस्लिम, शीख, ईसाई सबको मेरा सलाम।' मैं सबकोकबूलकरता हूं। हर जगह से आपकोनिमंत्रण करताहूं।

मैं एक पंक्ति गाता हूं, 'अकेलेहैं ...' आप न होते तो व्यासपीठ अकेलीहै। यद्यपि अंदर मेला है, सूफियोंको,साधुओं कोअंदर एक मेला लगता है। 'शाम ढलेइस सुने घर में एक मेला लगता है।' यादों की, परमतत्त्व कीमहसूसी में मेरी व्यासपीठ आवाज़ देती है। साधु-संतों, युवानों, बड़े बुझुर्ग सबसे मेरी व्यासपीठ प्रामाणिक डिस्टन्सलिए हुए बैठीहै और सबकोआवाज़ देती है।

अकेलेहैं चले आओ जहां हो,
कहांआवाज़ दे तुमको,कहांहो ...

हे हरि, कहांहो तुम? हम अकेलेहैं। दरवाजा खुला रखा है वक्त मिले तो रेहमत करना।परवीन कीगज़ल -

मेरी तरह तुझकोकौनचाहेगा?
अब किसीसे न महोब्बत करना!

भगवान शिव को हर कला प्रिय है, क्यों परहेज? जब मेरी व्यासपीठ सबकास्वीकार करने की बात करतीहै तो मैं हृदय से सबकास्वीकारकरूं,कथा सुनो तो अपनेआप व्यसन छूटजाएगा। आपकोलगेगा कि अपने हाथ में बीडीअच्छीनहीं लगती। जरूरअच्छा खाये, पीये, जो हमारी शालीनता है, हमारी मर्यादा है। हमारी एक भारतीयों कीपहचान है, उसको बरकरार रखे, लेकिनफिरभी उस पर मेरा कोईदबाव नहीं। अच्छीवस्तु अपनेआप ठीकलगतीहै।

मेरी व्यासपीठ के पास कोईअछूतनहीं है। गुरुपूर्णिमा के दिन ऐसी ही चर्चा चलती थी। गुरु के बारे में चर्चा निकलीतो मैंने उस समय पहली बार ये विचार प्रस्तुत कियेकि लाओत्सु के कुछसूत्र हैं। चीन के बड़े दार्शनिक महापुरुष लाओत्सु, शासकोंके बारे में, सम्राटों के बारे में, पांच सूत्र आपने कहे बड़े सीधे-सादे। लाओत्सु ने कहाकि शासक,राजा, सम्राट राष्ट्र नायक पांच प्रकारके होते हैं। मैं तो आध्यात्मिक रूपसे आपको निवेदन करना चाहता हूं, लेकिनराजकीय क्षेत्र में रहे हमारे आदरणीय लोग भी उसकोठीकसे समझे तो फायदाहो सकताहै। उसकोशायद फायदाहो न हो, राष्ट्र कोतो हो सकताहै। और फायदाराष्ट्र कादेखना चाहिए, खुदकानहीं।

एक नंबर काशासक वो है जो है कम भी करताहो, पूरे राष्ट्र कोसुखी करताहो, लेकिनराष्ट्र को पता न लगे कि हमारा राजा कौनहै। श्रेष्ठ शासक वो है कि उसकीछायामें, उसके होने में सब कुछहो जाता है, लेकिनवो अपनेआप कोवो इतना असंग रखता है कि पता न लगे कि हमारे पर किसीकाअनुशासन चल रहा है? वो बोझ है, हम थोड़ेपरवश है ऐसा किसीको न लगने दे ऐसा राजा। दूसरे नंबर काशासक वो ऐसा शासक है कि लोगों कोपता चले कि ये शासक है और लोग उनकोबहुत प्यार करतेहैं। प्यार करनाही पड़ेये दूसरा। तीसरा शासक है जिसकोसमाज, प्रजा, राष्ट्र प्यार न करे, लेकिन प्रशंसा बहुत करे, जयजयकार करे, जिंदाबाद करे, जुलुस निकाले, उत्सव मनाये ये तीसरा शासक।चौथा शासक वो है जिससे प्रजा डरे,भयभीत, ड़रीड़रीसी रहे, भयकंपित रहे। पांचवा राजा वो है लाओत्सु कीदृष्टि में, जिससे प्रजा विद्रोह करे।जैसे कहीं मुल्कोंमें विद्रोह होता है। सत्ता और पूरे राष्ट्रमालिक को जाना पड़ेगा।

लाओत्सु के सामने पांच शासकोंकीधारणा है। मुझे लगता है, सही है। मेरी व्यासपीठ कोआज उतने ही प्रासंगिक लगते हैं। मुझे ये कहनाहै कि पांच प्रकारके गुरु होते हैं। परखना, बिना परखे किसीकापैर जल्दी मत पकड़ना।परखो। पहला प्रकारगुरु वो है जो दिखता नहीं है, लेकिन उसकीकरुणा से सब कुछ होता है। उसकीस्थूल उपस्थिति कीजरूरतनहीं है। सूफीवादमें

बड़े सिद्धांत के रूप में माना जाता है कि सूफी जब बंदगी करते थक जाते हैं तब मालिक का नाम नहीं लेते, अपने आश्रितों का नाम लेते हैं। मालिक का नाम ले लिया, पूरी बंदगी कर ली। फिर मेरे भरोसे कौन-कौन जी रहे हैं उसको सुबह-शाम याद करते हैं। ये सूफीवाद का चरमशिखर है।

मैं आपको एक प्रमाण देना चाहूंगा। आप पर कोई पीड़ा नहीं है, कोई मुश्किल नहीं है। मान लो कोई पीड़ा नहीं, आप चैन से बैठे हैं, न कोई शरीर की पीड़ा, न मानसिक पीड़ा, न पारिवारिक पीड़ा, न सामाजिक पीड़ा, न आर्थिक पीड़ा, कुछ नहीं। ऐसे रिलेक्स हैं आप, अकारण अकेले बैठे हो चूपचाप और उसी समय आंख में आंसू आये बिना कारण तो समझना कोई बादशाह ने तुम्हें याद किया है। वो है, जो दिखता नहीं है। वो है। चारों ओर वो है। तो ऐसा सद्गुरु जो है, लेकिन दिखता नहीं। राज कौशिक का शेर है -

वस्ल के पल भी ये सोच गुजरे।
काश जल्दी वो वापस न जाय।

मुलाकात के पल, मिलन की घड़ि यांभी उसी चिंता में गुजरी, आनंद की पल, लेकिन चिंता में गुजरी कि कहीं जल्दी चले न जाय! स्थूल में तो चिंता होगी कि आये तो चले जायेंगे। तो, परमगुरु है जो दिखता नहीं। त्रिभुवन गुरु है। हनुमानजी परम त्रिभुवन गुरु है, दिखता नहीं, लेकिन वायु के रूप में सब जगह घूमता है। छबि के रूप में, मूर्ति के रूप में हमें आधार लेना पड़ ताहै।

दूसरा सद्गुरु। वो है जिसको पूरी दुनिया प्रेम करेगी। पूरे संसार को प्यार करना पड़ेगा दुश्मनों को भी।

जासु सुभाउ अरिहि अनुकू ला।
सो किमि करिहि मातु प्रतिकू ला।।

सद्गुरु वो होता है, पूरी दुनिया, छोटे से बच्चे से लेकर बुझर्ग तक, जमीं से लेकर आसमां तक, दिशायें, जड़ -चेतन, पशु-पक्षी, दुर्वांकुर सब उनको महोब्बत करे, रह नहीं पाये ये है सद्गुरु।

तीसरा है जगद्गुरु। आध्यात्मिक जगत का तीसरा गुरु है, मेरी दृष्टि में जगद्गुरु। उनका जयजयकार लोग करते हैं, प्रेम नहीं करते। उसके पास जाना पाबंदी, मर्यादा, उसके व्रत सब निभाना चाहिए। लोग जयजयकार करेंगे। वहां प्रेम करना कठिन है। क्योंकि जगद्गुरु की अपनी मर्यादा है, अपनी महिमा है। चौथा है जिससे जनता डरती है। मेरी दृष्टि में चौथा गुरु वो है जिससे लोग डरे-सेरहते हैं। जरा चूक हो गई तो नरक में जायेंगे! इसके शास्त्र को नहीं माने तो पाप लगेगा! डरेरहते हैं धर्मगुरुओं से लोग। इनके ग्रंथ डरा रहे हैं। कभी गलत आदेश करते। तुम डरो मत, एक -दूसरों से प्रीत करो। सत्संग से फायदा होगा। भगवान की कथा चैंज करती है। कथा का नशा एक कथा से नहीं चढ़ेगा। थोड़ा ओर पियो, मेरे मैखाने में कमी नहीं है। भगवान बुद्ध के बारे में स्पष्ट माना जाता था कि भगवान बुद्ध के पास जो आदमी जाता था, वो जब जाता था तब जब जैसा था वैसा लौट ते समय नहीं होता था। कुछ का कुछ हो जाता! अनुभव करो। मेरी कथा आपको भीड़ रायेगी नहीं। आप कथा में जैसे भी बैठे,

आपकी अनुकूलता से, आराम से बैठो। ये शिव की भूमि का परिसर निराकार है, इन्दौर।

निराकारमोंकारमूलं तुरीयं।
गिरा ग्यान गोतीतमीशं गिरीशं।।
करालं महाकाल कालं कृपालं।
गुणागार संसारपारं नतोऽहं।।
नमामीशमीशान निर्वाणरूपं।
विभुं व्यापकं ब्रह्म वेदस्वरूपं।।

तो, धर्मगुरु वो है, बहुधा लोग उससे डरते हैं। कहीं शाप न दे दे! एक बहुत जिम्मेवारी के साथ यकीन दिलाना चाहता हूं कि जो सही में सद्गुरु है उसका अपराध आप यदि करे, हो जाय किसी कारणवश तो उसकी कृपालुता में कमी नहीं होगी। हां, सावधान जरूर करूं।

पांचवा, जिसके सामने लोग विद्रोह करते हैं। ज्यादा दबाव बढ़ जाता है तो प्रजा हाथ में रहती नहीं और उसके सामने विद्रोह होते हैं। उसके विरोध में नारे लगाते हैं। वो गुरु का नाम रामकथा में है कुलगुरु। वैसे कुलगुरु अच्छे अर्थ में भी है। भगवान राम के कुलगुरु समुद्र है, वो रास्ता दिखाये कि लंका कैसे जाये। तीन दिन व्रत करे, अनसन पर बैठे। कुलगुरु जड़तावश राम का विनय मानते नहीं है और तीन दिन बीत जाते हैं और भगवान राम विद्रोह करते हैं। उसको मेरी व्यासपीठ कुलगुरु कहते हैं।

तो, त्रिभुवनगुरु-परमगुरु, सद्गुरु, जगतगुरु, धर्मगुरु और कुलगुरु ये लाओत्सु के सम्राट की तरह अध्यात्म के पांच गुरु है। तो, व्यासपीठ और 'रामचरित मानस' एक ऐसा गुरु है उसको कि सी से परहेज नहीं है। यहां सबका स्वीकार है। इसलिए मेरा सूत्र, मेरा मिशन सुधारने का नहीं है, सबको स्वीकारने का है।

तो, जिज्ञासा मेरे पास आई थी कि संवाद से कथा प्रकट होती है, लेकिन संवाद प्रकट हो उसके उपाय क्या है? दो मुनियों भरद्वाज और याज्ञवल्क्य का संवाद किस कारण से उठा? तीन कारण है। संवाद का एक कारण ये है कि जो दो व्यक्ति के बीच में संवाद जन्म ले उसके लिए दोनों की जाति एक हो। जाति मानी विचार की जाति, उसुलों की जाति, मूल्यों की जाति, सभ्यता की जाति, विचारों की जाति एक हो।

आप 'रामचरित मानस' गौर से देखें तो पता लगे कि ये दो मुनियों के बीच संवाद प्रकट होता है। क्योंकि दोनों मुनि है। ये पहला कारण है। संवाद प्रकट होने का कारण है याज्ञवल्क्य मुनि और सामनेवाला भरद्वाज भी मुनि है। दोनों मुनि। समान व्यसन है। 'रामायण' के दोनों परोक्ष, अपरोक्ष पात्र भी है। एक ही शास्त्र से जुड़े हैं। मुनि का एक अर्थ होता है जो जीवन में ज्यादा मौन रहता है वो मुनि है। मौन मुनि का लक्षण है। दोनों के जीवन का मंत्र ज्यादातर मौन है। तीसरा दोनों मौन रहनेवाले हैं, इसलिए संवाद बन पाया। चौथा, जहां दो धारायें मिलती हो वहां संमिलन स्वाभाविक है, ये सहज है। तीर्थराज में संवाद रच रहे हैं वहां दो धारायें है। दो धारायें, लेकिन दो धारा प्रयाग में जाती है। एक श्यामवर्णी यमुनाजी, एक गौरवर्ण गंगाजी। दोनों महापुरुषों की दो आध्यात्मिक धारा है, एक याज्ञवल्क्य की ज्ञानधारा है, परमविवेकी। और भरद्वाजजी की धारा है भक्ति धारा। 'राम पद अनुरागा।' परमविवेक और परमअनुराग दो धारा मिलती है तो संवाद स्वाभाविक है। ये कर्मघाट का संवाद है।

अब उमा-संभु संवाद। वहां संवाद प्रकट हुआ उसके कारण क्या है? उसके भी कारण हैं। जो मेरी समझ में आता है, आप सुने। पहला कारण है ये दो दो नहीं है, वास्तव में दो दिखते हैं, तत्त्वत: एक है। अब दोनों एक है तो संवाद ही संवाद होगा। शिव और पार्वती अर्धनारेश्वर हैं तो संवाद के सिवा क्या निकलेगा? सीधी-सी बात है। दूसरी बात, अध्यात्म ऊंचाई कैलास की है, एवरेस्ट की नहीं। ऐतिहासिक ऊंचाई एवरेस्ट की है। एवरेस्ट में स्पर्धा लगी है। कैलास में श्रद्धा है। और वहां आज तक कोई ऊपर चढ़ा ही नहीं। संवाद शिव-पार्वती के बीच में निर्मित हुआ। पहला कारण वो दो नहीं है। और दूसरा, उससे ऊंचा कुछ नहीं है। आदमी जब ऊंचाई पर जाएगा, विवाद करेगा ही नहीं, संवाद ही करेगा।

तीसरा कारण, वहां दोनों देव हैं। एक महादेवी है, एक महादेव है। इसलिए संवाद स्वाभाविक है। वैसे तो शिव और पार्वती ने दो बच्चों को जन्म दिया, कार्तिकेय और गणेश। लेकिन मुझे कहने दो वो स्थूल बेटे हैं। लेकिन पार्वती और शंकर के गृहस्थ धर्म ने एक बेटा संवाद और एक बेटी कथा को जन्म दिया। पहले संवादरूपी बेटा पैदा हुआ और फिर कथारूपी कन्या पैदा हुई। ये शिव का गृहस्थ जीवन है। और संवाद का कारण एक विश्वास है, दूसरी श्रद्धा है। तो, श्रद्धा और विश्वास है इसलिए संवाद है। हिन्दुस्तान की अस्सी प्रतिशत धर्मप्रेमी जनता विश्वास पर जी रही है।

तो, दोनों एक जाति, संवाद पैदा होगा। आत्मा एक है, संवाद पैदा होगा और जहां श्रद्धा और विश्वास का संमिलन है वहां संवाद होगा ही होगा। और दोनों की छाया एक है। दोनों वट वृक्ष की छाया में हैं। तो, शिव और पार्वती का संवाद, मुझे जो कारण समझ में आया, मैंने बताया। अब दोनों में क्या संवाद हुआ ये देखें।

एक बार भगवान शिव कैलास के वट वृक्ष के नीचे विश्राम में बैठे हैं। महादेवी भगवती पार्वती भल अवसर देखकर पति के पास आती हैं। शिवजी आदर देते वामभाग में आसन देते हैं और दोनों के बीच जो वार्तालाप होगा ये संवाद है और उसमें से कथा का प्राकट्य होगा। तो, कथा सुनने की लालसा प्रकट हुई इसलिए भवानी शिव के पास गई। शिव ने आसन दिया, आदर दिया।

समस्त लोक का कल्याण हो ऐसी कथा पार्वती पूछना चाहती है, प्रकट करना चाहती है। इसलिए संवाद की भूमिका। पार्वती राम के बारे में पूछती है। 'गत जन्म में रामकथा सुनी नहीं, आपकी एक भी बात नहीं सुनी। परिणाम दक्षयज्ञ में जल गई। दूसरा जन्म हिमालय के घर हुआ। तपस्या करके आपको प्राप्त कर चूकी, फिर भी मन से वो बात अभी गई नहीं कि राम सही में ब्रह्म है कि सामान्य मानवी? आप मेरे संदेह को भगवान की दिव्य कथा के माध्यम से हर लो।' फिर संवाद की भूमिका में कथा प्रकट होती है। भगवान प्रसन्न होते हैं। भगवान की कथा कहने को तैयार होते हैं।

पांच प्रकार के गुरु होते हैं। पहला प्रकार का गुरु वो है जो दिखता नहीं है, लेकिन उसकी करुणा से सब कुछ होता है। परमगुरु है, जो दिखता नहीं। दूसरा सद्गुरु है, जिसको पूरी दुनिया प्रेम करेगी। तीसरा है जगद्गुरु। उनका जयजयकार लोग करते हैं, प्रेम नहीं करते। चौथा गुरु है धर्मगुरु, जिससे लोग डरे-डरे रहते हैं। पांचवां, जिसके सामने लोग विद्रोह करते हैं। वो गुरु का नाम है कुलगुरु। वैसे कुलगुरु अच्छे अर्थ में भी है। भगवान राम के कुलगुरु समुद्र है। कुलगुरु जड़तावश मानते नहीं और भगवान राम विद्रोह करते हैं।

मानस-संवाद
|| ४ ||

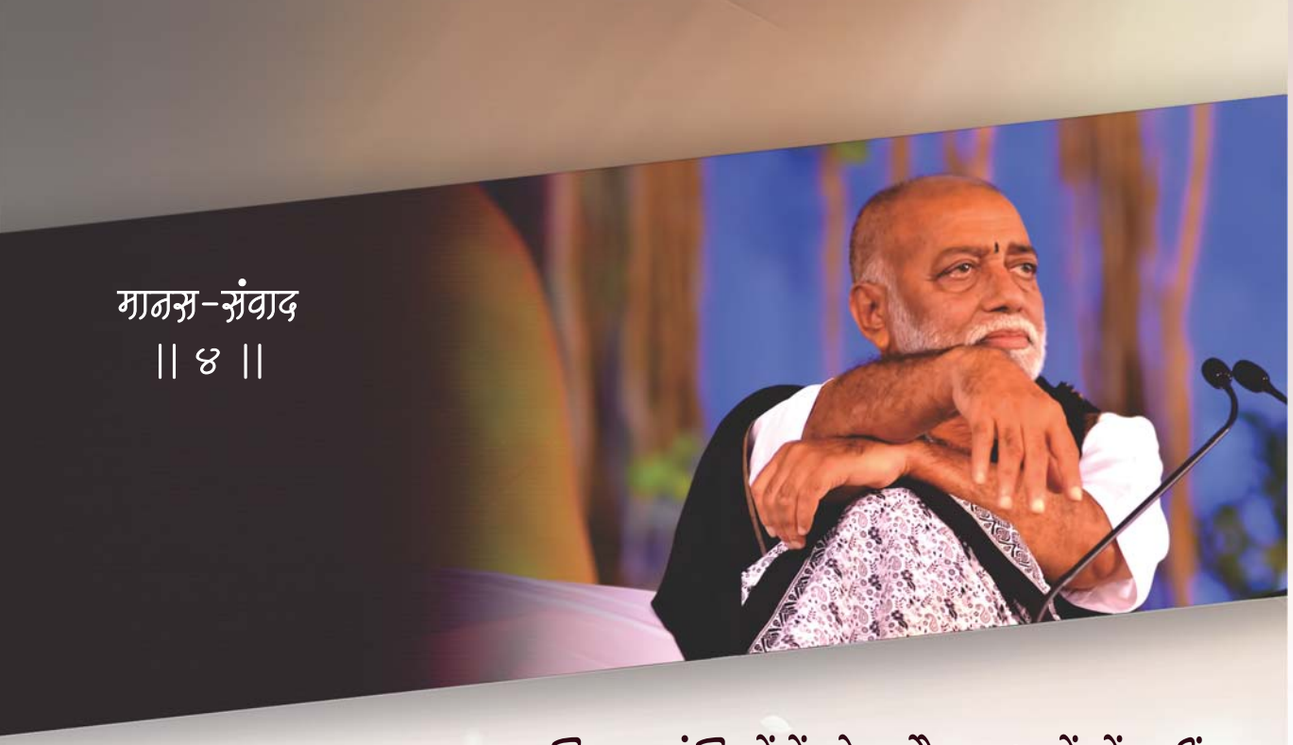

विवाद पंडितों में होता है, साधुओं में नहीं

'रामचरित मानस' यानी रामकथा, 'रामायण', इसके अंतर्गत 'मानस-संवाद' की कुछ विशेष चर्चा बहुत एंगल से आपके साथ संवाद के रूप में की जा रही है। मेरे पास प्रश्न आते हैं। मेरा पचपन साल की रामकथा की यात्रा का अनुभव है कि मेरे श्रोतागण मुझे कहते हैं, "बापू, नव दिन में हमारे मन में जो भी कोई प्रश्न थे उसका जवाब अपनेआप हमें मिल गया मानो! आप हम से ही बोल रहे थे, हमारे लिए ही बोल रहे थे।" ऐसा प्रतिभाव मैंने बहुत से श्रोताओं से पाया है। और ये सही भी है कि शांत होकर यदि श्रवण करें तो शास्त्र समाधान दे देता है।

एक श्रावक का प्रश्न है कि, "कथा सुनते हैं और एक संवाद हमारे जीवन में बन गया, तो हम यदि निर्णय न कर पाये कि संवाद सही में बन गया कि ये कुछ क्षणों का आवेग है? कुछ क्षण ऐसा हो गया कि कथा हमें सुनी है और अब सामने से जाकर विवाद टाल दिया जाय और हम जिससे विवाद चल रहा था उससे संवाद साध ले। ये भाव होता है, लेकिन कुछ समय के बाद ये चला भी जाय। हमारा मन तर्क करे कि हमने पहल की थी, सामने से ठीक से रिस्पोन्स नहीं मिला। तो, फिर हम क्या करें तो हमारा संवाद शाश्वत बन जाय?" 'रामायण' में ये चार संवाद है, ये शाश्वत बन गये, उसको काल ग्रस नहीं सकता। ये पुराने हो गये ऐसा कभी नहीं हो सकता, वर्ना जिस शास्त्र को केन्द्र में लिये मैं बैठा हूं उसको तो करीब पांच सो साल हुए। उसके पहले भी जो 'रामायण' थे, इतने सालों के बाद ये संवाद लुप्त हो जाना चाहिए था, लेकिन ये संवाद रोज नया क्यों लगता है?

चार लक्षण संवाद के आप समझिए मेरे भाई-बहन, वो लक्षण मेरे नहीं है, 'श्रीमद भगवद्गीता' ने बताये हैं। 'श्रीमद भगवद्गीता' भी क्रिष्न-अर्जुन संवाद है। आप अठारहवें अध्याय में जाईए, आखिरी अध्याय में, वहां शायद तीन बार 'संवाद' शब्द का प्रयोग होता है। संजय दूर से संवाद सुन रहा है। और ये संवाद सुनकर उसने चार लक्षण की चर्चा की। एक लक्षण बताया है, ये संवाद अद्भुत है। दूसरा लक्षण बताया, ये संवाद रहस्यमय है। तीसरा लक्षण बताया, ये संवाद कल्याणकारी है, पुण्यकारी है। और चौथा लक्षण बताया है, ये रोमांचित करता है। ये संवाद मैं सुनता हूं तो क्षण-क्षण मुझमें प्रसन्नता बढ़ती है।

पहला प्रश्न मेरा ये है, मेरे भाई-बहन कि, ये संवाद की चर्चा मैंने इस कथा में उठाई है तो आपको जीवन में संवाद अच्छा लगता है? किसी को संवाद अच्छा लगता ही नहीं, विवाद ही अच्छा लगता है! तीन वस्तु जिन में हो उनमें विवाद होता है। एक मूढता, दूसरा अहंकार, तीसरा दंभ। और पूरे समाज पर अपनी ही बात चले, दूसरों की चले ही नहीं ये जिसमें दुर्गुण हो उसके जीवन में विवाद ही होगा।

आप प्रयोग करे, आप संवादप्रेमी न हो तो समझना आपमें मूढता है, अहंकार है। कल एक युवक पूछता था कि, 'ऋषिमुनि बड़े हैं, फिर भी क्रोध क्यों करते हैं?'

सभी मस्त है कौन किसको संभाले?
जिसे देखिये लड़खड़ाने लगा है।
नशे में जमाना, जमाने में हम भी।
हम पर भी इल्जाम आने लगा है।

तो बाप, जो लाखों लोग भूखे हैं, 'मेरे हाथ में दाने दो!' जिंदगी का ज्यादा से ज्यादा समय जगत को दिया है ये हकीकत है। अब आप थोड़ा समय दो। व्यासपीठ किसी को बूढ़ा नहीं होने देती। रामकथा किसी को बूढ़े होने की इजाजत नहीं देती।

तो, आदमी विवाद चाहता है उसके चार कारण हैं, मूढता, अहंकार। तीसरा, दंभ। दंभ का मतलब है, मैं छोटा नहीं हूं, मैं इससे भी बड़ा हूं। वो प्रसिद्ध हो गया इतना ही फर्क है। और चौथा जिसको सबके ऊपर अपनी ही मनमानी बातें ठोकनी है, वो कहे वो ही ठीक ऐसी स्थिति में संवाद कभी संभव नहीं।

पूछा है युवक ने, 'सिद्ध लोग क्रोध क्यों करते हैं?' मैंने कहा, बेटा, क्रोध कचरा है और सिद्ध लोग क्रोध करे तो वो सिद्ध नहीं है ऐसा मैं नहीं कहूंगा। चलो, मैंने मान लिया कि वो सिद्ध है, लेकिन क्रोध करता है तो मैं इतना विनम्रता से कहूंगा कि वो सिद्ध है, शुद्ध नहीं, क्योंकि ओलरेडी क्रोध का कचरा उसमें है। दंभ का कचरा है, अहंकार का कचरा है। और सामूहिक राष्ट्र को, सामूहिक विश्व को सिद्धों की जरूरत नहीं है, शुद्धों की जरूरत है।

परमात्मा से मांगो, भगवान ने जन्म दिया है; अच्छे माँ-बाप, भाई-भगिनी दिये हैं; संपदा, अच्छी पढ़ाई दी है, जो दिया है अपनी औकात के अनुसार दिया है। भगवान से कुछ मांगने की मुझे तो जरूरत नहीं। मांगना है तो ऐसा मांगो कि शुद्ध और शीतल संत से हमारी भेंट करवा दे, जिनके पास बैठने से हमें अच्छा लगे।

कोई ऐसे बुद्धपुरुष के पास बैठने को मिले, संवाद है। तुलसीदास संत के लिए दो ही विशेषण देते हैं।

एक विशुद्ध साधु, दूसरा शीतल संत। शीतल, वो कभी क्रोधन करे। जिसकी आंखों में आप विकार देख ही न पाये। जिसकी कोईभी चेष्टा विकारजनितन हो। कुछन कुछ संदेश हो। तो, शुद्धों की जरूरत है। हमारा मूल स्वभाव शुद्ध है। मुझे लगता है, शुद्ध स्वभाव को सिद्ध करना धर्मान्तर है। ये विकृतिजैसा है। क्रोधरूपी विकार जिसमें है वो शुद्ध नहीं है। आदमी शुद्ध हो, साधु शुद्ध हो, शीतल हो। तो जब तक मूढ़ता, अहंकार, दंभ है और जब तक अनुशासनीय वृत्ति है, संवाद कभी नहीं कर सकते।

मेरा आप से प्रश्न है मेरे श्रावक भाई-बहन, आप संवाद चाहते हैं? सब संवाद चाहते हैं, कोईविवाद नहीं चाहता, तब उसके लक्षण समझ लो कि ये चार लक्षण संवाद में होंगे तो संवाद 'गीता' की तरह शाश्वत हो जाएगा। 'भगवद्गीता' कभी पुरानी नहीं होगी। 'रामचरित मानस' कभीपुराना नहीं होगा। तो, संवाद में चार वस्तु लक्षण के रूपमें। एक, संवाद जो हुआ है वो आपको जब अद्भुत लगे। कथाये संवाद हो और आपकी भीतरी आत्मा ये कहेकि नहीं, नहीं, ये संवाद की बात हम और बापू कर रहे हैं और ये संवाद अद्भुत रहा, बहुत अच्छा लगा, तो समझना संवाद कायमी रहेगा ऐसा एक सगुन मिल गया। जीवन में करनेजैसा यही है।

दूसरा, संवाद कायमी रहे इसका दूसरा लक्षण है, संवाद रहस्यपूर्ण लगे। रहस्यपूर्ण का मेरा मतलब कि नव दिन का संवाद हुआ तो इतने रहस्यों का उद्घाटन हुआ। घर से लेकर अंबर तक की समाधान की बातें चली। तो, अभी इनमें कितने रहस्य छिपेहोंगे? कितने राम रहस्य, कितनेहनुमंत रहस्य, कितनेभरत के रहस्य, कितनेभुशुंडि के रहस्य इसमें छिपेरहे! रहस्य युक्त लगे। अभी ओर रहस्य खुलेगा। किसीने कहा, संशय हुआ और संवाद हुआ। नहीं, संशय से संवाद नहीं होगा। संशय उसको कहते हैं जो जाये ना कभी। 'संशयात्मा विनश्यति।' संशय नहीं मिटेगा, आदमी मिटेगा। सती को संशय था तो उसका संशय न मिट नेपाया, सती मिट गई!

पहले कथामें जिज्ञासा के रूपमें प्रश्न आते थे। बीच में कथामें श्रोता को बीच में जिज्ञासा, प्रश्न करने की छूटनहीं थी। किसी को बीच में बोलने का अधिकार नहीं दिया जाता था। मेरी व्यासपीठ ये अधिकार पुनः देती है। कथामें ये क्रम नहीं था। एक मर्यादा बनी हुई थी। हां, प्रवचनकारों ने, जैसे कृष्णमूर्ति, ओशो इन लोगों ने प्रश्नों की छूटदी थी। ओशो ने तो बहुत दी थी। व्यासपीठ को भी अच्छा लगता है कि आप मुझे पूछो। और मैंने कहाभी मैं सब प्रश्न का उत्तर नहीं दे पाता हूं, जो समझ में आये उसका उत्तर दूं। सब आता ऐसा मैं कैसे कहूं? कि सीको पाने के लिए पूछो, कि सीको मापने के लिए मत पूछो। यदि हम किसीको मापने गये तो हम छोटेपड़ जायेंगे!

लाओत्सु का एक अद्भुत सूत्र है। साधु को अपनी साधुता जस्टिफाय नहीं करनी पड़ती। साधु को अपनी साधुता सिद्ध नहीं करनी होती कि समाज उसको मोहर लगाये। जो साधु समाज से मोहर लगवाये उसका मतलब ये कि मोहर लगानेवाला बड़ा है, साधु छोटा हो गया! जिसको साधुता निभानी है, उसको ये सूत्र बहुत बल देगा। संशय जिज्ञासा के रूपमें हो ताकि संवाद कायमी टिके इससे कुछ प्राप्त हो। तो, पहला, संवाद अद्भुत लगे; दूसरा, रहस्यमय लगे। तीसरा लक्षण है, पुण्यकारीलगे, कल्याणकारीलगे। जो संवाद

कल्याणकारीहो। 'रामायण' का संवाद पूरे जगत का कल्याणकरतीहै। गोस्वामीजी उसे छंदबद्धकरतेहैं -

मंगल करनिक लिमल हरनि
तुलसी कथारघुनाथ की।
कथाजो सकललोक हितकारी।
सोइ पूछनचह सैल कुमारी।।

जो संवाद रचे उसका ही कल्याणन हो, सुननेवालों का भी कल्याणकरे। तुलसी और संतों ने संवाद किया जो आज हम सबका कल्याणकर रहे हैं। हम सबके लिए कल्याणकारीहै ये तीसरा लक्षण है। और चौथा लक्षण क्षण-क्षण, बार-बार इसका स्मरण करनेसे रोमांच होने लगे। रोंगटेंखड़े हो जाय! ये पल कटनेसे प्रसन्नता बढ़ने लगे। ये कायमी संवाद के कुछलक्षण है। इस तरह संवाद कायमी रूपलेता है।

उमा-शंभु की संवाद की भूमिका की लबनी कि ये संवाद क्यों हुआ? शिखर पर है, दोनों देव है, श्रद्धा और विश्वास है आदि आदि लक्षण देखें। तीसरा संवाद 'मानस' में है कागभुशुंडिऔर गरुड का। वो संवाद हुआ उनके कुछकारणये है मेरी समझ में, ये दो पक्षी के बीच में क्यों संवाद हुआ? एक मानी हुई ऊंचाई, एक सन्मान भरी ऊंचाई, एक अवस्था ऐसी ऊंचाईपर जो होगा वहां संवाद ही होगा। कागभुशुंडिएक ऐसी ऊंचाईपर है और खगपति गरुड भी ऐसी ऊंचाईपर पहुंचते हैं। इसलिए दो हरिभगत, दोनों के बीच में संवाद हुआ, क्योंकि कागभुशुंडिनीलगिरि पर्वत पर रहते हैं, ऊंचाआसन है।

उत्तर दिशा में सुंदर नीलगिरि पहाड पास सुशील कागभुशुंडि निवास करते हैं, शीलवान है। याद रखना, कागभुशुंडिका शरीर कौएका है, क्योंकि ये कौए का शरीर छूटना नहीं चाहता। इसलिए केवल विग्रह कौएका है, तत्त्वतः अद्भुत व्यक्ति है। शीलवान ही नहीं सुशील है और सुशील आदमी कभी विवाद नहीं करेगा, संवाद ही करेगा। तो, एक लक्षण है भुशुंडि का सुशीला। दूसरा लक्षण राम भगति में डूबारहता है।

कलरेडि योवालेयुवान भाई मेरे इन्ट र्व्यूकर रहे थे, बोले, 'युवान लोग भगति कैसे करे?' मैंने कहा, मैं युवानों को भगति करनेको कहताही नहीं। भगति का अर्थ, माला, जप, पूजापाठ, तिलक करो, ये करो, अच्छी बात है। भगति मतलब प्रेम, जो आचार्यों ने किया है। भगति मानी प्रेम। मैं युवानों को प्रेम करनाक हताहूं, परस्पर प्रेम करो। रामराज्य का यही एकमात्र सूत्र था।

सब नर करहिपरस्पर प्रीति।

युवान भाई-बहन, परस्पर प्रेम करेऔर प्रेम भी आज-कलआप जिसको प्रेम करतेहैं उसी स्तर का नहीं।

मैंने एक बहन को इन्ट र्व्यूमें कहा कि, सत्य एक मारग है, प्रेम भी मारग है, करुणाभी मारग है। तो, मारग तो वही होता है जो कहींपहुंचाये। कहींजाना है तो मारग की जरूरतहै। तो, एक अर्थ में मैंने कहा, सत्य के मारग से हमें परमसत्य तक पहुंचना है, जो भागवतकारकहतेहैं, सत्यम् परम्। सत्य से चलकर हम परमसत्य तक पहुंचे। प्रेम मारग मानो तो प्रेम से हम 'रामचरित मानस' के परमप्रेम तक पहुंचते हैं। और करुणाएक मारग है तो करुणासे हम परम करुणातक पहुंचे। अपनी संवेदना को लेकर हम करुणाअवतार शिव तक पहुंचे। शिव परमकरुणा है। तो, सत्य मारग है परमसत्य तक पहुंचने का। प्रेम मारग है परमप्रेम तक पहुंचने काऔर करुणामारग है परमकारुणिकशिव तक

पहुंचने का।

तो बाप, कागभुशुंडि सुशील है। और जो शीलवान है वहां संवाद ही होगा, विवाद नहीं होगा। दूसरा, रामभगतिमय है। जिसमें रामभगति है वो विवाद करेगा ही नहीं। और बहुत दीर्घायु है। ज्ञानी है। तमाम गुणों के निवास स्थान है। बहुकालीनहै। तो, संवाद का कारणनीलगिरि की ऊंचाईऔर संवाद का कारणभुशुंडि कीसाधुता। ये उनके संवाद काकारणहै। जिसके जीवन में उपासना होगी वो आदमी विवाद नहीं करेगा।संवाद ही करेगा।चार वृक्षों को मिलाकर कागभुशुंडि जीवहां साधना करतेहैं ये संवाद का स्वरूप है। ये ज्ञानी है, यज्ञयाग करतेहैं। योगी भी है। रामभगति भी है। संवादी जीवन है श्री भुशुंडि जीकाऔर गरुड के साथ संवाद हुआ इसका कारण ये है, दोनों पक्षी है। जैसे शिव-पार्वती दोनों देव है। याज्ञवल्क्य, भरद्वाज दोनों मुनि है। तुलसी स्वयं साधु है। तो, जाति मिलती है, दोनों पक्षीजाति है। और दोनों पंखवालें हैं। विशालता जिसके जीवन का आदर्श है वहां विवाद नहीं हो सकता।ओर कारणसंवाद कामेरी व्यासपीठ कोये भी लग रहा है कि खग, खग की भाषा जानता है। जब भाषा कासंमिलन होता है तब भी संवाद होता है। इसलिए कागभुशुंडिऔर गरुड के जीवन में जो संवाद स्थापित हुआ उपासना के घाट पर उसके कुछकारणमेरी व्यासपीठ कोये लग रहे हैं।

अब तुलसी और संतसमाज अथवा तो तुलसी का मन जो कहो, उसके बीच में जो मानसरोवर का चौथा शरणागति काघाट है वहां संवाद काकारणये है, एक तो ये घाट ही शरणागति काहै। जहां शरणागति होती है वहां सब तक रारसमाप्त हो जाती है। शरणागति विवाद नहीं करती।मैं तेरा हूं, बस अब तुम जो चाहे। राज कौशिककाशे'र है -

बस तेरे नाम पर जी रहे हैं,

वो भी तुझ पर है, कबतक निभाये।

बेसबब ही कोईमर न जाये,

उससे कह दो न यूंमुस्कुराये।

तेरे नाम कासहारा है। हमें ओर कोईशरण नहीं, तेरी शरणागति है। अब निभाना न निभाना तू जाने, कब तक निभाये ये शरणागति। तो, शरणागतिवाला आदमी विवाद नहीं करताये सीधी-सी बात है।

लाओत्सु कहाकरते थे कि दुनिया में सबको आप हरा सकतेहैं, लेकिनजो सामने से कहदे कि मैं हार चूकाहूं, उसकोकोईनहीं हरा सकता।लाओत्सु कहतेहैं कि जो आखिरी पंक्ति में बैठेगा उसको कोई कभी उठायेगा नहीं। तो, जो हार गया उसे कौन हराये? शरणागति संवाद कीजनेता है। तुलसी वैरागी साधु है। कहतेहैं वो भाजी के पत्ते बिना नमक के खाया करतेथे इतने वैरागी थे। और जिसमें इतना वैराग हो, वो किसीसे क्यों विवाद करे? विवाद काकोईकारण नहीं बचता। तीसरी वस्तु, दूसरों से बात करनीहो तो कभीविवाद हो सकताहै। तुलसी ने दूसरों से बात नहीं की,अपने मन से बात कीऔर जो अपने मन से खुद बात करेगा,मन को प्रबोध करेगा तो स्वाभाविक विवाद नहीं हो सकता, संवाद ही होगा। मैं भी आप से निवेदन करताहूं कि मन के साथ लड़ोमत। हमें सिखाया गया है धर्म के नाम पर कि मन कादमन करो,मन कोरोको,मन के आवेग को रोको!लेकिनमुझे लगता है कि मन के साथ संघर्ष करने से विवाद खड़ाहोगा। मन कईप्रकारके विवाद पैदा

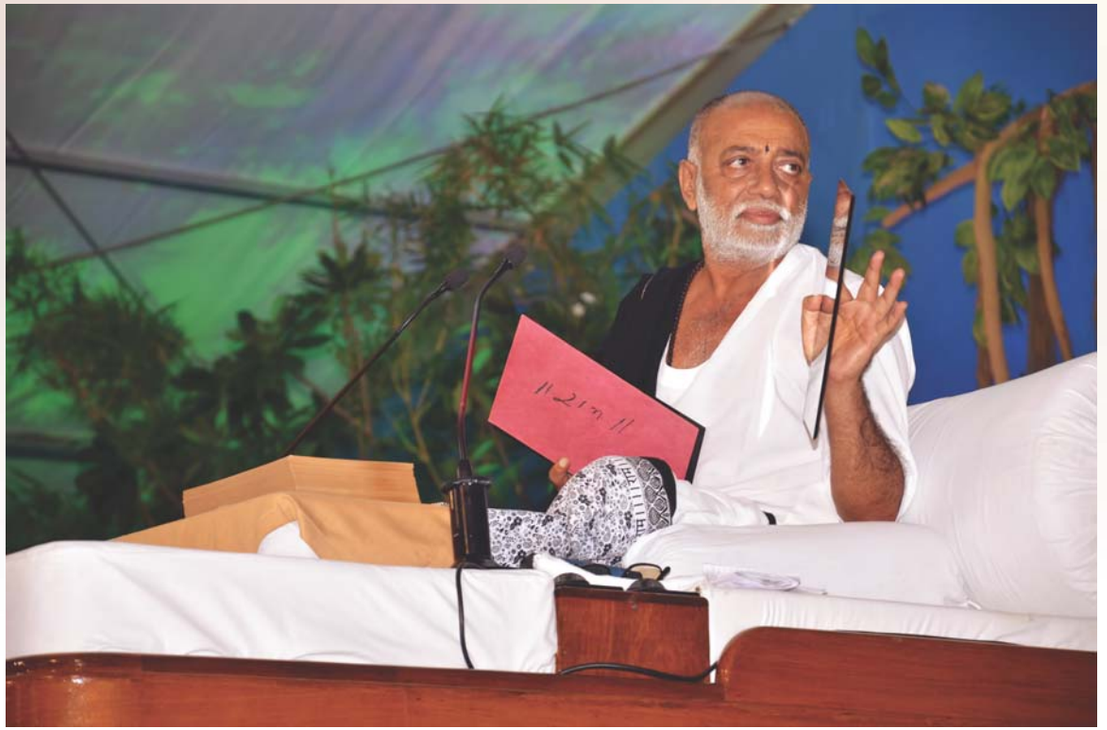

करताहैं। मन के साथ मैत्री करे।सूर, तुलसी सबने मन से संवाद कियाहै, ये उनके पद में है -

रे मन, मूरख जनम गंवायो।

करीअभिमान विषय रस पीधो।

तो, मन से लड़ोमत। मन परमात्मा कीविभूति है। उससे संवाद कियाजाय। इसलिए तुलसी मन से बात करतेहैं। जहां मौकामिला गोस्वामीजी ने मन से संवाद किया।'विनय' काप्रसिद्ध पद है -

श्रीरामचंद्र कृपालु भजमन हरन भव भय दारुणं।
नव कंज लोचन कंजमुख कर कंज पद कंजारुणं।

हे मन, तू ये कृपालुकोभज, उसकीसेवा कर,उसका स्मरण कर।

कृपयातो, मन के साथ विवाद न करे।उसके उछल-कूद्के हम दृष्टाबने। आप कितना ही चलो, कितना ही चलो, आखिर में बैठ जाते हो। कितना ही खाओ, आखिर में डकारले लेते हो। आप कितना ही सोओ, लेकिनआखिर में जाग जाते हो। आप कितनाही जागो, आखिर में आंख लग जाती है। वैसे मन के साथ समझौता करनेसे कितनाही चंचल क्यों न हो, धीरे-धीरे शांत हो जाते हैं। ये भी मारग है। तुलसी ने बिलकुलमन से प्रबोध किया-

राम भजि सुनु सठ मना।

तो, अपने मन से बात करनेसे संवाद हुआ। और साधु-समाज के साथ तुलसी कावार्तालाप चल रहा है तो संवाद ही होगा। विवाद पंडितोंमें होता है, साधुओं

में नहीं। महावीर स्वामी के कानमें खीले डालदिया जाय पर विवाद नहीं। इतनी हद तक धैर्य! सुक्रातको विष दिया गया, विवाद न किया।साधु कभीविवाद न करे। साधु बालक जैसा विनोदी होता है।

कलमुझे युवानों के बारे में बहुत पूछागया कि,'बापू, युवान एकदम अग्रेसीव हो जाता है, डिप्रेसन आ जाता है!' इसकाकारणयही है कि निराशा पैदा हो जाती है। जरूर पढ़ो,लेकिन कितने साल पढ़ाईमें? पढ़ते-पढ़तेभी थोड़ासमय निकालो।आप कोईरमत खेल सको।अच्छेनाट कदेख सको।ध्यान रखना, अच्छी हो वो देखना। अच्छागीत, अच्छीकलाकी प्रस्तुति करो। बच्चों को अवसर मिलना चाहिए। बच्चे पर जबरदस्ती मत करो। उसको सहज रहने दो। उसका स्वभाव सहज है। जरूरउसकोमार्गदर्शन करो।

विनोबाजी कहाकरतेथे, 'बच्चे ही सच्चे हैं, बाकी सब कच्चे हैं।' शास्त्रों में लिखा है, 'उत्तमा सहजावस्था, मध्यमा ध्यानधारणा।' सहज जीवन। साधुओं काजीवन सहज होता है इसलिए उनके जीवन में संवाद कीसंभावना निरंतर रहती है। तुलसी ने साधुओं से वार्तालाप किया। तो, ये चारों जगह संवाद के कुछ कारण मेरी व्यासपीठ कोलगे, जो मैंने आपके सामने रखा।

तो, शिव-पार्वती संवाद से पार्वती प्रश्न पूछती है और उसके संवाद से रामकथाकाजनम होनेवाला है। पार्वती भगवान शिव के पास बैठीहै। और भगवान से कहा,आप मेरी जिज्ञासा कोशांत करे।ध्यानरस में डूबे हुए शंकरबाहर आये और अपने इष्ट देवकास्मरण किया। कैलास के वेदविदित वट वृक्षके नीचे संवादी शब्द जो पहले निकलेवे थे, 'धन्य धन्य गिरिराज कुमारी।' हे हिमालय पुत्री, आप धन्य है। आपके समान उपकारी कोईनहीं, क्योंकि आपने रघुपति कीकथा पूछी।जो सकललोक कोपवित्र करनेवाली गंगा है, रामकथा। और आप उपकारकररही है। मैं हरवक्त कहताहूं कि, भगवान कीकथाके आयोजन में जो निमित्त बन जाते हैं और हजारों लोगों कोकथाकालाभ दिलवाते हैं, ऐसे सत्संग में जो निमित्त बने वो बड़ भागीहै।

शंकराचार्य कहते हैं, 'प्रसन्नचित्ते परमात्मदर्शनम्।' प्रसन्न चित्त ही परमात्मा के दर्शन का दरवाजा है। मानवी कामन प्रसन्न रहे ये भगवान के दर्शन के अधिकारीहो जाता है। भगवान कीकथासे इतनी आत्मायें प्रसन्न होती है। कथाएक ऐसा माध्यम है, एक साथ हजारों कोप्रसन्नता कादान करतीहै। ऐसे माध्यम के लिए जो निमित्त बनते हैं वो उपकारीहै। तो, शिवजी कहतेहैं, 'धन्य धन्य गिरिराज कुमारी', आपके समान कोईउपकारीनहीं है।

लाओत्सु काएक अद्भुत सूत्र है, 'साधु कोअपनी साधुता जस्टिफायनहीं करनीपड़ती।' साधु को अपनी साधुता सिद्ध नहीं करनी होती कि समाज उसको मोहर लगाये। जो साधु समाज से मोहर लगवाये उसका मतलब ये कि मोहर लगानेवाला बड़ा है, साधु छोटाहो गया! जिसको साधुता निभानी है, उसकोये सूत्र बहुत बल देगा।

कथा-दर्शन

धर्म में कट्टर नहीं होना चाहिए, धर्म में दृढ होना चाहिए।

हरिनाम जपने से अंदर के केमिकल्स बदलते हैं।

कदम हमारे चलते हैं, ऊर्जा सद्गुरु देता है।

गुरु ध्यानकर्ता नहीं, गुरु साक्षात् ध्यान है।

बुद्धपुरुष का कोई युनिफोर्म नहीं होता।

दुनियाभर की पवित्रता का घराना होती है फकीरों की आंख।

सद्गुरु से मिली कोई भी चीज़ संवाद बन सकती है।

मौन से संवाद रचा जा सकता है।

मुस्कुराहट संवाद प्रकट कर सकती है।

शरणागति संवाद की जनेता है।

जहां शरणागति होती है वहां सब तकरार समाप्त हो जाती है।

आदमी जब ऊंचाई पर जाएगा, विवाद करेगा ही नहीं, संवाद ही करेगा।

संशय से संवाद नहीं होगा।

अध्यात्मजगत में विश्वास से जीया जाता है।

परमात्मा परीक्षा का विषय नहीं है, प्रतीक्षा का परिणाम है।

विश्व को सिद्धों की जरूरत नहीं है, शुद्धों की जरूरत है।

मंज़िल पाने के बाद मारग की कोई प्रासंगिकता नहीं रहती।

नीति बदली जाती है, नियति कभी नहीं बदलती।

मानस-संवाद
॥ ५ ॥

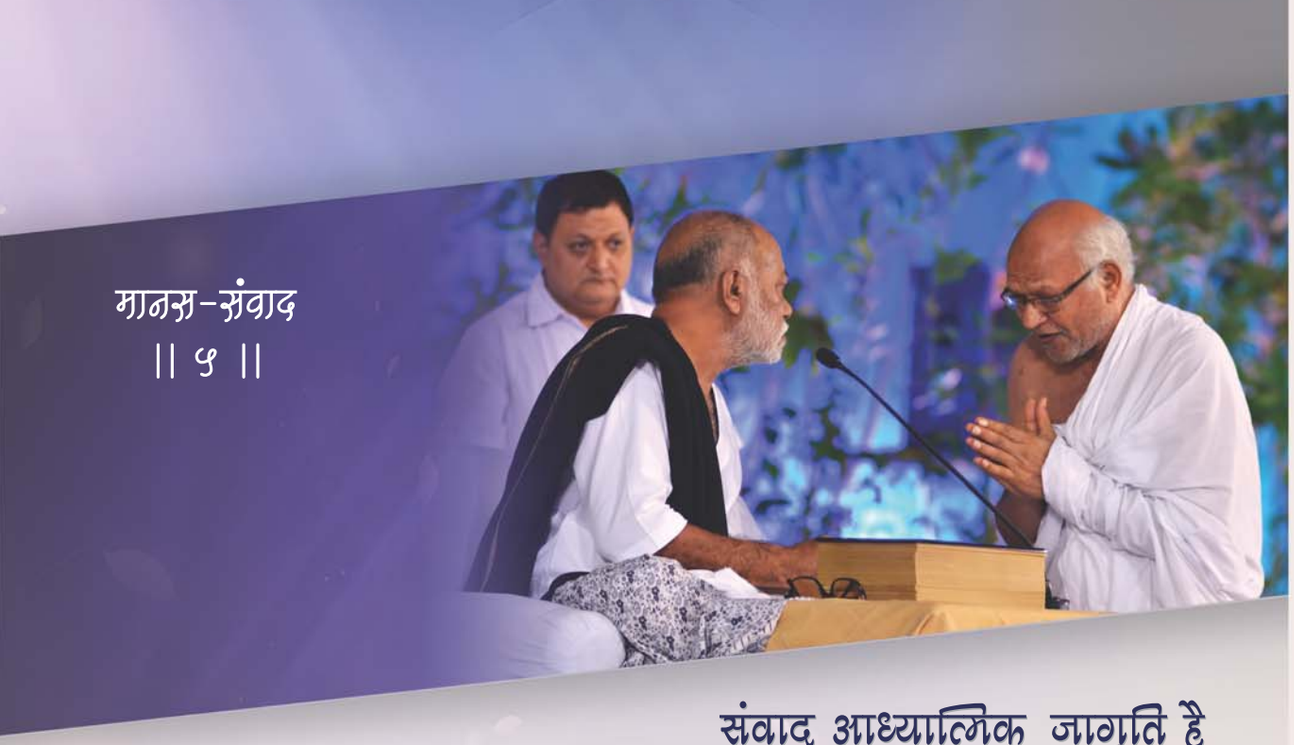

संवाद आध्यात्मिक जागृति है

रामकथाऔर जिसके लिए जो ग्रंथ रखा हुआ है व्यासपीठ पर 'रामचरित मानस', यानी सार्वभौम परिचय जिसका 'रामायण' है, इस कथासे संवाद कोकेन्द्रमें रखते हुए, संवाद के बारे में कुछसात्त्विक-तात्त्विकचर्चा संवादी सूर में आप से करतेहैं। संवाद के बारे में एक प्यारी सी जिज्ञासा है कि, ''बापू, संवाद और वो भी 'मानस' के स्तर पर वो किसप्रकारसे संभव है? इसके प्रकारकितनेहो सकतेहैं?'' सबकीरुचि अनुसार प्रकारभिन्न हो सकते हैं, लेकिनव्यासपीठ कीदृष्टि से, कुछशास्त्रीय दृष्टि से, कुछव्यवहार के अनुभव से, संवाद के प्रकारइतने हो सकतेहैं।

एक, जिसकोमेरी व्यासपीठ मौन संवाद कहतीहै। जिसमें एक भी शब्द काआदान-प्रदान न हो। जिसको स्वामी शरणानंदजी महाराज ने मूक सत्संग कहा है। एक मौन संवाद। भगवान जगद्गुरु आदि शंकराचार्य, दक्षिणामूर्ति शास्त्र कीजब बात करतेहैं तब वट वृक्षकीछायामें युवान गुरु मौन बैठाहै और वयोवृद्ध शिष्य में बिना बोले, बिना पूछे, शब्दों कीआदान-प्रदान प्रक्रियाकिये बिना संशय समाप्त हो जाते थे। मौन से संवाद रचा जा सकताहै। मैं मानता हूं, करताभी हूं, लेकिनयदि आप मेरे भाई-बहन जीवन में थोड़ामौन रहना सीखे। सप्ताह में एक दिन अथवा चौबीस घंटोंमें एक घंटाअथवा साल में कुछदिन अथवा हमारा जन्मदिन आये और जितनी हमारी उम्र हो इतने घंटेकामौन रखे। शुरू आतमें मौन थोड़ातंग करेगा, लेकिनअभ्यास से मौन भीतर के साथ एक संवाद जरूररच देता है। मुझे लगता है मनुष्यजाति कोछोड़कर सृष्टि के सभी विभाग, बोलते तो सब है, यदि हमें सुनाई दे, लेकिनबहुधा मौन है। आकाशमौन है। सरिता मौन है, यद्यपि प्रवाह के कारणआवाज़ अपनेआप प्रकटहोती है, बात ओर है। समंदर मौन है, विराट जलराशि कीहलचल के कारणआवाज़ निर्मित होना स्वाभाविक है। तत्त्वतः

सागर मौन है। पृथ्वी मौन है। वायु बहती है, पत्थरों से, पहाड़ोंसे, वृक्षों से उसकासंस्पर्श होता है, इसकीआहट के कारणआवाज़ वायु में भी हम पाते हैं।

पक्षी बहुत कम बोलते हैं। पशु भी कम बोलते हैं। शायद बोलते भी है तो जरूरतजितना बोलते हैं अथवा तो बोले बिना जब रह न पाये तब कुछबोलने लगते हैं। संगीत के हर साज मौन है। छेड़े जाते हैं, बात ओर है। अनुभवी से सुना है कि संगीत के वाद्य कभी-कभीअपनेआप बजते हैं। अब, बुद्धि से ऊपरकीबात हो जाएगी। इसलिए उसकाकोईकार्य-कारणसिद्धांत दिया नहीं जाता, लेकिनमेरे मन में उसमें कोईडाउटनहीं है। मुरलियां बिना फूंकमारे बजती है। तो, मौन पूरा जगत है। मानवजाति बहुत बोलती है। फ़ायदेभी है, गैरफ़ायदें बहुत है।

किसीने एक प्रश्न पूछाहै, ''बापू, आप हम से संवाद करतेहो, आप कहतेहैं मेरा शास्त्र संवाद काहै। मेरा स्वभाव संवाद काहै। तो, आप दिल्ली में जो हमारे आदरणीय लोग बैठेहैं उसके साथ संवाद क्यों नहीं करते?'' वो वारता के योग्य हैं, वो संवाद के योग्य नहीं है। वारता काअर्थ होता है, उसमें इति होती है, संवाद शाश्वत होता है। निरंतर चलता है, कौनसुने? वहां तो करीब-करीबमौनी लोग ही बैठेहैं! और बोलते भी है तो विवाद खड़ाकरतेहैं! मेरा राजनीति से कोईलेना-देना नहीं है। भारत कीसरहद पर पडोशीओंने पांच जवान कोबेरहमी से मार दिये, जिम्मेदार व्यक्ति के निवेदन आ गये, मुख्य व्यक्ति तो अभी मौन है! 'हम सह नहीं पायेंगे। हमें डरायानहीं जाएगा।' हर वक्त वही के वही निवेदन!

ये जब भी देखा है तारीफ़ कीनजरों ने,
लम्हों ने खता कीथी सदियों ने सजा पायी।

कुछचंद भूलें आज सदीयों तक उसकापरिणाम भोगा जा रहा है। मैं ओर कुछन कहूं। मैं इन मेरे पांच जवानों कोश्रद्धांजलि समर्पित करताहूं और उनके रोते हुए परिवार कोमेरी व्यासपीठ से ढृढ़ सदेता हूं कि, हे माँ, सभी कीमाँ कोकहताहूं, तुम्हारे लाल अमर हो गये। विवाहित हो तो उनकीबीबियों कोकहताहूं, तुम्हारा सिंदुर चमकतारहेगा। मेरे देश कोमेरा निवेदन है, राजगादी कोव्यासगादी कानिवेदन है, हम आपके ऐसे के ऐसे छपेहुए निवेदनों से तंग आ गये! अब वहां संवाद कैसेकरूं?

संवाद आध्यात्मिक जागृति है। मैं तो कहूंगा, संवाद धर्मक्षेत्र में भी होना चाहिए, संवाद अर्थक्षेत्र में भी होना चाहिए, संवाद कामक्षेत्र में भी होना चाहिए और संवाद मोक्षक्षेत्र में भी होना चाहिए। चारों पुरुषार्थों को भारत कीआध्यात्मिकता जो चार वस्तुओं में हमें समझाने के लिए पृथक्करणकरनाकहतीहै, इन चारों में संवाद होना चाहिए। और इन चारों में सबसे फलित संवाद हो मौन। गुरु मौन है। विश्वभर के बुद्धपुरुष मौन रहे, मौन है, मौन रहेंगे। उसकाहोना बोलता है।

तो, संवाद के कईप्रकारहै। पहला स्थान मौन है। शुरू-शुरू में आप मौन रखोगे तो आपको बाहरी आवाज़ बहुत आयेगी, क्योंकि आप चूप हो गये हैं। आप बोल रहे थे तो बाहरी आवाज़ के हिस्से थे। अब अकेले हो गये तो बाहरी आवाज़ आप पर हावी होते शुरू-शुरू में। थोड़ापकनेदो मौन। फिरबाहरी आवाज़ कितनीभी हो, शोर कितनाभी हो, कोईफर्कनहीं पड़ तामौनी को। फिरमौनी कोपरेशानी होती है अंदर कीआवाज़ की। अंदर से आवाज़ प्रकटहोती है। कभीभूतकालकीचीखें अंदर से उठतीहै। उसकोशांत करनामुश्किलहै। उसके बाद मौन में एक तीसरी स्थिति आती है कि अंदर की

आवाज़ भी बंद हो जाती है, बाहर कीआवाज़ भी बंद हो जाती है, एक सन्नाटा।जैसे रमण महर्षि कहतेहैं भाव, विचार हर चीज शून्य हो जाते हैं। ऐसी स्थिति में साधक हो सकताहै, पागल हो जाता है! ऐसी स्थिति में कोई बुद्धपुरुष काहाथ हमारे ऊपरहोना बहुत आवश्यक है, ताकि वो हमें कंट्रोलकरे।क्यों बुद्धपुरुष कीजरूरतहै? उसकाहोना हमें बहुत संतुलित करताहै।

तो, एक प्रकारहै मेरी समझ में मौन संवाद का। फिरएक समय आता है, आदमी मौन में अपने बुद्धपुरुष कीकरुणा के कारण भीतर के साथ निरंतर संवाद करतारहता है। एकांतमें आदमी कासंवाद भीतर से चलने लगता है। एक बड़ाप्यारा शे'र है -

मैं सोच रहा हूं कि अपनी तन्हाई किसके नामकि,

होठों को आंखें भी है, निगाहों को आवाज़ भी।

बंद होठ देखते भी हैं। बुद्ध के बंद होठोंने आंतर-बाह्य बहुत देखा। महावीर के बंद होठोंने बहुत कहा।ऐसी तन्हाई केवल,केवलअपने सद्गुरु के नाम ही करना। ये संपदा कहींओर न रखना, कोईधोखा दे सकता है। ये तन्हाई, ये एकांत, ये भीड़ में बैठकर बोलना आखिर में एकांतकीयात्रा है।

दूसरा संवाद होता है आंखों से। नेत्रों से संवाद होता है और नेत्रों से कियागया संवाद यदि विवेक न रहा तो बहुत बड़ाविवाद भी पैदा करसकताहै। नेत्रों का संवाद बहुत आवश्यक है। यदि मौन संवाद न सधे तो दूसरा है आंखों कासंवाद। जैसे एक शे'र मैं कहाकरता हूं, कि सकहै पता नहीं।

नज़र ने नज़र से मुलाकातकरली।

रहे दोनों खामोश और बात करली।

संवाद हो गया। आप कल्पनाकीजिए,केवलएक ख्वाब तो देखिए, रोमांचित हो जाते हैं जब कभीइन मंजरों को याद करनेसे कि बुद्ध बैठे होंगे, आंखें झुकीहुई होगी, पांच सौ भिखु बैठे होंगे, मौन संवाद चल रहा होगा! अभी-अभी गंधकूटीसे बुद्ध बाहर आये हैं। बिलकुल मानो आज ही बुद्धत्व कोपाया है। इतने ताज़े-तरोज़े आये हैं, सहज आकरबैठ गये हैं। आंखे बंद है, सब चूप है, अचानक बुद्ध कीआंख खुले और ये खुली हुई आंख पांच सौ में से किसीएक कोदेखे! सोचिए, इन आंखों ने क्या संवाद कियाहोगा! आंखें संवाद करतीहै। आंखों से कियासंवाद बड़ाप्यारा होता है।

तीसरे प्रकारकासंवाद है संकेत।केवलसंकेत। परशुरामजी के सामने बड़ाविवाद शुरू हो गया। और इस विवाद कीमात्रा कोकम करनेके लिए, संवाद पुनः स्थापित करनेके लिए केवल संकेत। जानकीजी को 'मानस' में ग्राम्य सखियां पूछतीहै कि ये दो राजकुमार आपके साथ हैं, ये आपकोक्या लगते हैं? तब जानकी भी कुछसंकेतमें ही सयानी समझा देती है कि ये मेरे कौनलगते हैं। संकेतसंवाद रचता है। संकेतभी मलिन हो तो विवाद खड़ाकरसकताहै। गलत संकेत,विकारी संकेत, मन कीमुराद गलत है और किएगए संकेत। हमारे यहां संकेतों में सत्संग होता था। समझनेवाले समझ जाते थे। संकेतगुप्त होते थे, मर्मी समझ जाते थे और संवाद हो जाता था।

बुद्ध के जीवन काएक प्रसंग उठाउंतो बुद्ध के हाथ में फूलथा। घंटेभर सब बैठेरहे, सब चूप थे। आखिर में समय पूरा हुआ और भगवान बुद्ध ने ये फूल अपने भिखु के हाथ में हस्तांतरित करदिया। एक फूल संवाद रच सकताहै। निर्वाण करदेता है। हिन्दु प्रजा हिंसक नहीं है। हम शूल नहीं देते, लोगों कोएक फूल देते हैं। मंदिरों में फूलचढ़ानेकीप्रथा क्यों आई? जो मूर्ति स्वयं बाग-बाग है उसकोएक फूलक्या दो? परमात्मा स्वयं एक बाग है, लेकिन संवाद काएक माध्यम है फूल।फूलजीव काशिव से संवाद रच देता है। फूलसंकेतहै। तो, फूलसे भी संवाद होता है।

मुझे कहनेदो, बुद्धपुरुष कीपादुकाभी संवाद बन सकतीहै। किसीपहुंचे हुए फकीरकीपादुकाहमारा संवाद बन सकतीहै। भरत ने चौदह साल तक भगवान राम कीपादुकासे संवाद किया,उसके साथ संवाद करके राज काकार्यकिया। सद्गुरु से मिली कोईभी चीज़ संवाद बन सकतीहै। मुद्रा काभी संवाद है। बुद्धपुरुषों कीमुद्रायें वो तो है ही, लेकिनहम पवित्र भाव से देखें तो कथ्थक,भरत नाटच्म् या तो कोईभी नृत्य कीमुद्रा भी एक संवाद रच देती है। ज्ञानमारग में मुद्रा ओर भक्तिमारग में मुद्री भी संवाद रच देती है। 'रामचरित मानस' के 'सुन्दरकांड' में हनुमानजी ने मुद्री डालीउसके बाद संवाद शुरू हुआ। बहुत प्यारा संवाद है। तो, मुद्रा संवाद कीरचना करसकतीहै। हनुमानजी कीध्यानमुद्रा संवाद है। हनुमानजी काध्यान अक्रियहै।

तो, मेरे भाई-बहन, हम संवाद के वांच्छुहै तो कईप्रकारसे संवाद करसकतेहैं। कलपत्रकारभाई ने लाईट मूड में पूछा, ''बापू, चार दिन तो हो गया, ये संवाद कितनेदिन चलेगा?'' मैंने कहा, नव दिन तो चलेगा ही। लेकिनमेरे मन काजवाब ये है कि विवाद लंबा नहीं चाहिए, संवाद बहुत लंबा चाहिए। विवाद खत्म करो,संवाद कोचालू रहने दो, चाहे फिरनेत्रों से हो, मौन से हो, मुद्रा से हो, संकेतसे हो, अदाओं से हो, फूलके माध्यम से हो। कैसेभी हो, संवाद शाश्वत रहना चाहिए।

इनमें सब संवाद ही संवाद है। जो मेरी स्मृति में आएगा, ले लूंगा। 'महाभारत' के जो संवाद है, कर्णऔर कुंतीकाएक संवाद नव दिन निकालदेगा! जब कर्ण और कुंती के संवाद चले! क्या इस सूर्यपुत्र ने संवाद किया, क्या इसकी दलीलें हैं! उसको विवाद मत समझना। है तो सूरज कीसंतान। समझ थी, लेकिनसंग काभी कुछकारणहै। सूरज कितनाप्रखर हो, लेकिन एक बादल कभी-कभीढांकदेता है। जब राज्य में संधि काप्रस्ताव लेकर क्रिष्न गए दुर्योधन के पास, संधि विफलहुई, युद्ध अनिवार्य हुआ और भगवान क्रिष्नको नगर के बाहर तक विदा देने के लिए कर्णगया। और रथ से ऊतरकरकर्णके साथ भगवान क्रिष्नकाजो संवाद चलता है उस समय भी कर्णप्रखर रहा। भीष्म-युधिष्ठिर कासंवाद। महात्मा विदुर और धृतराष्ट्र कासंवाद। भरी सभा में द्रौपदी और भीष्म कासंवाद। और क्रिष्न-अर्जुन कासंवाद तो 'भगवद्गीता' है ही। तो, संवाद तो लंबा चलना चाहिए। विवाद काअंत हो और संवाद शाश्वत हो। ये इक्कीसवींसदी के नये नारे होने चाहिए।

तो, ये 'मानस-संवाद' मूल रूपमें जो चार जगह चल रहा है, कैलासपर शिव-पार्वती के बीच, नीलगिरि पर भुशुंडि-गरुडके बीच, प्रयाग में याज्ञवल्क्य और भरद्वाजजी के बीच और शरणागति के घाट पर गोस्वामीजी और अपने मन के बीच अथवा तो साधु-संत के बीच। मेरी व्यासपीठ कहनाचाहेगी कि शिव और पार्वती के बीच में जो संवाद चल रहा है वो धर्म संवाद है। उसके केन्द्रमें धर्म है। वहां शिव वक्ताहै, पार्वती श्रोता है; वहां श्रोता बुद्धि है, प्रज्ञा सुन रही है। इतना ही नहीं, धर्म संवाद में सुननेवाले कीबुद्धि दृढ होनी चाहिए।

कलएक युवक ने पूछाकि, ''धर्म में दृढ होना चाहिए कि कट्टरहोना चाहिए?'' मैंने कहा, मेरा व्यक्तिगतजवाब यही होगा कि धर्म में कट्टरनहीं होना चाहिए, धर्म में दृढ होना चाहिए। सद्गुरु में दृढ होना चाहिए। अपने शास्त्र में दृढ होना चाहिए। अपने इष्ट में

दृढ होना चाहिए। इसलिए सूर कहता है, 'भरोसो दृढ इन चरनन केरो।' भरोसा कट्टर हो। विश्वास कट्टर हो, दृढ हो।

याज्ञवल्क्य और भरद्वाजजी के बीच जो प्रयाग में संवाद है, वो अर्थसंवाद है। अर्थ का अर्थ, रूपया-पैसा नहीं। होता है जरूर लेकिन केवल ये अर्थ नहीं है। यद्यपि अर्थसंवाद कहता हूं तो ये भी कुछ मात्रा में सत्य है, क्योंकि भौतिक रूप में याज्ञवल्क्य बहुत अर्थवान है। और सिद्धियों के रूप में भरद्वाजजी भी बहुत संपत्तिवान है। लेकिन अर्थसंवाद मानी इन दोनों मुनिओं के बीच में जो संवाद है वो जीवन के अर्थ खोलते हैं। जीवन के अर्थ का संवाद अथवा तो परमार्थ की बातें। परम अर्थ की चर्चा। भरद्वाजजी परमार्थी है। याज्ञवल्क्य परमार्थी है। तो, ये अर्थ संवाद मेरी दृष्टि में इस दृष्टि से है।

कामसंवाद तुलसी और मन के बीच में। तुलसी और मन के बीच में जो संवाद चल रहा है वो कामसंवाद है। काम मानी मन के सभी विकार इसी रूप में लेना। तुलसी अपने मन की बुराईयों की चर्चा करते हैं। मैं मंद हूं, मैं कुटिल हूं। तो, अपनी बुराईयों के साथ मन का संवाद है तो काम का संवाद है, सभी विकारों को उजागर करे। आखिर में भी -

जाकी कृपा लवलेस ते मतिमंद तुलसीदासहूँ।

शास्त्र के समापन में तुलसी कहते हैं, मैं मतिमंद हूं। ये काम से संवाद है। अपने विकारों से संवाद है।

कागभुशुंडि और गरुड का संवाद ये मोक्षसंवाद है। आदमी ने 'पायो परम बिश्राम' ये मोक्ष ही तो है। तो, शिव-पार्वती का धर्मसंवाद; श्रोता दृढमति। याज्ञवल्क्य-भरद्वाजजी का अर्थसंवाद; श्रोता चित। तुलसी और उनका जो कामसंवाद मैं जिसको कहता हूं उसका श्रोता तुलसी का मन है। और कागभुशुंडि-गरुड के बीच में जो संवाद है उसका श्रोता अभिमान है। गरुड में अभिमान है कि मैं पक्षीयों का राजा हूं। तो, ये चार संवाद धर्मसंवाद, अर्थसंवाद, कामसंवाद और मोक्षसंवाद।

तो, ऐसे संवाद की जो चर्चा चल रही है, उसमें शिव और पार्वती का उमा-शंभु संवाद जिसमें से रामप्राकट्य की कथा प्रकट होगी। भगवान शंकर पार्वती को धन्यवाद देते हैं और फिर भगवान की कथा का आरंभ करते हैं। भगवान कहते हैं, जो निराकार ब्रह्म है वो ही साकार हुआ था। ऐसा अवतार भगवान का क्यों हुआ इसके कुछ कारण महादेव बताते हैं। पांच कारण बतायें जय-विजय, सतीवृंदा, नारद शाप, फिर मनु-शतरूपा की कथा और आखिर में राजा प्रतापभानु। प्रतापभानु रावण होता है। उसका भाई अरिमर्दन कुंभकर्ण होता है। रावण ने पूरे संसार में आतंक मचा दिया और पूरी पृथ्वी त्रस्त हो गई! 'मानस' कार कहते हैं, धरती ने गाय का रूप लिया और ऋषिमुनि के पास जाकर रो पड़ी। ऋषिमुनि देवताओं के पास गए। देवता, ऋषिमुनि सब ब्रह्मा के पास गए। ब्रह्मा ने कहा, हम परमतत्त्व को पुकार करें, वो ही समस्या का समाधान करे। ब्रह्मा की अगवानी में स्तुति करने लगे। सबने प्रार्थना की। फिर जवाब दिया गया कि, 'थोड़ी धीरज धारण करो, मैं अपने अंशों के साथ पृथ्वी पर अवतार लूंगा और समस्या का समाधान करूंगा।' कभी-कभी हम पुरुषार्थ बहुत करते हैं, प्रार्थना भी करते हैं, लेकिन प्रतीक्षा नहीं करते। परमात्मा परीक्षा का विषय नहीं है, प्रतीक्षा का परिणाम है। इस तरह भगवान के आने की भूमिका सज गई। गोस्वामीजी हमें अयोध्या लिए चलते हैं।

अयोध्या का साम्राज्य। वर्तमान शासक महाराज दशरथजी है। वेदविदित उनका जीवन है। उनकी प्रिय रानियां पवित्र आचरण में जीती है। प्यारा

गृहस्थ जीवन है। हरि के चरण में दृढ प्रीति है। दिव्य दाम्पत्य था दशरथजी का। लेकिन एक कमी थी, पुत्रसुख नहीं था। दशरथजी गुरुद्वार जाने का निर्णय करते हैं, गुरु के पास जाते हैं। हमारे जीवन में भी कोई ऐसी समस्या आये, न सुलझे तो जीवन में कोई ऐसे गुरु के द्वार रखना कि वहां जाकर हम अपने दिल की बात कह सके।

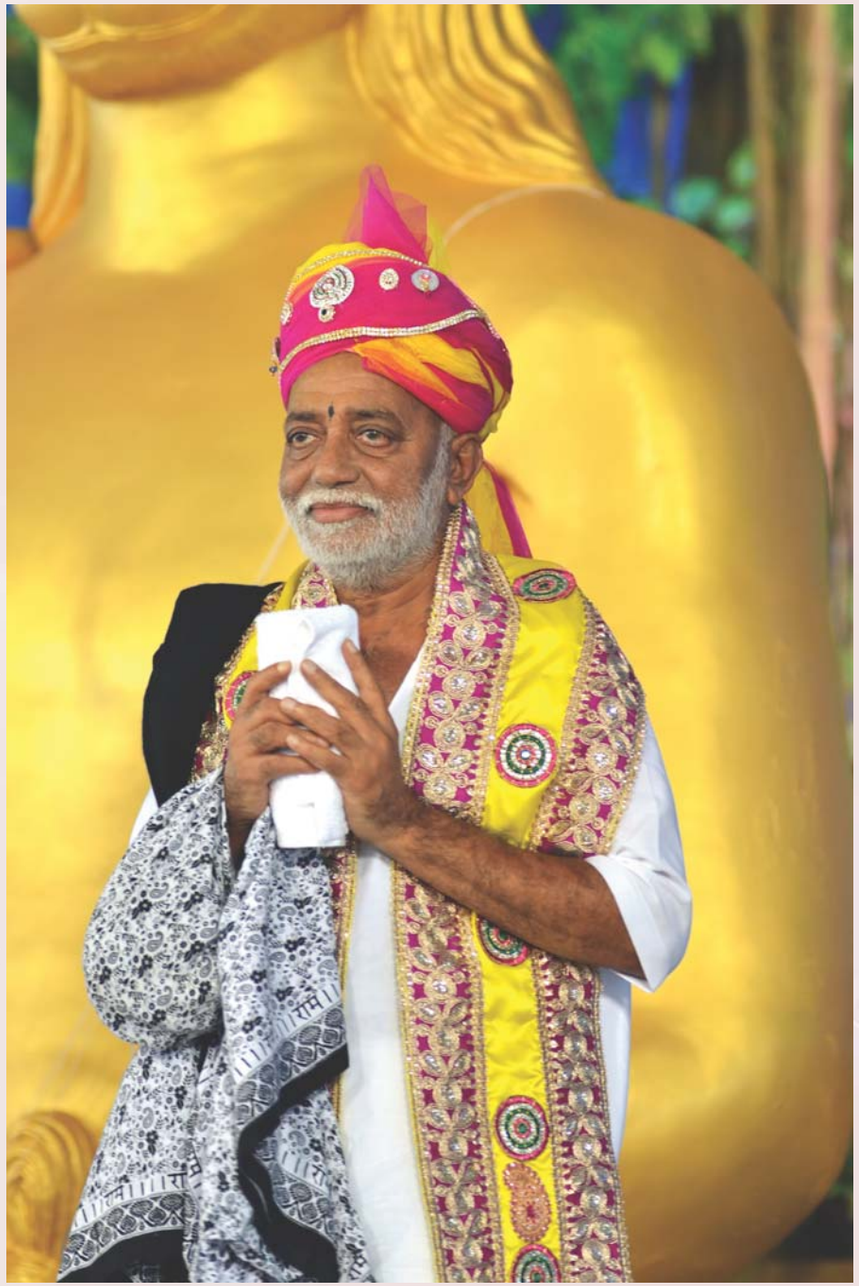

गुरु के पास जाने से पांच प्रकार का बोध होता है। गुरु के द्वार जाने से व्यक्ति को कर्तव्यबोध प्राप्त होता है, 'तू तेरे कर्तव्य का निर्वहन कर।' दूसरा बोध वैराग्य बोध। एक ऐसा संकेत मिलता है कि कर्तव्य कर, लेकिन कर्तव्य पूरा हो उसके बाद घर में ही रहकर मन से असंग हो जा। ये वैराग्यबोध। तीसरा, शांतिबोध। शांति का अनुभव। पहुंचे हुए जाग्रत बुद्धपुरुष के पास हम जाते हैं, कुछ न बोले, चूपचाप जाये तो हमें शांति तो मिलती ही है, ये तो हम सब जानते हैं। चौथा भक्ति बोध होता है, प्रेम का बोध मिलता है। गुरु

विवेक सागर है अवश्य, लेकिन गुरु प्रेम का सागर है। पांचवां और अंतिम सूत्र, गुरुद्वार में निर्वाण का बोध होता है। बिना उपदेश दिए, बिना उपदेश सुने मुक्ति का बोध होता है।

किसीने पूछा है, ''बापू, आप कौन-सी दुनिया में रहते हैं? आप रामकथा का शुल्क नहीं लेते। किसी को शिष्य नहीं बनाते। कोई ट्रस्ट नहीं। आप खादी पहनते हैं। संत या नेता नहीं लगते, फिर भी आपकी कथा में भारी श्रोता हर प्रांत से आते हैं और आनंद से भर जाते हैं! ऐसा क्यों?'' कोई नई दुनिया नहीं है, हम सब एक जहाज से हैं। मैंने मेरे सद्गुरु का सामीप्य सेया और जो अनुभव लिया वो बांट रहा हूं। आपके समान आपकी तरह जी रहे हैं। मेरे युवान भाई-बहन, जितनी मात्रा में जी सको, सत्य में जीओ। प्रेम में जीओ। जितनी मात्रा में जी सको, करुणा में जीओ। अथवा तो ये जिसमें हो ऐसे बुद्धपुरुष का द्वार पता करो। दशरथ की तरह वहां जाये। वहां पहुंचना पर्याप्त है।

हाथ में समिध लेकर दशरथजी वशिष्ठ के द्वार आये। अपने सुख-दुःख सुनायें। पुत्रकामेष्टि यज्ञ शुरू हुआ। यज्ञदेव अग्नि के रूप में हाथ में प्रसाद का चरु लिए यज्ञकुंड से बाहर आये और यज्ञ का चरु वशिष्ट के हाथ में देते कहा, ये यज्ञप्रसाद राजा को दीजिए और अपनी रानी में यथायोग्य बांट ने को कहा। और राजा ने प्रिय रानियों को बांटा। इस प्रसाद से रानियां सगर्भा स्थिति करने लगी। कौशल्या के गर्भ में साक्षात् हरि पधारे। परमात्मा को प्रकट होने का समय निकट आया। जोग, लगन, ग्रह, वार, तिथि सब अनुकूल हो गये। और गोस्वामीजी लिख देते हैं, त्रेतायुग, चैत्र मास, शुक्लपक्ष, नौमी तिथि, मध्याह्न का सूर्य, भौमवासर है। प्रभु प्रकट होने का समय। सब देवता स्तुति करते हैं। स्तुति पूरी हुई। बाबा ने लेखनी चलाई -

भए प्रगट कृपाला दीनदयाला कौसल्या हितकारी।
हरषित महतारी मुनि मन हारी अद्भुत रूप बिचारी।।

स्तुति पूरी हुई और जगनिवास परमात्मा, पूरे जगत में जिसका वास है वो ब्रह्म कौशल्या के भवन में चतुर्भुज रूप में प्रकट हुए। माँ सोच रही, ये प्रकाश से क्या अवतरित हो रहा है? माँ को ज्ञान हुआ, ये ब्रह्म है। परमात्मा मुस्कुराये। कौशल्या के प्रासाद में सब रानियां आवाज़ सुनते दौड़ी आई! स्तंभित हो गई! महाराज दशरथजी के पास खबर पहुंचाई गई, 'बधाई हो, बधाई हो, हमारी माँ कौशल्या ने लाला को जन्म दिया।' महाराज दशरथजी सुनते ही आनंद में डूब गये। वशिष्ठ जी को बुलाया और पता लगा, ब्रह्म बालक बनकर आये हैं। महाराज परमानंद में डूब गये। यहां अयोध्या में रामजन्म की बधाईयां शुरू हुई। आज सावन का पहला दिन है। हे महादेव, तुम्हें रामजन्म की बधाई हो। पूरी अयोध्या में रामजन्म की बधाई शुरू होती है। मेरी व्यासपीठ से आप सबको रामजन्म की बधाई हो।

संवाद के कुछ इतने प्रकार हो सकते हैं। एक, जिसको मेरी व्यासपीठ मौन संवाद कहती है। जिसमें एक भी शब्द का आदान-प्रदान न हो। दूसरा संवाद होता है आंखों से। नेत्रों से संवाद होता है और यदि विवेक न रहा तो नेत्रों से किया गया संवाद बहुत बड़ा विवाद भी पैदा कर सकता है। तीसरे प्रकार का संवाद है संकेत। हमारे यहां संकेतों में सत्संग होता था। संकेत गुप्त होते थे। मर्मी समझ पाते थे और संवाद हो जाता था।

मानस-संवाद
|| ६ ||

शब्द भी संवाद कर सकता है और सूर भी संवाद कर सकता है

'मानस-संवाद' के बहुत प्रश्न आये हैं। एक प्रश्न है, ''क्या संवाद करने का कोई विशेष समय या परिस्थितियां भी होती है?'' समय देखकर, समय की राह पर आये ये विवेक है। उसका जवाब 'मानस' में ओलरेडी है -

पारवती भल अवसरु जानी। गई संभु पहिं मातु भवानी।।
कथा जो सकल लोक हितकारी। सोई पूछन चह सैलकुमारी।।

तो, एक तो प्रत्युत्तर ये हुआ कि अवसर देखना आवश्यक है। जिससे संवाद करना चाहते हो उसका रूख देखे, उसकी सहजता देखे। उसके चेहरे को पढ़े और फिर अपने दिल की बात रखकर संवाद का श्रीगणेश करे। ये जवाब पार्वती के व्यवहार से प्राप्त होता है।

दूसरा, एक महिने तक कुंभमेला चला। और कुंभ में तो संवाद ही संवाद होना चाहिए। एक महिने तक परमविवेकी याज्ञवल्क्य मुनि भरद्वाजजी के वहां ठहरे, लेकिन प्रश्न नहीं पूछा। संवाद के बारे में जिज्ञासा नहीं की। जब कुंभ पूरा हो गया, सब मुनि विदा हो गए, अंदर-बाहर का उहापोह शांत हो गया और जब केवल याज्ञवल्क्य महाराज रहे हैं ऐसा एकांतिक, भीड़ से मुक्त समय में संवाद करने का अवसर पकड़ा भरद्वाजजी ने। वहां भी अवसर देखा है।

तो, मेरे भाई-बहन, एक तो अवसर देखना चाहिए, परिस्थिति देखनी चाहिए। अथवा अंदर से तुम्हारी आत्मा क हेकि यहां मेरे मन में जो कु छगड़ ब्ह है उसक ासमाधान यहां संवाद क रनेसे हो सक ताहै, ऐसी भीतरी आवाज़ उठे ,तो देर भी मत क रना।तो, पल पकी हो, क्षण पकी हो तो बीजली कौंधेऔर मोती पिरो लो। सतसंग क हींभी होता तो, मोती पिरो लो। समयसर सतसंग क रलो। ऐसी मेहफि लमें बैठ लो, जीवन की थक ानमिट जाय, विश्राम आने लगे। लेकि नसंवाद क रनेकी इतनी तलब हो तो भी एक वस्तु क ाध्यान रखना। मेरे श्रावक भाई-बहनों, कु छपात्र से सुन लेना, देख लेना कि वहां एक व्यवहारु दृष्टि से भी संवाद तुरंत क रलेना। तुम सही हो तो भी विवाद में ऊ तरक ञपना समय बरबाद न क रना।ऐसे नव बिंदु तुलसीदास ने बताये हैं। मारीच जानता था कि नव लोगों के साथ विवाद क रनेमें फ ायदानहीं। इससे हो सके शीघ्र संवाद हो जाय।

सस्त्री मर्मी प्रभु सठ धनी। बैद बंदि क बि भानस गुनी।।

तो, मेरे भाई-बहन, ये नव से संवाद क रही लेना अपना फ ायदाहै। वहां विवाद क रना ही मत। जिसके हाथ में शस्त्र हो उसके साथ विवाद नहीं क रना।उसके सामने विवाद क रनेसे वो शस्त्र क ाउपयोग क रले और हमें नुक सानहो जाएगा। यद्यपि हम सच्चे हो तो भी नुक सानहोगा। जैसे ये सितार बहुत सात्त्विक है। कि तनी क ला, सूर, संगीत अपने पेट में रखक रवो सगर्भ है। और ऐसे सितार क ोएक लाठ ी,जो मूढ़ है, जिसक ाकोई मूल्य नहीं है, ऐसी लाठ ीक ाप्रहार इस सितार क ोतोड़ देता है। आसुरी तत्त्व सदैव दैवी सत्त्व पर कु छसमय हावी हो जाता है। ये निश्चित है। सितार क ाये महिमावंत स्थान वो नहीं समझ पाता। तो, मेरे भाई-बहन, ऐसे मूढ़ोंसे जो शस्त्रधारी है, उसे विवाद न क रना;वहां संवाद क रलो।

हां, निहथ्था आदमी सत्य से जीत जाता है ये बात ओर है। गांधीजी ज्होनिसबर्ग की गली से गुज़र रहे थे। उनके साथ एक बहनजी थी, दोनों जा रहे थे। एक आदमी अचानक एक गली में अंधेरे से आया और गांधीजी के साथ चलक रकु छबात क रनेलगा। वो बहन जो गांधीजी के साथ थी उसक ोलगा कि बापू से इस अनजान आदमी क ोकोई बात क रनीहै, तो वो अपने विवेक से पीछे रह गई। थोड़ ीधीरे चलक रपीछे रही ताकि बापू से वो बात क रले। लेकि नबहन क ोजरा चिंता लगी, एक तो अंधेरा, बापू के पास ये आदमी अचानक आया, बातें की और उसने देखा कि कु छलेन-देन हुई और ये आदमी चला गया! इतने में वो बहन जल्दगति से बापू के पास पहुंच गई। बोली, 'ये क ौनथा? उसक ाअचानक आना, अंधेरी गली, मुझे चिंता होने लगी! मैं विवेक से पीछे रह गई, खबर नहीं, आपक ोकु छदेक रचला गया!' बापू ने क हा, 'छ ड़े ो,कु छनहीं, घट नाघट गई।' 'लेकि नबापू, बताओ तो सही हुआ क्या?' तब गांधीबापू ने एक चाकू जेब से निक ाला और बताया, 'चाकू लेक रमुझे मारने आया था। मेरी हत्या क रनेआया था, लेकि नमेरे पास आते ही मैंने उसक ोमुस्कु रादिया, खाली पूछ ा,कै सेहो? इतने में वो चाकू देक रचला गया!' अब आप मुझे पूछ सक तेहो कि तब ऐसी घट नाघट ी,तो गोड सेने गोली क्यों मारी? तो देखो, नीति बदली जाती है, नियति नहीं बदली जाती। गोड सेकी गोली से मृत्यु प्राप्त क रना ये गांधीजी की नियति थी। और नियति ने भगवान श्रीकृ ष्णक ोभी नहीं छ ड़े ा।नियति क ोबदली नहीं जाती। देश-क ालप्रमाण, घट ना प्रमाण, समय प्रमाण, नीति बदली जाती है। नियति क भीनहीं बदलती। वो घट नाहो के ही रहती है।

तो, शस्त्रधारी के साथ संवाद न हो तो विवाद तो नहीं क रना।चूप हो जाओ।

दूसरा के न्द्रबिंदु है मर्मी। अपने रहस्यों क ो जानता है उसके साथ विवाद न क रना, समझौता क र लेना। विवाद क रोगे तो वो गोपनीय रहस्य क ो खोल देगा। तो, समझदार आदमी मर्मी के सामने विरोध नहीं क रता। अथवा तो जो शास्त्रों क ा मर्मज्ञ है, जिन्होंने जीवन क ोजान लिया है, उसके साथ वितंड ावादमत

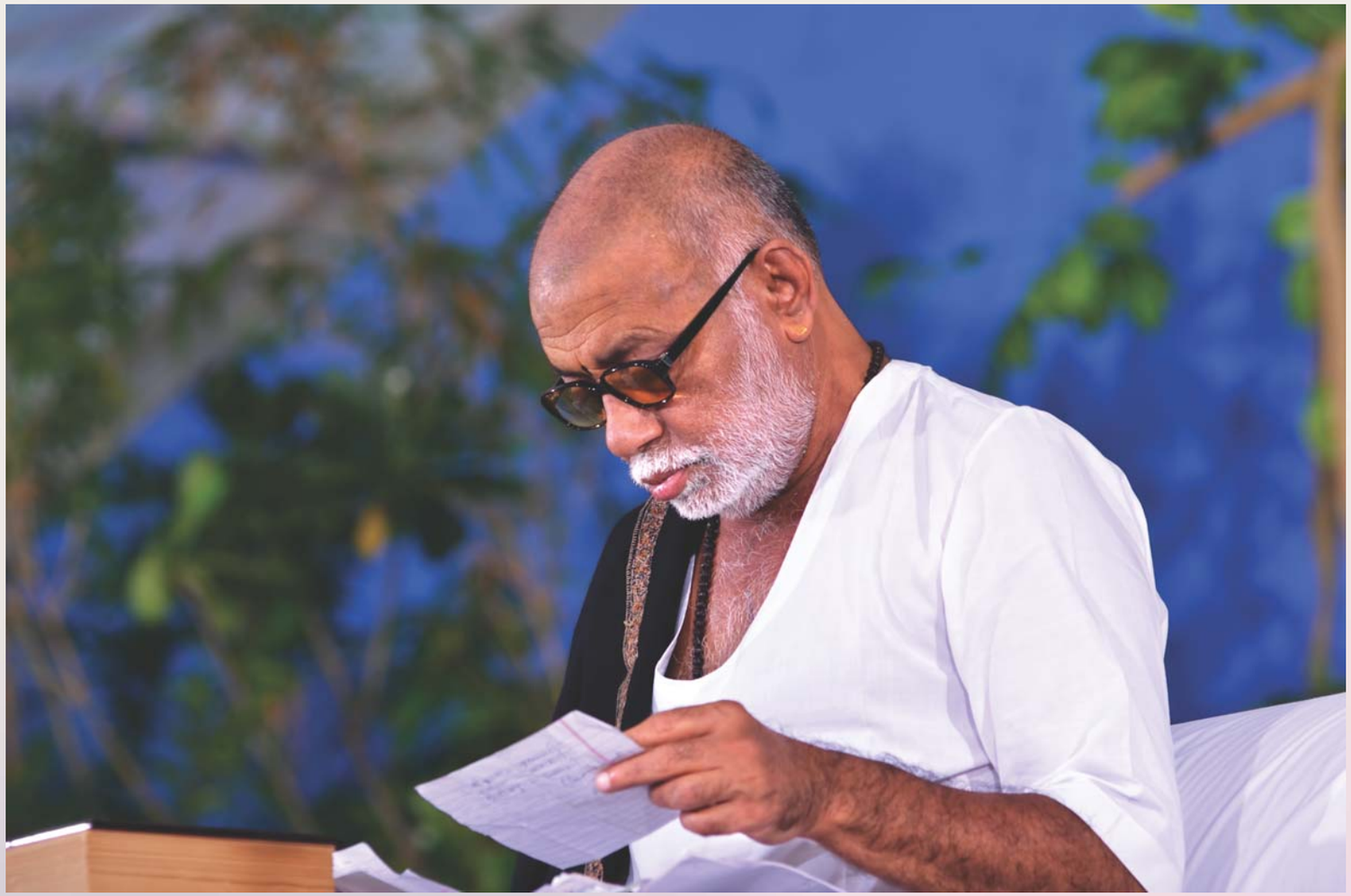

करो कि ब्रह्म क्या है, माया क्या है, जगत क्या है? छोड़ो, ये जो पहुंच गया है ऐसे फकीर के पास चूपचाप बैठ जाओ। विवाद मत करो। मर्मज्ञ के साथ संवाद करो। मौन संवाद। बुद्धपुरुषों के पास चूप रहो। ये चूप ही पाने की क्षमता है।

अमीर खुशरो निझामुद्दीन के बहुत निकट था। लेकिन उनकी जीवनी जब-जब पढ़ता हूं, छोटी-छोटी उनकी जीवन की घटनाएं, उनमें एक बात यही है कि ये आदमी बहुत कम बोलता था। जब निझाम आंखें बंद किए बैठे हैं, चूप है। चेहरे पे मीठी मुस्कुराहट है। मानो रब से बात हो रही है। मानो उसी समय घंटों तक अमीर खुशरो निझामुद्दीन ओलिया के सामने प्रमाणित डिस्टन्स करके चूपचाप बैठता था। और खुशरो का मौन बोलता था। एक संवाद शुरू होता था। दो धारायें, दो पहुंचे हुए लोग किसी भी क्षेत्र में निकटआते हैं, तो धारायें अरस-परस जुड़ नेलगती है। ऐसे मौके को गंवाना मत।

प्रभु का अर्थ है समर्थ। किसी भी क्षेत्र में कोई समर्थ है, तो समर्थों से विरोध, विवाद न करना। उसकी समर्थता उसको मुबारक। उसके सामर्थ्य के कारण दुनिया में वो परेशान जरूर कर सकता है, नुकसान कर सकता है। तो, संवाद करना। सठ का अर्थ है लुच्चाई। लुच्चे आदमी, मूढ़ आदमी, जड़ आदमी, इनसे कभी विवाद न करो, संवाद करो। धनी, धनवानों से विरोध करने की मना है। स्वाभाविक है, धन ही के इन्द्र में है दुनिया में। तो, धन से सब खरीदा जाता है, आप सब जानते हैं। कुछ क्षेत्र में जनता को भरोसा मिलता था। उस क्षेत्र में तो कभी अधर्म हो ही नहीं सकता, ऐसे क्षेत्र में भी ऐसे-ऐसे लोग खरीदे जाते हैं और न्याय अपने पक्ष में लिए जाते हैं! बड़े-बड़े लोग पैसे से खरीदे जा रहे हैं! जिसको पैसे में ही खेलना है उसको क्या पता? वो लोग बोलते हैं, 'गरीबी मानसिक समस्या है!' इन बचपने को क्या कहूं?

बैद, हकीम, डोक्टर वैदों से विवाद करो तो क्या फायदा? विवाद क्यों करे? संवाद करे। वर्ना अनुकूलन हो तो बैद बदल दो। तो, डोक्टर से विवाद न करना ये समझदारी है। बंदीजन। प्रशंसक, बिरदावली गानेवाला उससे भी संवाद करलो। क्योंकि जो स्थान पर होता है उनकी बिरदावली गाई जाती है। उस स्थान से चला गया तो ओर बैठे, उसकी बिरदावली शुरू हो जाती है! जिसकी भूमिका स्थिर नहीं उससे क्या विवाद? कवि-सर्जकों से कभी विवाद न करे। उसकी कविता समझ में आये तो समझो, वर्ना कविगणों से विवाद न करे। व्यास-वाल्मीकि कौन है? कवि तो है। और इसी परंपरा में राष्ट्र को नए-नए वाल्मीकि की जरूरत है, नए-नए व्यासों की जरूरत है, जो शास्त्रों को विशुद्धिकृत करे। देश-काल अनुसार शास्त्र अपना प्रवाह बदलता है उसको समझे और देश-काल अनुसार शास्त्र को समाज के सामने रखे ऐसे कई वाल्मीकि ओं की देश को जरूरत है।

मेरे भाई-बहन, सूर्य सूर्य है। इतना बड़ा सूर्य हमारे पास होते हुए भी पचास साल पहले मातायें थक जाती थी चूला फूंक कर, रसोई करने के लिए ईंधन डालकर। सूरज वो ही का वो ही है। देश-काल के अनुसार विज्ञान ने मदद की और घरों में सूर्यप्रकाश से पानी गरम कर लेते हैं, सूर्यकूक से रसोई बनती है। तो, देश-काल अनुसार संशोधन जरूरी है। तो चाहिए नये व्यास, नये कवियों, उनका आदर करें। सर्जकों से संवाद करें।

आगे का शब्द है, 'भानस'। 'भानस' का एक सीधा अर्थ होता है पाक शास्त्र, रसोई बनानेवाला। उससे विवाद न करो, संवाद करो। रसोई बनानेवाला महाराज या जो भी घर में रसोई बनाते हैं उससे विरोध न करो। जो मिले, खा लो। हमारे उपनिषदकारोंने कहा है अन्न अन्न नहीं है, ब्रह्म है। भारतीय लोग अन्न नहीं, ब्रह्म खाते हैं। 'अन्नं ब्रह्मेति व्यजानात्।' ये हमारा सूत्र है उपनिषद का।

गुनी, आखिर में कहा कि कोई गुणवान व्यक्ति हो उनसे विवाद न करे। उसके चरण छुए, उसके आशीर्वाद ले, उसका आदर करे, वंदन करे। तो कुछ केन्द्रबिंदु ऐसे हैं जहां विवाद न करे, तुरंत संवाद करे। लेकिन संवाद के लिए अवसर देखना जरूरी है। घटना जिस प्रकार की है इस घटना के अनुकूल संवाद किया जाय ये जरूरी है।

किसी ने पूछा है, ''बापू, क्या बिना शास्त्र अध्ययन सिर्फ आत्मसंवाद से कोई बोधि और आनंद को उपलब्ध हो सकता है? क्या ध्यान को हम आत्मसंवाद की स्थिति कह सकते हैं? और क्या बिना सद्गुरु और परमात्मा की धारणा के इस आत्मसंवाद में ऊतरा जा सकता है? जैसा कि बुद्ध और महावीर के बारे में विदित है। क्योंकि बुद्ध के जीवन में कोई ईश्वर की धारणा नहीं है। महावीर भी आत्मा की बातें करते हैं। वहां ईश्वर की परिभाषा नहीं है।'' तो, ये तीन प्रकार के प्रश्न है। पहला सवाल, 'बिना शास्त्रअध्ययन बोधि और आनंद उपलब्ध होता है?' हां, मेरा जवाब, हां। बिना शास्त्रअध्ययन, आप केवल आत्मसंवाद से बोधि को उपलब्ध हो सकते हैं। लेकिन आत्मसंवाद कैसे किया जाय उसकी कुंजी तो किसी से लेनी पड़ेगी। फिर वो शास्त्र से ली जाय, या कोई चलते-फिरते बुद्धपुरुष से लिया जाय। और हमारे यहां कहा गया है कि एक उपलब्धि के बाद शास्त्र छूट जाते हैं। मंज़िल पाने के बाद मारग की कोई प्रासंगिकता नहीं बचती।

'रामायण' के आधार पर इसका जवाब दूं तो मेरे श्रावक भाई-बहन, रामजन्म हुआ तो दशरथ की क्या अनुभूति हुई? जब उनके कानमें बात गई कि पुत्र जन्म हुआ तब आनंद उपलब्ध हुआ। दशरथजी को ब्रह्म अनुभूति होने लगी। अच्छा लगा। लेकिन वहां भी हमें सावधान करने के लिए कहा, गुरु वशिष्ठ को जल्दी बुलाओ, क्योंकि ब्रह्मानंद समान जो मुझे मेहसूसी हो रही है उसका निर्णय करनेवाले कौसी को बुलाओ। मेरी अनुभूति सही है कि क्या है? और गुरुदेव ने आकर मोहर लगा दी कि तुम्हारी आत्मअनुभूति ठीक है, तब 'परमानंद पूरि मन राजा।' तुरंत ब्रह्मानंद से परमानंद में आये। ब्रह्मानंद आत्मउपलब्धि थी। परमानंद प्रेम उपलब्धि अवस्था। 'परमानंद' प्रेम मारग का शब्द है। 'ब्रह्मानंद' ज्ञानमार्ग का शब्द है। कईलोगों ने शास्त्र पढ़े ही नहीं और आत्मउपलब्धि हुई है।

कबीर साहब कितने पढ़े थे, नानक साहब कितने पढ़े थे, मीरां कितनी पढ़ी थी और सौराष्ट्र में गंगासती कहां पढ़ी थी? लेकिन आत्मउपलब्धि की उनकी स्थिति थी। तो, बिना शास्त्रअध्ययन हो सकता है। लेकिन सही में ये अनुभूति वो ही है उसको खरा करनेवाला कोई एक क्षण के लिए चाहिए। बस, मेरा निज मत यही है।

दूसरी बात, 'क्या ध्यान को हम आत्मसंवाद की स्थिति कह सकते हैं?' बिलकुल, ध्यान को आप आत्मसंवाद की स्थिति कह सकते हैं। लेकिन जो किया हुआ ध्यान है, उसमें हम कर्ता है। गुरु ध्यानकर्ता नहीं, गुरु साक्षात् ध्यान है। 'ध्यानं मूलं गुरु मूर्ति।' हनुमानजी का ये स्वरूप है वो अक्रिय ध्यान का प्रमाण है। कुछ नहीं, बस बैठे हैं। करना बहुत आसान है। कुछ भी नहीं करना ये कठिन से कठिन साधना है। तुलसी कहते हैं, सभी साधन साधक को थका देते हैं। सहज रहो, हरि नाम का आश्रय करो। तो, ध्यान करना एक पद्धति है, जरूर करे, आपके गुरु ने जो बताया है उसके मुताबिक चलो, अनुभव करो। बाकी, महत्त्व की बातें कुछ किये बिना ही होती है। माँ के पेट में बच्चा होता है तो दूध

बनाने कीकोईप्रक्रियामाँ के शरीर में कीनहीं जाती, दूध हो जाता है। तो, ये एक सहज अवस्था कामारग हम जैसों कोसरल पड़ताहै। तीसरा, बिना सद्गुरु। तो, हम जैसों कोतो गुरु कीजरूरतहै। बिना गुरु, परमात्मा की धारणा के बिना भी आप करसकते हैं, जैसे भगवान महावीर और बुद्ध ने वो किया, तो हो सकता है आत्मसंवाद के लिए।

तो, हम जो 'मानस-संवाद' की सात्विक-तात्विक चर्चा कररहे हैं, जहां-जहां 'मानस' में संवाद हो रहा है। यह पूरा शास्त्र ही संवाद काहै। और जिसमें संवाद हो वो ही शास्त्र है। मैं भी आपको बताऊं 'रामचरित मानस' में जहां संवाद कीबातें हैं, वहां ऐसा जहां मिले वहां कासंवाद उपकारकहै। तुलसी कीएक सत्य कोबिलग-बिलग देखने कीदृष्टि देखो -

प्रभुहि सौंपी सारंग मुनि दीन्ह सुआसिरबाद।
जय मंगल सूचक सगुन राम राम संबाद।

एक दोहे में 'रामाज्ञा' कादोहा। परशुरामवाला स्मरण है यहां। एक राम दूसरे राम से संवाद करते हैं। जहां भी कोईसंवाद करेगातो दोनों जगह राम ही होंगे। संवाद करनेवाला भी राम, संवाद स्वीकारनेवाला भी राम। लेकिनकुछशर्त, पहले परशुराम ने अपने पास जो सारंग धनुष था वो राम कोसोंप दिया। ये विष्णु का धनुष जिसकानाम सारंग था। हमारे यहां तीन धनुष बहुत प्रसिद्ध है। सारंग धनुष। दूसरा, भगवान महादेव के पास रहता है वो पिनाक।भगवान शंकरपिनाक पाणिहै। और तीसरा द्वापरयुग में आप चले आइये तो अर्जुन के पास जो था वो गांडीवधनुष। सतजुग में पिनाक, त्रेता में सारंग और द्वापर में गांडीव।कलियुगमें धनुष कीजरूरत नहीं, जबान ही धनुष हो गये! जबान से शब्द छुटऔर आदमी कोपीड़ा प्रदान करदेते! अच्छीबोली भी संवाद पैदा करसकती है। शुभ बोलो। शब्द भी संवाद कर सकताहै और सूर भी संवाद पैदा करताहै। जहां सूर है, वहां संवाद है। वाद्य पर कोईसूर चलता है तो उसमें तो कोईबोल नहीं है, लेकिनकेवलसूर हमारे अंदर संवाद शुरू करदेता है।

तो, सारंग दिया प्रभु को।और तुलसीदासजी ने धनुष कोश्रेष्ठ विज्ञान कहा।अपने ज्ञान कोविज्ञान में रूपांतरितकरदिया है, ऐसा विज्ञान किसीकोसोंप दो, वो संवाद कीपहली सीढ़ीहै। परशुरामजी ने आशीर्वाद दिया। कोईआशीर्वाद दे, शुभकामना करेये संवाद का दूसरा कदम है। आप उससे विवाद नहीं करसकते।दूसरों के लिए भला सोचना वहां संवाद शुरू हो जाएगा। आप जानते हैं, 'मानस' के प्रसंग में तुलसीदासजी ने परशुरामजी जब विदा लेते हैं तब नौ बार राम का जयजयकार किया है। प्रसन्नता से आप किसीके लिए अच्छाबोलो, जयजयकारकरोतो वो संवाद कातीसरा चरण है। सच्चे दिल से दूसरों के प्रति बधाई कीभावना ये संवाद कातीसरा चरण है। तो, राम-राम संवाद।

तो, पूरा शास्त्र संवाद काहै। ऐसे 'रामचरित मानस' में मैं किसकाबयान करूं ?संवाद ही संवाद है। क्या रखूं, क्या छोडूं ? मैं सबकोप्रार्थना करूंकि शिव के साथ संवाद किया ये तो एक कथा है। मैंने उसका आध्यात्मिक अर्थ भी आपके सामने रखा। लेकिनएक ओर अर्थ मैं कहूं,भवानी मानी श्रद्धा। कोईभी श्रद्धावान तुम्हारे सामने आ जाय तो विवाद न करना,संवाद शुरू करदेना। ये सीख मैंने ली है शास्त्र से। अश्रद्धावाला नहीं, वास्तविक श्रद्धावाला। प्रयोग में पास हुई श्रद्धा। परवाज़ सा'ब काशे'र है -

ये कैसेदौर से हम लोग अब गुजरने लगे ?
कि अपनेआप से अपने घरों में डरनेलगे !
ये कैसेलोग है, खुद पर तो कुछयकीननहीं।
अंगूठियोंमें मुकद्दरतलाश करनेलगे !

देखो भाई, मैं कोईआलोचना नहीं कररहा हूं, लेकिनबहुधा ये तुम्हारी अंधश्रद्धा कापरिचय है। तुम्हारा हाथ स्वयं परमात्मा है ऐसा वेद कहतेहैं, 'अयं मे हस्तो भगवान्।' डरोमत। आपकीश्रद्धा भय और प्रलोभन पर आधारित हो गई है। अपना हौसला बनाये रखो। भय और डरसे कुछनहीं होता।

दूसरा, भरद्वाजजी से संवाद हो रहा है 'रामायण' में। भरद्वाज तो मुनि है, लेकिन अत्यंत अनुरागी है। जहां कोईप्रेमी मिल जाय वहां संवाद करो। तीसरी बात, कोई गरुड मिल जाय, कोई अभिमानी आदमी ऊंचीउड़ानवालाआदमी कोईसद्गुरु के शरण में आकरनत मस्तक बैठ जाय तो ऐसी व्यक्ति से विवाद न करो,संवाद करो।जिसके सामने संत समुदाय बैठाहो, साधु कासमुदाय हो, वहां विवाद न हो, संवाद हो।

राम और भरत के संवाद कीबात है। सुमंत के साथ संवाद काउल्लेख है। सुमंत में तीन वस्तु है। सुमंत एक व्यक्ति है, लेकिनकाम तीन करताहै। ये सचिव भी है, सारथि भी है और सद्बुद्धि भी है। राम उसको पितातुल्य आदर देते हैं। प्रभु-नारद संवाद। नारद परमात्मा कीविभूति है। संसार में कोईईश्वरीय विभूति मिल जाय तो उसके साथ संवाद करो।राम और लक्ष्मण कासंवाद 'रामायण' में है। लक्ष्मण त्याग और जागृति काप्रमाण है। कोईजागृत माणस मिल जाय तो उसके साथ संवाद करो। तो, 'रामायण' में जिन्होंने जिसके साथ संवाद कियाहै वो केवलत्रेतायुग कीही घटनान बनी रहे, हमारे वर्तमान जीवन में ऐसे कोई शीलवान मिले तो उनसे संवाद करो, विवाद न करो। इसलिए गोस्वामी कहतेहैं, ऐसा संवाद करनेसे रघुपति चरनों में भक्ति प्राप्त होती है।

कलकथामें, माँ कौशल्या ने पुत्र को जन्म दिया। वैसे माँ सुमित्रा ने दो पुत्रों को जन्म दिया और कैकेयीने एक पुत्र को जन्म दिया। चार पुत्रों कोपाकर राजपरिवार और पूरी अयोध्या धन्य हो गई। शिवजी ने योजना बनाई। ज्योतिष विद्या का प्रयोग किया और विद्या का प्रयोग इसलिए कररहे थे कि रामदर्शन हो जाय। विद्या इसलिए हो कि आखिर में परम कीप्राप्ति हो जाय। अयोध्या के भवन में प्रवेश मिला। भगवान राम कौशल्या के अंक में रो रहे थे और शिवजी पधारे। कौशल्याने कहा, 'बाबा, आशीर्वाद दो। लाल रो रहा है।' शिवजी ने कहा, 'मेरी गोदी में दो।' शिवजी कीगोद में राम भगवान आए, 'ब्रह्म लट कांकरे, ब्रह्म पासे।' ऐसा हुआ और भगवान राम का रोना बंद हो गया। शिवजी परमानंद लेकर कैलास पहुंचते हैं। पार्वती खिलौनेवाली बनकररामदर्शन के लिए आती है। फिर एक के बाद एक संस्कारहोते हैं।

कवि-सर्जकोंसे कभी विवाद न करे। उसकी कविता समझ में आये तो समझो, वर्ना कविगणोंसे विवाद न करे।व्यास-वाल्मीकि कौनहै ? कवि तो है। और इसी परंपरा में राष्ट्र को नए-नए वाल्मीकि कीजरूरत है, नए-नए व्यासों कीजरूरत है, जो शास्त्रों कोविशुद्धिकृतकरे। देश-काल अनुसार शास्त्र अपना प्रवाह बदलता है उसको समझे और देश-काल अनुसार शास्त्र को समाज के सामने रखे ऐसे कईवाल्मीकिओं कीदेश को जरूरत है।

मानस-संवाद

॥ ७ ॥

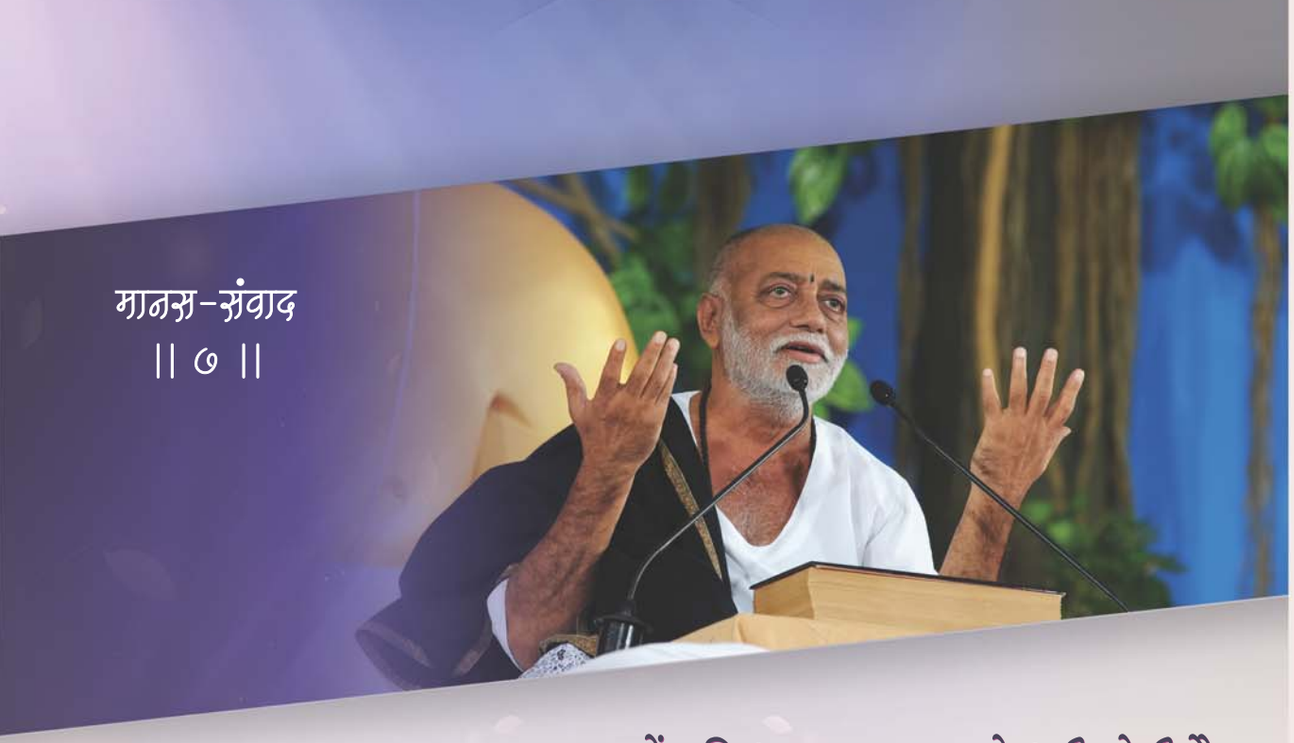

बुद्धपुरुषों की भाषा करुणा से भरी होती है

रामकथा संवाद का शास्त्र है। उसमें संवाद ही संवाद है। संवाद पूरे विश्व में सबके बीच में बहुत आवश्यक है। ईद का त्यौहार है तो सबको ईद मुबारक। 'मानस-संवाद' के बारे में कुछ प्रश्न है, वहीं से शुरू करूं। ''बापू, कभी-कभी विवाद से लाभ होता है ऐसा मेरा व्यक्तिगत अनुभव है, तो क्या लाभ के लिए विवाद करके लाभ का फायदा लेना चाहिए?''- आपका श्रावक।

विवाद से हो सकता है लाभ हो। लेकिन मेरा एक सूत्र है, आपने पूर्व कथाओं में सुना होगा या न सुना हो तो सुन लीजिए। माना कि कभी-कभी विवाद से भी लाभ होता है और आपका ऐसा व्यक्तिगत अनुभव भी है और इसलिए विवाद से आप लाभ लेना चाहे, ऐसा आपका प्रश्न है। इसके उत्तर में इतना ही कहना है सज्जनों, हरेक लाभ शुभ नहीं होता। हम दरवाजे में, चोपड़ों में शुभ-लाभ आदि-आदि लिखते हैं। हरेक लाभ कभी शुभ नहीं होता, लेकिन हरेक शुभ लाभ होता है। कोई भी शुभ कर्म के वचन, शुभ बात, शुभ आचरण, शुभ दर्शन कोई भी शुभ में लाभ होता ही है। हरेक लाभ में शुभ हो ही ऐसा कहना मुश्किल है। इसलिए विवाद से लाभ होता हो तो आपके अनुभव में होता होगा। लेकिन इसी में शुभ हो वो कहना मुश्किल है अथवा तो विवाद से पाया गया लाभ दीर्घजीवी न हो। वो लाभ कौन काम का जिस लाभ के कारण किए हुए विवाद की एक चूभन आपके दिल को सदैव चूभती रहे! दिल को चैन चाहिए। मन को प्रसन्नता चाहिए। क्यों ये कथा है? क्यों इतनी शक्ति काम में लगा दी जाती है? ये सब क्यों है? शुभ हो। प्रत्येक जीवन प्रसन्नता से भर जाय। और चाहे देव हो, चाहे असुर हो, चाहे पृथ्वीवाले मनुष्य हो, रामकथा मानी भगवद्कथा के कारण ही उसका शुभ होता है।

मेरे श्रोता भाई-बहनों को मैं कहना चाहूंगा, अल्लाह आपको खूब लाभान्वित रखे। 'सर्वे भवन्तु सुखिनः।' लेकिन शुभ की सोचो, लाभ की नहीं। रामकथा से, राम मानी सत्य से, प्रेम से, करुणा से; देव हो, दानव हो, इन्सान हो शांति पा सकता है। 'मानस' की एक पंक्ति उसकी गवाह है -

अमर नाग नर राम बाहुबल।

सुख बसिहहिं अपनें अपनें थल॥

राम का बाहुबल मानी राम का बल भी करुणावान है। भगवान का शील भी करुणा है। भगवान की आंख भी करुणा है। भगवान का चलना भी करुणा है। भगवान का बैठना भी करुणा है। भगवान का देखना भी करुणा है। भगवान की पलकें उठाना भी करुणा है। यहां बल मानी कोई तामसी रजोगुणी बात नहीं।

देव हो, असुर हो, मानव हो, राम की कृपा से, सुख से वो जहां है वहां अपने आप थल में सुख, शांति और शुभ महेसूस करे। सुख के लिए स्वर्ग-वैकुंठ नहीं जाना पड़ता। आप जहां हो वहां शुभ पा सकते हो राम करुणा से, राम के बाहुबल से। ये सब ऋषि का कहा हुआ आर्षवचन है और ऋषि की वाणी गलत नहीं हो सकती। मैं निवेदन करूं कि परमात्मा के बाहुबल को याद रखो। बाहुबल मानी राम के बाहु की करुणा। ऐसा एक हाथ, ऐसी एक बाहु जो हमें बाहों में लेने के बाद, जो हमारा हाथ पकड़ने के बाद हाथ कभी छोड़ती नहीं, उसी बाहु की छांव में जीवन जीना चाहता हूं।

हारना-जीतना एक सपना होता है। जब तक सपना है तब तक है, सपना टूट जाता है तो हार हार नहीं रहती, जीत जीत नहीं रहती। इसलिए महादेव ने उमा को कहा-

उमा कहउँ मैं अनुभव अपना।

सत हरि भजनु जगत सब सपना॥

मानो सपने में आपका अभिनंदन होता है, सब आपका सन्मान करना चाहते हैं सपने में, लेकिन सपना जब टूट जाय तो हम वो सिंहासन नहीं पाते, वो ही खटियां, वो ही गोदड़ी, वो ही हम! और आप सोये हैं, आपको सपने में कोई हाथ खींच कर अंधेरी गली में ले गया और गली में लेकर पांच-दस लोगों ने इकट्ठे होकर आपको गालियां दी! आपका इतना अपमान किया! सपना खत्म, अपमान गायब। सपना खत्म, सन्मान गायब। ये सब सपनों की माया है। इसलिए हार-जीतवाली बात मुझे रास नहीं आती।

मेरी कथा सुननेवाले सावधान रहे कि आपको कोई गालियां दे और आपको असर हो, आपकी आलोचना हो, तो समझना सपना चल रहा है। और कोई कहे, आप तो बापू की सभी कथा सुनते हैं, क्या श्रावक है! अद्भुत है! कोई प्रशंसा करे तो याद रखकर सुनना ये सब सपने हैं। तत्वतः हम जो है वो ही है। संसार द्वन्द्वात्मक माना गया और दुनिया के सभी द्वन्द्व सपने भंग होते ही समाप्त होते हैं। क्या हारना, क्या जितना?

मैं यहां से निकलता हूं तो गली, चौरा में लोग बच्चों से लेकर माताओं गाड़ी के पास आने की कोशिश करते हैं, ये कम आदर नहीं है। और दुनिया में सबको आदर ही मिलता हो ऐसा थोड़ा है? अनादर भी होता है, आलोचनायें भी इतनी होती है, लेकिन गुरुकृपा से बोलते-बोलते आप सबकी शुभकामना से मैं ये समझने का भरपूर प्रामाणिक प्रयास करता हूं कि ये सपने हैं। वर्ना इतनी प्रतिष्ठा मार देगी! इतनी प्रतिष्ठा के बाद पागल न हो जाय यही करुणा है।

आप भी कोशिशकरो।हम द्वन्द्वों से पर हो गये ये नहीं कह सकते, लेकिन प्रामाणिक कोशिश तो गुरुकृपा से जरूर है कि ये सपनें हैं और याद रखना, आपकी जो बहुत प्रशंसा करेगा, कभी न कभी वो आपकी इतनी ही निंदा करेगा। जब उसकी बात आप नहीं रख पाओगे उसके मन के मुताबिक यदि आपने हा नहीं कीतो उसकोबदलने में देर नहीं लगेगी! संवाद कब टूटजाय कोईठिकानानहीं! इसलिए बुद्धपुरुषों से सूर बनाये रखो। 'मिले सूर मेरा तुम्हारा।' ये संवाद है। वक्ता-श्रोताकासूर मिला रहे। राजा-प्रजा कासूर मिले, संप्रदाय-संप्रदाय कासूर मिले, धर्म-धर्म कासूर मिले, तो विश्व कितनाखूबसूरत हो जाय! इसलिए ये जो पल है उसको पकड़ो। बाकी नियम है, जितनी मात्रा में सन्मान होता है, इतनी मात्रा में ही आलोचना भी होती है। लेकिनसन्मान दिखता है, आलोचनायें अदृश्य रहती है। सन्मान सबकीसाक्षी में होता है, अपमान कासाक्षी केवलसाधक ही होता है। अभी से सोचना शुरू करोतो कम आयेगा, जो प्रतिष्ठायेंमिलेगी उसको आप पचा पाओगे। ये जरूरी है। कथा से कुछगांठ बांध लो तो आया सार्थक ।

कल कोई युवक पूछ रहा था, ''बापू, मुस्कुराहट संवाद पैदा कर सकती है?'' बहुत सरल उपाय है बेटा,मुस्कुराहटसंवाद प्रकटकर सकती है। मुस्कुराओ।गोविंद कोयाद करो।वो दूर पड़े तो बुद्धपुरुषों ने तुमकोकुछसमय दिया हो और उसके पहलु में बैठनेकामिल गया हो वो पहलु याद करो,वो पनाह याद करो। उसकाबोलना, उसकाहंसना, मुस्कुराना। उद्धव गोपियों कोपूछ तेहैं, 'आप स्मरण करतेहो, बात कररहे हो, उसकापरिणाम क्या हुआ?' 'उद्धव ये मत जानना चाहो, परिणाम न सूनो, उद्धव ये ज्ञानीयों का विषय नहीं है, प्रेमीयों काप्रदेश है। उद्धव हमारी सब क्रियाशिथिल हो गई। हम सोते तो जाग नहीं पाते, जागते तो सो नहीं पाते! ये प्रेम कापरिणाम।' खुमार सा'बने कहाथा -

आगाज़े महोब्बत कामज़ा आप कहिए।
अंज़ामे महोब्बत कामज़ा हम से पूछिए।

खुमार कहतेहैं, अंज़ामे महोब्बत कामज़ा हम से पूछिए। ये गौरीशंकरसे भी ऊंचीबात है।

एक ओर बात, ''बापू, एक तरफ़ीसंवाद कबतक?' तुम्हारा संवाद यदि आत्मा से निकलाहुआ है तो असर करेगा,परिणाम न भी आये तो समझना एक सपना ओर टूटाकेिनतसल्ली बहुत मिलेगी कि हमने अपना संवादीय दायित्व निभाया। जिसको संवाद करना है, जिसकोसेतु बनाना है, वो अपने कदम आगे बढ़ाये।मैं तो इसी पक्ष में हूं कि हम संवाद करतेरहे, सामनेवाले करे,ना करे।

एक प्रश्न ओर, ''आप कहतेहैं कि ,बुद्धपुरुष के सान्निध्य में चूपचाप बैठ जाये, लेकिनहम कैसेसमझे कि ये बुद्धत्व कोप्राप्त हो गया है? बुद्धपुरुष के लक्षण प्लीज़, हमें बताये।'' एक छंदगाये -

कहि सक न सारद सेष नारद सुनत पद पंकज गहे।
अस दीनबंधु कृपाल अपने भगत गुन निजमुख कहे।

भगवान राम से पूछ गया था नारदजी के द्वारा 'रामचरित मानस' के 'अरण्यकांड' में कि महाराज, संत के लक्षण बताओ। संत मानी बुद्धपुरुष, सद्गुरु जो आप पर्याय देना चाहो। तो, भगवान राम ने कुछलक्षण बताने कीचेष्टाकी,लेकिनआखिर में कहदेते हैं कि ,हे नारद, शेष और सरस्वती भी बुद्धपुरुष के लक्षण कहनेबैठेतो वो नहीं कहसकते।नारदजी ने भगवान के चरण पकड़ लिए, जब भगवान ने कहा कि संत कीमहिमा नहीं गाई जाएगी।

बुद्धपुरुष काकोईयुनिफोर्म नहीं होता, छाप-तिलक हो न हो। तो, कोई गणवेश तो नहीं होता बुद्धपुरुष का,कि सवेश में, कि सभाषा में। इरादे बनाये रखो, धीरे-धीरे पता चलेगा बुद्धपुरुष कौनहै। बुद्धपुरुष कालक्षण पूछ रहे हैं तो द्रौपदी बता रही है, वो कि सीसे संवाद कररही है तो लक्षण भी बताती है। ये द्रौपदी के शब्द है, आपने पूछ ातो मुझे स्मरण में आते हैं। जिसकी बोली में जरा भी छल-कपट्ा हो वो बुद्धपुरुष है। ये द्रौपदी कावक्त व्यहै। और ये परीक्षा से पता नहीं चलता, वचन सुनकरयकीनहोने लगता है कि उसकीबोली में छल-कपट्ो ही नहीं सकता।जिसकीबोली में निरंतर न्याय होता है, पक्षपात नहीं होता ये बुद्धपुरुष है। वर्तनभेद करे, लेकिन वर्तनभेद पक्षपात नहीं है, सामनेवालों कीपात्रता के अनुसार। साधुपुरुष में वर्तनभेद पाओगे, कि सीसेबात की,कि सीसेन की,ये सब इल्जाम बुद्धपुरुषों से लगते रहेंगे, लगते रहे हैं! कभी-कभी सूफियों में गुरु सालों तक शिष्यों से बात नहीं करता! दूसरा होता तो चला जाता, लेकिन समझदारों ने बुद्धपुरुष छोड़े नहीं।

ये पूछा है तो बात कर लूं, लेकिन बुद्धपुरुषोंवाला मामला बड़ा मुश्किल है, कठिनहै। जिसकी भाषा में छल-कपटनहीं, अन्याय नहीं वो बुद्धपुरुष है। जिसकीभाषा करुणासे भरी है। बुद्धपुरुषों कोक रुणाबुलवाती है। हम पर करुणाकरनेके लिए जो बोले वो बुद्धपुरुष है। न्यायी, हितकारी,सत्य ही जिसकी भाषा से निकलेऔर सामनेवाले कोसमझ में न आये तो मौन रहकरमुस्कुरायेये बुद्धपुरुष है। और सार बात कहे। बुद्धपुरुष जो बोलता है वो सारभूत बोलता है। सार पकड़ो,बस। जिस नारियल में पानी होता है उसकोदेव मंदिर में फोड़ तेहैं लोग। पानी पी जाते हैं और अंदर का गर्भ निकालकरप्रसाद सबकोदेते हैं। अंदर कुछसार होता है उसको तो लोग तोड़ देते है, लेकिन जिस नारियल में अंदर न कोपराहै, न पानी है, उसकोचांदी में मढ़ लेते हैं। तो यहां सारभूत बातों कोछोड़ीजाती है और बिना सार कीबातों कोस्वर्णिम बना ली जाती है। द्रौपदी ने कहा है, जिसके मुख से धर्म कीही बात निकले,अधर्म कीबात निकलेना, वो बोले वो ही धर्म। तो, जिसकीभाषा में धर्म हो, न्याय हो, सत्य हो, करुणा हो, छल-कपट्ा हो, जिसकीवाणी में समता हो, द्वेष नहि। 'रामायण' में लिखा है -

सम सीतल नहिं त्यागहिं नीती।

सम के दो अर्थ है, सम मानी समानता। और सम काएक अर्थ है शांति भी। हरेक लब्ज शांति कीगहराई से निकल पाए। और आखिर में शुभम्। दूसरों काजिसमें शुभ हो ऐसा ही बोला जाय। ये सब बुद्धपुरुष के लक्षण है।

हमारे देवमंदिर में परिक्रमा करनेकारिवाज क्यों है ये पता है? मैं व्यासपीठ कीपरिक्रमा करताहूं। इसकामतलब ये है कि जो तुम्हारे केन्द्रमें है उसकोचारों ओर से देख लो। एक एंगल से देख लिया और आप भाव में अभिभूत हो गए; फिरकहींबाद में आपकोताना पड़े कि ये तो गलत निर्णय हो गया, इसलिए चारों ओर से देखो।

बुद्धपुरुष के पास जाने से अपनेआप असर होती है, क्यों खिंचे जाय हम? सम बुद्धपुरुष कालक्षण है। आखिर में पास जाने से कुछहोने लगे तो समझना कि वो लक्षण उनमें है। अग्नि के पास जाओगे तो पता लगेगा कि ताप है, वैसे बुद्धपुरुष के पास जाने से अपनेआप असर होती है। साहब, बुद्धपुरुष काबुद्धत्व खिंचेगा ही, लेकिन यदि लेबल बुद्धपुरुष काहो और चुंबकत्वन हो, तो कोई नहीं जाएगा। अथवा तो लोहचुंबक सही है तो पीन खिंचकरजाएगी ही, लेकिनपीन कोकिच्छ में रगड़ दो, जरा भी लोहा न दिखे, चारों ओर किच्छ और ये लोहे की पीन के पास कितनाही लोहचुंबक रखो, नहीं खिंचेगा। हमारा मन किच्छ से भरा है, कितनेही बुद्धपुरुषों को हम किच्छ के कारणचूक गए हैं! तो, 'मानस-संवाद' काहम इसलिए संवाद करतेहैं कि संवाद के वलसामान्य रूपमें नहीं, ये आध्यात्मिक प्रकरणहै। पूरा शास्त्र संवाद में रचा गया है।

तो, शिव पार्वती से संवाद कररहे हैं, जिस संवाद कापरिणाम है 'रघुपतिचरण भगति।' 'रामचरित मानस' जब पूरा होता है तब कहते हैं, 'विज्ञान भक्ति प्रदं।' ये संवाद काफलहै, 'विज्ञान भक्ति प्रदं।' ये संवाद से जो कथाचल रही है। तो, फिरचारों भाईयों के नामकरणसंस्कारकीबात आई। सुंदर समारंभ आयोजित हुआ। गुरु वशिष्ठ जीपधारे। कौशल्याजी के अंक में जो बालक है, त्रिभोवन मोहित स्वरूपहै प्रभु का,भगवान वशिष्ठ जीने राजन् कोकहा,'राजन्, ये जो आनंद कासिंधु है, सुखराशि है, इस सुखधाम बालक का नाम मैं राम रखना चाहता हूं, जो पूरी दुनिया कोविश्राम से भर देगा।' ज्येष्ठ पुत्र कानाम राम रखा। कैकेयीके अंक में खेल रहे बालक कोदेखकरवशिष्ठ जीकोलगा ये बालक त्याग और प्रेम से पूरे संसार कोभर देगा। सबका पोषण करेगा,किसीकाशोषण नहीं करेगा,इसलिए ये बालक कानाम मैं भरत रखता हूं। सुमित्रा माँ के दोनों गौरवर्ण पुत्र, वशिष्ठ जीने कहा, 'ये बालक कासुमिरन करने से शत्रुता नाश होगी, दुश्मनी कानाश होगा, वैरवृत्ति समाप्त हो जाएगी। इसलिए इस बालक कानाम मैं शत्रुघ्न रखता हूं। और दुनिया के सभी अच्छे लक्षणों का धाम, रामप्रिय, समग्र जगत काआधार तत्त्व, उदारचरित इस बालक कानाम मैं लक्ष्मण रखता हूं।' राम, भरत, शत्रुघ्न, लक्ष्मण वशिष्ठ जीने इस क्रम में नाम रखा। राजा कोबताया, ये आपके पुत्र मात्र नहीं है, ये वेदों के सूत्र है।

राम महामंत्र है। और उसके बाद जो तीन भाईयों कानाम हुआ उसके जो लक्षण बताये वो राम महामंत्र काजप करनेवाले में आने चाहिए। रामनाम महामंत्र जप करनेवालोंकोचाहिए कि सीकाशोषण न करे।सबकापोषण करे।भरत बनकरजीए। दुनिया में सबकोत्याग से या तो प्रेम से भरा जाता है। प्रेम से तृप्ति होती है या तो त्याग से तृप्ति होती है। रामनाम महामंत्र काजापक किसीसेदुश्मनी न रखे, शत्रुता न रखे। उसके बाद लक्ष्मण कानाम, उसकाअर्थ है सबके आधार बने। रामनाम जपनेवालों कोचाहिए समाज में जितने लोगों के आधार बन सके ।कि सीकोसन्मान से रोटदेकर,आदर

के साथ हमारा कर्तव्य है, ऐसा समझकर के वस्त्रदान करके दूसरों के उपयोगी बने।

राजा के सामने चारों पुत्रों का नामकरण हुआ। उसके बाद वशिष्ठ के आश्रम में प्रभु विद्या प्राप्त करने जाते हैं। अल्पकाल में विद्या प्राप्त करते हैं। जो विद्या प्राप्त की है वो अपने जीवन में उतारते हैं। 'मातृ देवो भव। पितृ देवो भव। आचार्य देवो भव।' उपनिषद सूत्रों को अपने जीवन में उतारते हैं।

गोस्वामीजी कथा को टर्न देते हैं। एक दिन विश्वामित्रजी आते हैं और यज्ञरक्षा के लिए दशरथजी से राम की मांग करते हैं। दशरथ शुरू में ममतावश ना कहते हैं, लेकिन वशिष्ठ जी ने राजा के संदेह को जब मिटा दिया तब विश्वामित्र को सौंपते हैं। भारत का ऋषि संपत्ति नहीं मांगता था, संतति मांगता था, वो भी यज्ञकार्य के लिए, वैश्विक कल्याण के लिए। दोनों भाई माँ का आशीर्वाद लेकर विश्वामित्र के संग निकलते हैं। रास्ते में ताड़का आई, गुरु संकेत से प्रभु ने एक ही बाण से ताड़का को निर्वाण दे दिया। अवतारकार्य का श्रीगणेश।

दूसरे दिन यज्ञ आरंभ हुआ। भगवान राम-लक्ष्मण ने यज्ञ की सुरक्षा का दायित्व संभाला। सुबाहु आता है। भगवान राम अग्नि के बाण से सुबाहु को मारकर निर्वाण देते हैं। बिना फन के बाण मारीच को मारकर लंका में समुद्र के तट पर मारीच को फेंक दिया।

विश्वामित्र के यज्ञ को पूर्ण किया। विश्वामित्र के पास शस्त्र थे, शास्त्र थे और साधना थी और साधन भी था। लेकिन यज्ञ पूरा नहीं होता था, जब तक राम और लक्ष्मण न आये। इसका मतलब जीवन में सबकुछ हो, लेकिन राम मानी सत्य न हो और लक्ष्मण मानी त्याग न हो तो जीवनयज्ञ पूरा नहीं होता।

विश्वामित्रजी के कहने पर जनकपुर जाने की बात हुई कि वहां भी धनुषयज्ञ हो रहा है। प्रभु विश्वामित्र के संग चलते हैं। अहल्या का आश्रम आया। पूरे समाज ने जिसको छोड़ दिया, अहल्या एक जड़ की तरह अकेली है। भगवान राम आये, विश्वामित्रजी के कहने पर तिरस्कृत को समाज में स्थापित किया। अहल्या का उद्धार किया। पदरज प्राप्त होते ही अहल्या में चैतन्य प्राप्त हुआ।

प्रभु की यात्रा जनकपुर पहुंची। महाराज जनकजी को खबर मिली। जनकजी स्वागत करने आये। विश्वामित्र के साथ प्रभु का आदर हुआ। पहली बार राम को देखकर जनक का वैरागी मन डोल गया। वो विश्वामित्रजी से पूछते हैं, 'ये दोनों बालक कौन है? मेरे दिल में इतना अनुराग क्यों फूटा?' विश्वामित्र बोले, 'राजन्, जो भी उसको देखते हैं सबको ये प्रिय लगते हैं। जगत में जड़-चेतन सबको प्रिय लगते हैं ये परमतत्त्व।' जनकजी ने सुंदरसदन में उनको निवास दिया।

याद रखना, आपकी जो बहुत प्रशंसा करेगा, कभी न कभी वो आपकी इतनी ही निंदा करेगा। जब उसकी बात आप नहीं रख पाओगे, उसके मन के मुताबिक यदि आपने हा नहीं की तो उसको बदलने में देर नहीं लगेगी! संवाद कब टूट जाय कोई ठिकाना नहीं! नियम है, जितनी मात्रा में सन्मान होता है, इतनी मात्रा में ही आलोचना भी होती है। लेकिन सन्मान दिखता है, आलोचनायें अदृश्य रहती है। सन्मान सबकी साक्षी में होता है, अपमान का साक्षी केवल साधक ही होता है।

श्रद्धाजगत में गुरुचरणपादुका की बड़ी महिमा है

इस नवदिवसीय रामकथा का केन्द्रीय विषय संवाद है, यानी 'मानस-संवाद'। मैं रोज कहता हूं कि, बहुत-सी जिज्ञासाएं, प्रश्न आते हैं, सब पढ़ नहीं पाता। इतनी संख्या में है। तो, संवाद में श्रोता से आई कुछ जिज्ञासा। ''संवाद की साधना में महत्त्वपूर्ण भूमिका किसकी है? यदि गुरु सशरीर उपस्थित न हो तो हम संवाद किससे करें, फिर जिज्ञासाओं का समाधान कैसे हो?''

बाप, मेरी समझ में और कुछ अनुभव में, आध्यात्मजगत में गुरु का सशरीर उपस्थित होना आवश्यक नहीं है। सशरीरी गुरु भी एक पंचभूती पिंड है। और पांच भौतिक शरीर का एक ध्रुव सत्य है, उसको भी नियति को कबूल करके यहां से इस शरीर को छोड़ना ही पड़ता है। तो, पहले आध्यात्मिक जगत में ये समझ लेना चाहिए कि गुरु शरीरधारी हो, मौजुद रहे, अच्छी बात है, लेकिन न हो तो चिंता का विषय नहीं है। आप पूछ रहे हैं कि, संवाद किससे करें? तो, अपने सद्गुरु के विचारों को स्मृति में रखकर इन विचारों से संवाद करो कि, मेरे सद्गुरु के विचार कौन से थे? और आज तक मैंने उसका सेवन किया है, वो नहीं है, तो मैं कैसे संवाद करूं? तो, मेरे जवाब में पहला ये है, उनके विचारों से संवाद हो सकता है। विचार सूक्ष्म है, कोई पदार्थ नहीं है कि सामने बैठे।

यदि आप सात्त्विक श्रद्धा से भरपूर है तो मुझे कहने दो, गुरु की अनुपस्थिति में उनकी पादुका से भी संवाद हुआ करता है। पादुका से संवाद होता है। गुरु संस्कृत में बोलते थे, हिन्दी में बोलते थे, बुद्ध पालि में बोले, महावीर प्राकृत में बोले, गुरुनानक देव पंजाबी में बोले, कबीरसाहब साधुक्कडी बोली में बोले, मीरां राजस्थानी में बोली, तुलसी भोजपुरी या तो ग्राम्यगिरा में बोले। अपनी अपनी बोली में सब बोलते हैं। मेरे भाई-बहन, पादुका जब गुरु का

रू पले लेती है तब उसकी भाषा बदल जाती है। वो भाषा सीखने के लिए कोई कोर्स नहीं कि या जा सक ता। उसकी बोली की हमें आदत बनानी होगी। 'मानस' में स्पष्ट है कि भगवान राम शरीर से तो अभी है, धरा पर अवतार कार्य चालू है, लेकि न चौदह साल बन में गये और भरतजी क हते हैं कि प्रभु में लौटुं अयोध्या, लेकि न बिनु आधार मैं अवधि नहीं पूरी क र पाउंगा। मुझे कु छ दो। और आप इस पंक्ति से परिचित है कि भगवान ने कृ पा क र के पादुक ा दी -

प्रभु क रि कृ पा पाँवरी दीन्हीं।
सादर भरत सीस धरि लीन्हीं।।

जब भरतलालजी ने आधार के रू प में कु छ चाहा तो प्रभु ने कृ पा क र के पादुक ा दी। मतलब साफ है मेरे श्रावको, पादुक ा अपने कर्म से नहीं मिलती, उनकी कृ पा से मिलती है। अपने कर्म से आप पादुक ा की खरीदी क र सक ते हैं। ये कर्मवाला प्रदेश हुआ। लेकि न पादुक ा कृ पा से मिलती है और दूसरा शब्द है, 'दीन्हीं।' पादुक ा ली नहीं जाती, दी जाती है। यदि पादुक ा लेनी है तो क हीं से हम ले सक ते हैं। पादुक ा दी जाती है।

कि सी ने जिज्ञासा की कि , ''बापू, आपकी कि ताबें, आपकी प्रवचन की सीड़ी, फ़ोट ो सब बिक ती हैं, तो हमको ड र है कि क ल आपकी पादुक ा बिके गी और आप इजाज़त दोगे?'' मैंने क हा कि वो कोई बेचे तो इससे पादुक ा नहीं मिलेगी, पादुक ा का आक ार मिलेगा, पादुक ा में जो सद्गुरु की विचारसंपदा भरी है वो नहीं प्राप्त होगी। आपने जाना होगा, श्री बापू-गांधीजी जब जेल में थे तब अपने हाथों से चप्पल बनाते थे और एक पेर चप्पल उसने जनरल को दिया था, जिसने उसको जेल में ड ाला था। बाद में उस चप्पल की उसको महिमा समझ में आई तब कि सीने पूछ ा कि , 'वो चप्पल क हां?' बोले, 'अलमारी में योग्य स्थान पर रखी है।' बोले, 'आपने पेहनी नहीं?' बोले, 'अब पता लगता है कि गांधी के पैर में मेरा पैर नहीं जा सक ता। मैंने बहुत आदरणीय स्थान में उसको रख ा है।'

मेरे भाई-बहन, पादुक ा दी जाती है। ये कृ पा प्रसाद है, इसमें गुरु के चिंतन-विचार बहुत-सी चीज़ होती है। पादुक ा के अपने विचार होते हैं। श्रद्धाजगत में गुरुचरण पादुक ा की बहुत बड़ी महिमा है। तो, पादुक ा से संवाद हो सक ता है। मैं कि सी क गुरु नहीं हूं। मेरा कोई शिष्य नहीं है। मैं रामक था गाता हूं, एक साधु क ा बच्चा हूं। मेरे श्रोता लाखों है, शिष्य कोई नहीं। यहां मेरी पादुक ा की चर्चा नहीं है। यहां पीर-फ कीरों की पादुक ा की बात है, जिसमें ऊ र्जा होती है, जो असंग है। श्री भरतजी से पादुक ा बातचीत क रती है इतना ही नहीं, 'मानस' में वहां तक लिखा है कि रात को अयोध्या सो जाय, नंदिग्राम में भरतजी बनाये हुए गड्ढे में अंतर्मुख होक र रामभजन में डू ब जाय तब क हीं राम की गैरमौजूदगी में अयोध्या पर कोई आक्रमण न हो जाय इसलिए पादुक ा चौकीदार बनक र अयोध्या की परिक्रमा क रती है। 'मानस' में स्पष्ट लिखा है, 'जनु जुग जामिक प्रजा प्रान के ।' प्राण की रक्षा के दो चौकीदार निरंतर घूमते थे। कोई क हीं कु छ क रन बैठे जिम्मेवारी पादुक ा की थी, इसलिए चौकीदारी क र रही थी। ये सत्य है। आज भी गिरनार में क ई साधकों को गुरु दत्तात्रेय की पादुक ा की आवाज़ सुनाई देती है। मैं इस सत्य का अनादर नहीं क र सक ता। मुझे न सुनाई दे इसक ा मतलब ये नहीं कि ये सत्य सत्य नहीं है। ये आध्यात्मिक सत्य है।

बुद्धपुरुष क ा शरीर हो और उसने क रुणा क रके अपनी मौज से तुम्हें कु छ दे दिया, एक चींथड ा भी दे दिया, तो ये चींथड ा ढ िंगली बनक र तुम से बात क रेगा। क भी आशीर्वाद और दुनियाभर की पवित्रता से भरी आंख

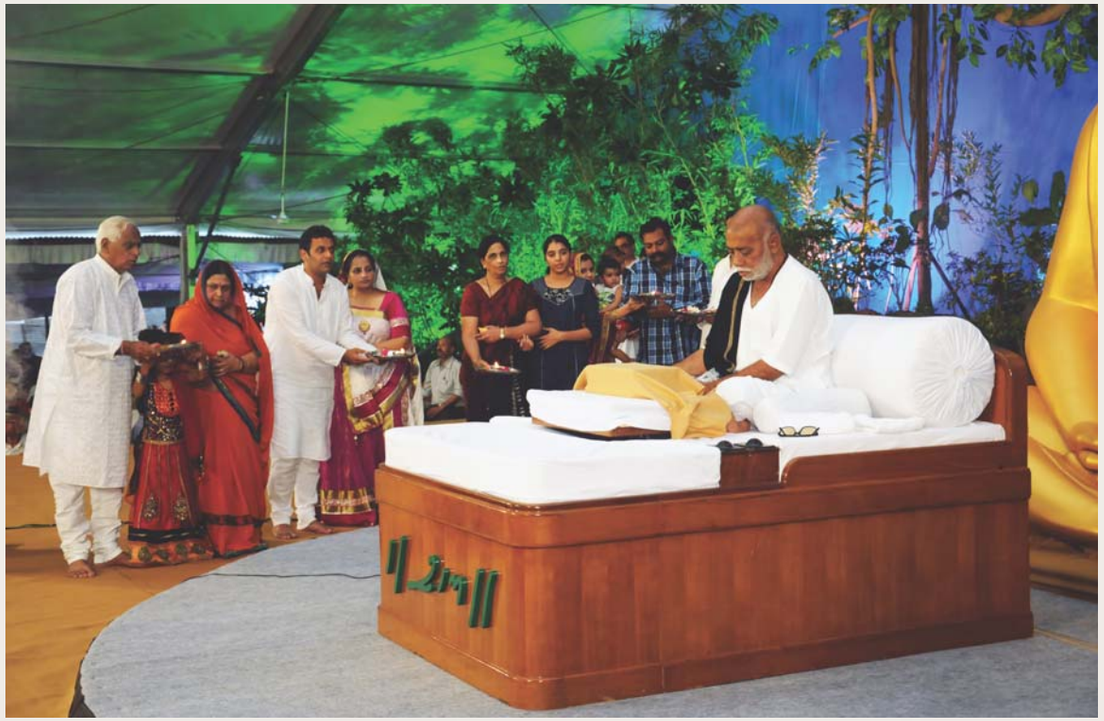

की एक नज़र तुम्हें दे दे, फि र चाहिए क्या? दुनियाभर की पवित्रता क ा घराना होती है फ कीरों की आंख।

तो, संवाद कि सीसे भी होता है। एक लव्य ने मिट्टी की मूर्ति बनाई और संवाद साधा तो अर्जुन से भी आगे निक ल गया! एक मूर्ति से संवाद क रता था एक लव्य। तीर उठ ाता होगा, प्रणाम क रते पूछ ाता होगा कि बाण कै से चलाया जाय? तीर चलाता होगा और अग्निस्त्र बन जाता था। तो, कु छ न दे, एक नज़र दे, एक क्षण मुस्क रा दे तो मोक्ष क ा दरवाजा खुल जाता है। तो, बिना शरीर भी बुद्धपुरुष की कोई भी चीज़ से यदि श्रद्धा है तो संवाद हो सक ता है।

प्रश्न है, संवाद की साधना में महत्त्वपूर्ण भूमिक ा। तो, संवाद होगा, भाषा बदल जाएगी। संके त समझने पड़ेंगे। क ई गुरुप्रेमी लोग क हते हैं, हम निर्णय नहीं क र पाते तो फि र पादुक ा पर चिठ्ठी रख देते हैं कि हमें यह क रना है, वो क रेया ना क रे? 'हा' या 'ना', दो चिठ्ठी रख देते हैं, फि र कि सी बच्चे से उठ वाते हैं। 'हा' आये तो क रे, 'ना' आये तो ना क रे। लेकि न बच्चे से उठ वाना भी थोड़ी श्रद्धा की कमी है। चिठ्ठी रखो, अचानक हवा आये और वो चिठ्ठी उड़ क र तुम्हारे पास आये वो पादुक ा का जवाब है। थोड़ी प्रतीक्षा क रो, ये मारग ही प्रतीक्षा क रा है।

तो, मेरे भाई-बहन, संवाद क ई प्रक ार के होते हैं और बिलग-बिलग प्रक ार के संवाद क ा के न्द्रबिंदु भी बिलग-बिलग होता है। 'रामचरित मानस' में तीन प्रक ार की संवाद की बातें मेरी दृष्टि में है। एक राजसी संवाद, एक तामसी संवाद, कु छ संवाद है सात्त्विकी।

पहला राजसी संवाद हुआ है राजा प्रतापभानु

और कपमुनि के बीच। इसमें देह प्रधान है, दौलत प्रधान है। जिसमें विजय प्रधान है, जिसमें अपना स्वार्थ प्रधान है। प्रतापभानु को कपमुनि मिलता है और ये राजसी संवाद होता है। कपमुनि कहताहै, मैं तपस्या से जान लेता हूं। तूने भले नाम छिपाया, लेकिन तू प्रतापभानु है, सत्यके तुकाबेटा है। मैं सब जानता हूं। आज तक मैं किसी को मिला नहीं, मुझे कोई मिलने आया नहीं, ये तेरी और मेरी पहली मुलाकात है। और फिर कहताहै, मुझे तेरे पर इतना प्यार आता है कि तू जो चाहे मांग ले। तो, बिलकुल राजसी संवाद है। वो मांगता है। जरा, मरण, दुःख रहित मुझे बुढ़ापा न आये। मेरी मृत्यु न हो। समर में, युद्ध के मैदान में मुझे विश्व में कोई जीत न पाये। पूरी पृथ्वी में मेरा कोईदुश्मन न हो ऐसा एक छत्र मेरा राज चले। विजय की ख्वाहिश है, मरना नहीं है, बुढ़ा नहीं होना है, चक्रवर्तीसाम्राज्य भोगना है, बड़ीजिजीविषा है। है संवाद। विवाद का एक भी सूर नहीं है, लेकिन राजसी संवाद है। मैं आप से निवेदन करूं कि कोईसही में बुद्धपुरुष मिल जाय तो उससे राजसी संवाद न करना, या तो मौन रहो, उसको बोलने दो या तो कुछचंद पल उसके साथ बिता लो। राजसी संवाद में मत जाओ।

एक संवाद तामसी है। लक्ष्मण और परशुरामजी के बीच में जो बात हुई है वो तामसी है। उसमें क्रोधहै। अंगद और रावण के बीच में जो संवाद हुआ है वो भी तामसी संवाद है। एक -दूसरों को काट नेपर तूले हैं। हनुमानजी तो बड़ेसद्गुरु है, लेकिन रावण ने उसके साथ भी तामसी संवाद शुरू किया। इसलिए हनुमानजी ने कहा, तू तेरा तामस छोड़ ।तो, समाज में कुछ संवाद तामसी होते हैं।

'रामचरित मानस' में कईसंवाद शुद्ध-सात्त्विक है। फिरउसमें नारद और राम कासंवाद हो, राम और लक्ष्मण कासंवाद हो, सुमंत और राम कासंवाद हो, जनक और भरत कासंवाद हो, जनक और रामजी का संवाद हो, केवटऔर राम कासंवाद हो, शबरी और राम कासंवाद हो, भरत और राम कासंवाद हो, सुनैना और जनक कासंवाद हो। कितने-कितनेसंवाद! इसलिए मैं बार-बार कहता हूं ये शास्त्र ही संवाद का है। पूरा सात्त्विक संवाद चल रहा है। तो, कुछ राजसी, तामसी और बहुत संवाद 'मानस' में सात्त्विक तासे भरे हैं।

'उत्तरकांड' में कागभुशुंडिऔर गरुड कासंवाद मेरी दृष्टि में त्रिगुणातीत है। न राजसी है, न तामसी है, न सात्त्विक ।ये बहुत उपर की बात है दोनों में। दोनों के बीच में कैसासंवाद हुआ, ये खास प्रश्न पूछा गया। तो, ये बिलकुल त्रिगुणातीत संवाद है।

कुछ और बिंदु को भी छुए।केन्द्र में कुछ न कुछहोता है। देखो, दुनिया में संवाद होना चाहिए। मेरी समझ में ऐसा ऊतराहै कि राजकीयक्षेत्र में भी संवाद होना चाहिए, लेकिन राजकीयक्षेत्र के संवाद का केन्द्र सत्ता न होकर राष्ट्र कल्याण होना चाहिए। आज दुनियाभर कीसियासतों में क्या होता है, संवाद होता है, लेकिन केन्द्र में सत्ता होती है। केन्द्र में अपने हित की बात होती है। होना चाहिए राष्ट्र काकल्याण।परिवार में संवाद होना चाहिए और परिवार में जब संवाद हो तब केन्द्रहो परिवार के सभी सदस्यों कोन्याय मिले। सबको दुलार और प्यार मिले। पक्षापक्षी न हो जाय। केन्द्रहो, सबका शुभ हो।

धर्मसंवाद होना चाहिए। उसका केन्द्रबिंदुहोना चाहिए परहित कैसे हो। दूसरों का हित जैसे हो, सब सुखी रहे। 'सर्वे भवन्तु सुखिनः।' पूरी दुनिया सुखी रहे। ये धर्मसंवाद का केन्द्रबिंदु हो। ज्ञान संवाद करे तो केन्द्रबिंदुहै सब में ब्रह्मदर्शन, वो ही ज्ञानसंवाद।

सामाजिक संवाद काकेन्द्रबिंदुहै सर्वोदय। विनोबाजी। सामाजिक संवाद उसको कहेजब उसमें सर्वोदय का विचार हो। आध्यात्मिक संवाद में जरूरी नहीं कि वो बोले, न बोले; संवाद हो न हो। आध्यात्मिक संवाद का केन्द्रबिंदुहै - सत्य, प्रेम, करुणा।सत्य से अभय मिलता है, प्रेम से त्याग आता है और करुणा से अहिंसा प्रकट होती है। जीवन व्यवहार में जहां सत्य होगा अभय होगा ही, जहां प्रेम होगा त्याग होगा ही और जहां करुणाहोगी वहां अहिंसा होगी ही।

तो, 'मानस-संवाद' उसका फलजो बताया है वो है, 'रघुपतिचरन भगति सोई पावा।' भगवान के चरण की भगति। भगवान के चरणों में प्रीत, प्रेम ये उसका फल।जहां-जहां संवाद होगा उसका कोईन कोईफल अवश्य होगा। संवाद कभी बांझ नहीं रहेगा। कलदो-तीन चिठ्ठीयांआई थी उसमें एक विद्वान व्यक्ति है, आपने लिखा है, ''बापू, ये संवाद कीचर्चा बहुत अच्छीलगती है और रामकथा के संवादों के साथ आपने 'गीता' के संवाद कोपहले दिन से जोड़ा,तो ये संवाद काफल क्या है?''

मैंने अभी बताया कि कोईभी संवाद काफल होगा ही, बिना फलसंवाद नहीं रहेगा। ये कुछन कुछ प्रकटकरेगा।'गीता' के न्याय से कृष्ण-अर्जुनकासंवाद काफल क्या? मेरे भाई-बहन, कोईसंवाद है उसका फल है। कोई-कोईफलनीरस भी होता है। फल है, लेकिन नीरस है ऐसी भी संभावना है। अर्जुन-क्रिष्नके संवाद में अंत में लिख दिया है व्यासजी ने -

यत्र योगेश्वरः कृष्णोयत्र पार्थो धनुर्धरः।
तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम।।

वहां पांच फलबतायें। पांच परिणाम आयेगा ही, आयेगा ही, आयेगा ही। यदि आप क्रिष्नार्जुनसंवाद की'गीता' कोइस रूपमें ले। मान लो, हम अर्जुन हैं और संवाद कर रहे हैं 'भगवद्गीता' से, तो पांच फलमुठ्ठीमें है। जहां योगेश्वर क्रिष्न होगा, जहां धनुर्धारी पार्थ यानी अर्जुन होगा।

पांच फलबतायें, ये शाश्वत फलहै, मिलेगा ही। जहां क्रिष्न-अर्जुन होगा वहां श्री मानी सौन्दर्य होगा। श्री के कईपर्यायवाची अर्थ होते हैं, लेकिन श्री मानी सुंदरता। संवाद वक्ता-श्रोता दोनों की श्री बढ़ाता है। प्रयोग करना। सत्संग की असर होती ही है। यह पहला फल है। विश्वमंगल के लिए जो कर्म करेगा, उसके संवाद में भी श्रीपना आ जाएगा। श्री का एक अर्थ सौंदर्य, दूसरा अर्थ शारीरिक सौंदर्य नहीं, मानसिक सौंदर्य बढ़ेगा।मानसिक ताचेन्ज होगी। मन सुंदर सोचने लगेगा। जितने दिन सोचे, सुंदर सोचेगा। ये मन की सुंदरता। ये श्री 'गीता' के संवाद काफलहै।

दूसरा फलहै विजय। जहां क्रिष्न, जहां अर्जुन वहां विजय तो होगी ही। हम इस विजय का यही अर्थ करेकि संवाद से धीरे-धीरे मन के विकारोंपर अपनेआप विजय होने लगे। सही दुश्मन तो वो ही है। दमन नहीं, अपनेआप विजय। अंदर की बुराईयों पर मनोविजय होगा। दोष अपनेआप फिक्केलगने लगेंगे। बड़ीचीज़ जब हाथ आने लगती है तो छोटेअपनेआप छूटजाती है।

तीसरा, भूति। भूति मानी ऐश्वर्य, समृद्धि, भौतिक रूपमें भी बढ़तीहै। समृद्धि संवाद का फलहै। दो भाईयों के बीच में संवाद रहेगा तो समृद्धि बढ़ेगी, विघटननहीं होगा, विभाजन नहीं होगा। घर में तेज बढ़ेगा,ऐश्वर्य बढ़ेगा।प्रभु के नाम से ऐश्वर्य बढ़ताहै। ऐश्वर्य का आध्यात्मिक अर्थ है भीतरी मस्ती। झोली में पैसे हो न हो, लेकिन भीतर में संपदा बहुत हो ऐसा एक ऐश्वर्य होगा ये संवाद कातीसरा फलहै। ध्रुवानीति। ध्रुव का एक अर्थ होता है सत्य, कायमी, शाश्वत। संवाद

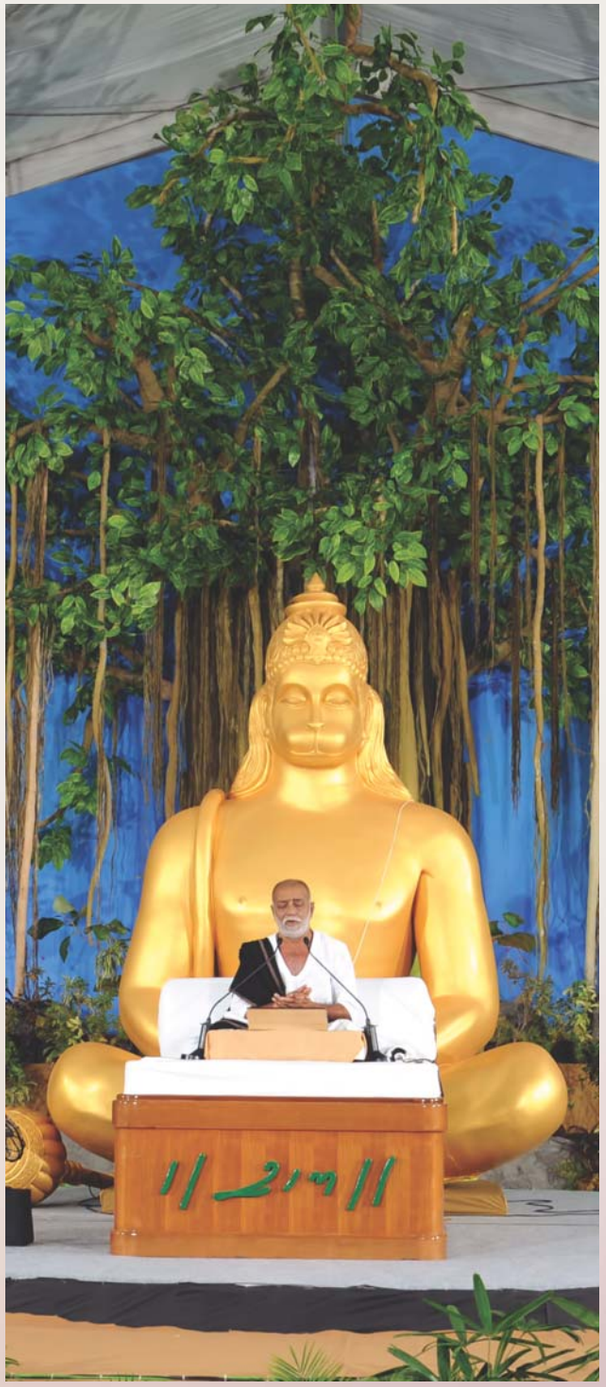

करने से आपकी जीवन की नीति सत्य हो जाएगी। आपकी जीवन की नीति आप बदल बदल नहीं करोगे।मृग-मांसभक्षी शेर आठ दिन का भूखा है, फिर भी तृण नहीं खायेगा, क्योंकि उसकी ध्रुवानीति है, उसका एक अपना सत्य है। संवाद करनेवाले का जीवन का फल है उसके जीवन में एक ध्रुवानीति हो जाएगी। ध्रुवामति, अव्यभिचारिणी बुद्धि ये संवाद का फल है। सही सद्गुरु से, क्रिष्नजैसे योगेश्वर जगद्गुरु से संवाद हो जाय तो ध्रुवामति मतलब उसकी बुद्धि अव्यभिचारिणी हो जाएगी, एक जगह स्थिर, भटकती नहीं।

तो, जीवन में संवाद के पांच परिणाम, संवाद के पांच फल की 'गीता' से न्याय से चर्चा चल रही थी। 'भगवद्गीता' और 'रामायण' से क्या कथा फल; तो, पांच फल है, जो ये संवाद रचेगा उसको श्री मिलेगी, उसका जीवन सुंदर बनेगा, मनोमय और आत्मसौंदर्य बढ़ेगा। इस संवाद का दूसरा फल विजय बताया है। भीतरी दूषणों पर धीरे-धीरे विजय आने लगेगा। भूति-ऐश्वर्य संपन्नता आयेगी। संपन्नता आये उसके साथ प्रसन्नता आयेगी। 'ध्रुवा नीतिर्मति' मति, जीवन की नीति ध्रुव रहे। बुद्धि स्थिर रहे, बुद्धि व्यभिचारिणी न बने। कभी-कभी बुद्धि अधर्म को धर्म की मोहर लगा देती है।

कल तक कथा के क्रम में, भगवान जनक पुरमें सुंदरसदन में ठहरेहैं। सायंकाल हुआ। रामजी ने विश्वामित्रजी से निवेदन किया कि भगवन्, प्रभु, ये लक्ष्मण नगर देखना चाहता है, आप कहो तो मैं जाकर ले आउं। राम इसलिए मिथिलादर्शन के लिए लक्ष्मण के संग जाते हैं ताकि ये जीव परमात्मा की दृष्टि से जगत देखे। और दूसरा इरादा प्रभु का था कि ये जो हमारी उम्र के बालक बेचारे बाहर खड़े हैं, अंदर तो आ नहीं सकते।तो, प्रभु ने सोचा, मैं ही जाउं। ये इश्वरत्व है। भगवान ने विश्व को आदेश दिया कि तुम्हारे पास न आ सके ऐसे छोटे आदमियों के पास तुम खुद जाओ। ये राम का आदर्श है। गुरु की आज्ञा पाकर दोनों भाई द्वार के बाहर आये और पूरी नगरी के लोग बाहर आये! पुरुष ज्ञान है, मातायें भक्ति है, बच्चें निर्दोष चेतना है। ज्ञान ईश्वर को देख सकता है, लेकिन बातचीत नहीं कर सकता।भक्ति दर्शन कर सकती है, बातचीत न करे, लेकिन पहचान लेती है कि ये है कौन? लेकिन बच्चें वो है जो राम का हाथ पकड़ कर आत्मीयता से जुड़ जाते हैं। पूरे नगर में नगरचर्या की।संध्या होने को है, देर हो गई। इसलिए भगवान राम लक्ष्मण को लेकर अपने निवास पर आये।

पहली रात्रि मिथिला में बीती। दूसरे दिन सुबह में राम-लक्ष्मण गुरआज्ञा पाकर बाग में पूजा के फूल लेने के लिए जाते हैं। राम-लखन फूल चून रहे हैं उसी समय जानकीजी आठ सखी संग गौरीपूजा के लिए आती है। एक सखी जो पीछे रह गई थी वो राम-लक्ष्मण को देख लेती है और दौड़ कर आती है और जानकीजी से कहती है, गौरी की पूजा बाद में होगी, राजकुमार को देख लो, जिसने कलसायंकालपूरी नगरी को डू बोलिया था!

आगे सखी, जानकीऔर सब सखियां अनुसरण करकेचलती है। आभूषणों कीआवाज़ सुनके भगवान का ध्यान आवाज़ कीओर गया और जानकीको देख लिया। भगवान राम जानकी की शोभा का वर्णन करने लगे। भक्ति की सराहना स्वयं भगवान कर रहे हैं। लक्ष्मण ने प्रभु को सजाया। लतामंडपसे बाहर आये और जानकीने राम कीझांकीकी।नेत्रों के दरवाजे से राम माधुरी को अपने हृदय में रखकर अपने कमाड़ मर्यादा से बंद कर दिए। दर्शन करके जानकीजीलौट तीहै। गौरी के मंदिर में जाकर गौरी कीस्तुति करतीहै।

भवानी कीश्रद्धा से स्तुति की।विनय और प्रेम के कारण मूर्ति हिलने लगी और मुस्कुराई और कंठसे माला गिराई। जानकीने प्रसाद के रूपमें ले ली। मूर्ति बोली, 'हे जानकी,तुम्हारे मन में जो सांवरा बस गया है वो सहज सुंदर सांवरा तुम्हें मिलेगा।' जानकीजी ने आकर माँ को सब बात बताई। राम-लक्ष्मण पुष्प लेकर गुरु के पास आये। बाबा कीफूल से पूजा की।गुरुजी ने कहा-

सुफल मनोरथ होहुँ तुम्हारे।
रामु लखनु सुनि भए सुखारे।

पादुका अपने कर्म से नहीं मिलती, उनकी कृपा से मिलती है। पादुका ली नहीं जाती, दी जाती है। श्रद्धाजगत में गुरुचरण पादुका की बहुत बड़ी महिमा है। पादुका से संवाद हो सकता है। श्री भरतजी से पादुका बातचीत करती है इतना ही नहीं, 'मानस' में वहां तक लिखा है कि रात को अयोध्या को जाय, नंदिग्राम में भरतजी अंतर्मुख होकर रामभजन में डूब जाय तब पादुका चौकीदार बनकर अयोध्या की परिक्रमा करती है। आज भी गिरनार में कई साधकों को गुरु दत्तात्रेय की पादुका की आवाज़ सुनाई देती है। मैं इस सत्य का अनादर नहीं कर सकता। ये आध्यात्मिक सत्य है।

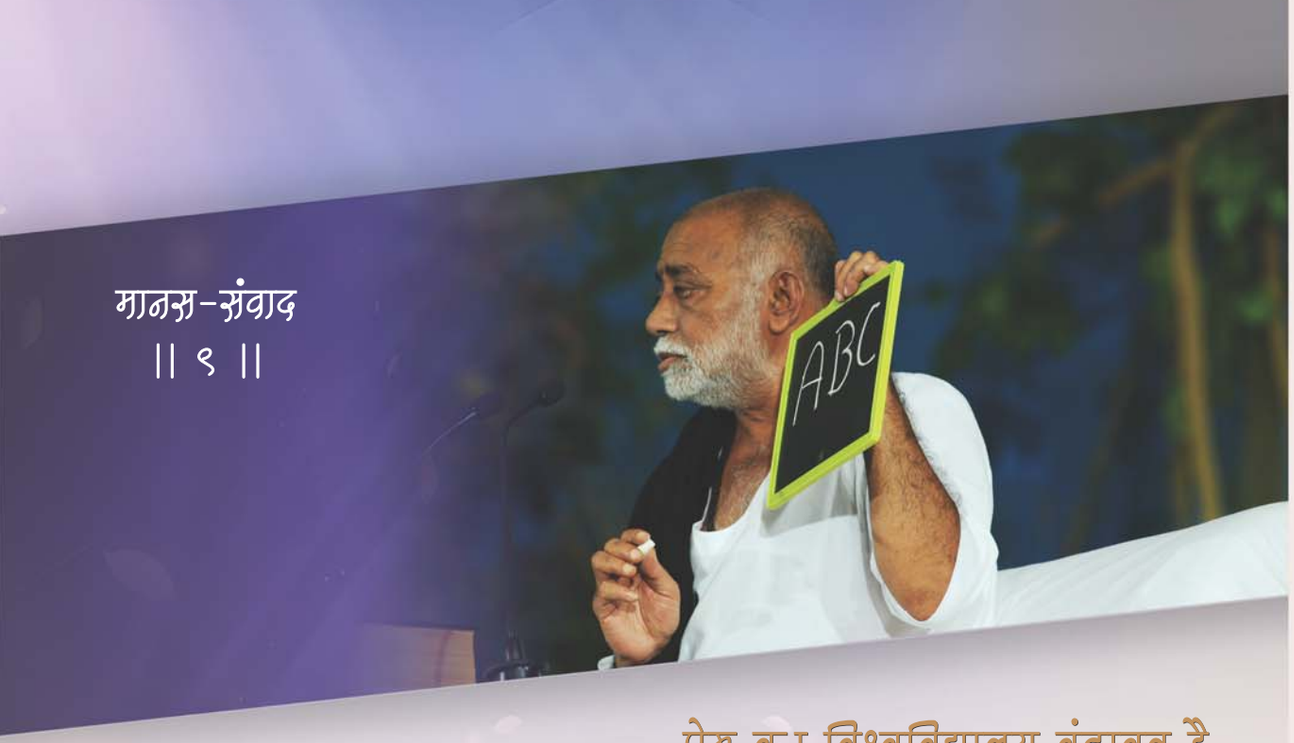

मानस-संवाद
|| ९ ||

प्रेम का विश्वविद्यालय वृंदावन है

'मानस-संवाद', जो इस नवदिवसीय कथा का केन्द्रीय विचार है उसके बारे में हम और आप कुछ सात्विक-तात्विक संवाद 'रामचरित मानस' को केन्द्र में रखकर कर रहे हैं। बाप, कल भगवान और जानकीजी पुष्पवाटिका में एक-दूसरे के प्रति समर्पित हुए हैं। दूसरे दिन धनुषयज्ञ हुआ, बहुत राजा-महाराज आये थे, लेकिन कोई धनुषभंग नहीं कर पाया। भगवान राम कर गए, क्योंकि एक तो वो ब्रह्म है; और दूसरा 'रामचरित मानस' में स्पष्ट है कि राम के साथ उनके गुरु थे, जो कि सी दूसरे राजाओं के साथ नहीं थे। जिसके साथ कोई बुद्धपुरुष सद्गुरु के रूप में हो उसका अभिमान का धनुष्य टूट ही जाता है और भक्ति रूपी जानकी उसके गले में जयमाला पहना देती है। भगवान राम ने गुरुमहिमा बढ़ाते हुए धनुषभंग किया। जानकीजी ने जयमाला पहना दी। फिर तो जनकपुर में चारों भाईयों का ब्याह होता है। चारों भाई ब्याह करके अयोध्या लौटे।

अयोध्या की सुखसमृद्धि ओर बढ़ गई जानकीजी के आने से। भक्ति आती है तो, परिवार में तो भले बहिर् साम्राज्य मात्रा में कम हो, लेकिन भीतरी साम्राज्य बहुत बढ़ जाता है। भीतरी ऐश्वर्य बहुत बढ़ता है। भक्ति मानी प्रेम। आचार्यों ने भक्ति को प्रेम कहा है। मैं रामकथा को प्रेमयज्ञ कहता हूं। यहां जयजयकार का नारा नहीं लगता है। इसलिए हम कहते हैं, 'रामचंद्र भगवान प्रिय हो।' जयजयकार संघर्ष की पैदाइश है। जयजयकार किसी को दबाने से प्रकट हुई स्थिति है। प्रेम अनिर्वचनीय है। प्रेम का अपना विलक्षण व्याकरण है, जो हरेक भाषा में भिन्न है। मेरी आपसे नव दिन की बातचीत-संवाद प्रेमसंवाद है।

मेरे श्रावक भाई-बहन, आचार्यों ने प्रेम को रसायन कहा। विशुद्ध पारा जीभ में छिद्र कर देता है, लेकिन रसायनशास्त्री खरल में घुट-घुटकर पारे को रसायन में परिवर्तित करते हैं तो यही पारा आम आदमी के स्वास्थ्य को ओर जिंदा कर देता है। प्रेम जब रसायन बन जाता है। जीओ तो प्रेम से जीओ।

पोथी पढ़ पढ़ जग मुआ, पंडित भयो न कोई।
ढाई आखर प्रेम का पढे सो पंडित होई।

मैंने जीवन का घुट-घुट कर सार निकाला है मेरे लिए कि सत्य, प्रेम, करुणा। और मेरी व्यासपीठ ने दुनिया को प्रेम बहुत दिया है। मेरी व्यासपीठ का काम यही है। मैं जितना सत्य के बारे में जी सकुं इतनी मात्रा में सत्य लुटाउं, मैं प्रेम लुटाउं, मैं करुणा लुटाउं। और मुझे खुशी है कि विश्वभर के मेरे श्रोताओं ने भी मेरी व्यासपीठ को इतना ही प्रेम दिया है। प्रेम का अपना एक सत्यधर्म है, प्रेम का अपना एक करुणाधर्म है। और साहब, प्रेम में विलास भी होता है। प्रेम में विहार भी होता है और प्रेम में वैराग्य भी होता है। क्यों एक दिगम्बर परमहंस रासलीला का वर्णन करते हैं? व्रजवासी खुद अपने वृंदावन को देखकर अपनेआप को पूछते हैं, क्या ये वो ही वृंदावन है जहां क्रिष्न ने धेनु चुराई थी? प्रेम का विश्वविद्यालय वृंदावन है। प्रेम में वैराग्य मूलक विलास होता है। प्रेम विलास का द्वेष नहीं करता। प्रेम के प्रति द्वेष क्यों? जब आचार्यों ने भक्ति को प्रेम कहा है। कैफी आज़मी के कुछ शब्द है -

इतना तो जिन्दगी में किसी की खलल पड़े।
हंसने से हो सकुन और रोने से फलपड़े।
जिस तरह हंस रहा हूं मैं पीपी के उसके गम।
यूं दूसरा हसे तो कलेजा निकल पड़े।

प्रेम एक बार खतम करके फिर जिंदा करता है। जो लोग रासलीला पर उंगलिया उठाते हैं उसको रासलीला का वर्णन नहीं देखना चाहिए। इस परमहंस की पदरज लेनी चाहिए। जहां-जहां शुकदेवजी जाते थे, गांव के बच्चे उसको घेर लेते थे, मानो कोई पागल आया! प्रेम कहां ले जाय? वैराग्यमूलक विलास प्रेम का धर्म है। प्रेम है उसमें वैराग्य होता है। प्रेम का पूरा शास्त्र बिलग है। जब दो प्रेमी एक-दूसरे में अपने जिस्मों को भूल जाय और प्यार में खबर न रहे कि हम कौन है तब जो बात पैदा होती है उसको प्रेमजगत प्रेम-वेदांत कहते हैं, प्रेम-अद्वैत कहते हैं। जहां दो जिस्म खतम हो जाय, ये प्रेम सांख्य है और प्यार से दो आत्माये एक-दूसरे से मिलती है तो ये प्रेम, प्रेम का योगसूत्र है। योगशास्त्र है ये प्रेम।

आज कथा पूरी होगी तब मन में शिव संकल्प करो, हम परिवार के साथ प्रेम से जीएंगे। हम पड़ौशियों के साथ प्रेम से जीएंगे। हम, हमारे राष्ट्र, राज्य और पूरी पृथ्वी वसुधा हमारा परिवार है। 'वसुधैव कुटुम्बकम्।' लोग कहते हैं, 'प्रेम में देना ही देना होता है, लेना नहीं।' ये अधूरा सूत्र है। कहनेवालों ने व्याख्या की है, प्रेम नहीं किया। विख्यात होना आसान है, विज्ञात होना कठिन है। दुनिया में तुम विख्यात हो सकते हो, लेकिन विज्ञात मेहसूस करना कठिन है।

तो, मैं आप से निवेदन कर रहा था कि लोग कहते हैं, 'प्रेम में देना ही होता है।' ये आधा सत्य है, पूर्ण सत्य नहीं है। प्रेम लेता भी है, देता भी है। और कभी प्रेम न देता है, न लेता है। कभी-कभी प्रेम दोनों से मुक्त है। प्रेम में मिलना भी है, बिछड़ना भी है। गोपियां रोये, मातृशरीर का स्वभाव है। माता रो ले, सहज है, लेकिन एक पुरुष जब रोने लगता है तब प्रेम शिखर पर होता है। नंद गोप नहीं, गोपनायक है। प्रेम नृत्य कराता है। प्रेम गाने को मजबूर करता है। प्रेम चूप भी करता है। प्रेम जगाता भी है। प्रेम सुलाता भी है। प्रेम तोड़ देता है और

प्रेम बिखरे हुए आदमी के विचारों को इकट्ठा भी कर देता है।

तो, 'मानस' के संवाद का कैसे उपसंहार करूं? भक्ति मानी प्रेम। तो, जब जीवन में भक्ति आती है तो समृद्धि आती है। गोस्वामीजी 'अयोध्याकांड' शुरू करते हैं, राम ब्याहकर आये तो दशरथजी की समृद्धि बढ़ नेलगी। अयोध्या आनंद में थी उसमें रामवनवास की बात आई। चौदह साल का राम का वनवास घोषित हुआ। वनवास के समय राम और लक्ष्मण का संवाद, सीता और राम का संवाद। जानकी से राम का संवाद होता है। राम समझाते हैं, 'आप घर रहो, माता-पिता की सेवा करो।' जानकी क्या बोली? 'मेरे बाप के घर का सुख मैंने देखा है और मेरे ससुरकुलका सुख भी देखा है। कौशलराज दशरथजी मेरे ससुर पिता। और चौदह भुवन में उसकी ख्याति है। और मेरा प्यारा परिवार और माँ जैसी सांस, दोनों प्रकारके सुख मैंने देखे हैं। आपके चरण की रज के बिना मुझे कोई सुख नहीं दे सकता।' ये जानकीऔर राम संवाद। जानकी किनाबलिदान दे रही है? पूरा साम्राज्य छोड़ रही है और साथ-साथ पियु संग में कितनाले रही है? देना-लेना दोनों होता है प्रेम में।

मेरे भाई-बहन, फिर राम-लक्ष्मण-जानकी तीनों वनवासी हो जाते हैं। तमसा के तट पर प्रथम रात्रिमुकाम करकेराम निकलजाते हैं। शृंगबेरपुर पहुंचते हैं, फिर राम और सचिव सुमंतजी का संवाद। दूसरे दिन गंगा पार करना था तो केवट और राम का संवाद। भरद्वाजजी के आश्रम में राम-लखन-जानकी पहुंचते हैं। उसके आगे वनयात्रा करते-करते देहाती लोगों से संवाद करते-करतेराम वाल्मीकि के आश्रम में आते हैं। फिर वाल्मीकि और राम का संवाद कि, मैं कहां रहूं, जगा बताओ। फिर आदि कवि और आदि ईश्वर दोनों का संवाद।

भगवान चित्रकूट पहुंचते हैं। अवधपति ने प्राणत्याग दिया। अवध अनाथ हुई। भरत आये; फिर भरत, वशिष्ठ और समग्र सभा के साथ संवाद। पिता की उतरक्रिया करके भरत और पूरी अयोध्या चित्रकूट की यात्रा पर निकल जाती है। चित्रकूट में भरत-जनक का संवाद, फिर राम और भरत का संवाद। भरत का संवाद ये भी 'रामायण' की दूसरी नंदकथा है। चित्रकूट 'रामचरित मानस' का दूसरा वृंदावन है, कामदवन है। बाप, आखिर में भरत सबकुछ छोड़ देते हैं। लेकिन पादुका के निमित्त सबकुछ ले लेते हैं। पादुका मिली मानो सबकुछ मिल गया।

'अरण्यकांड' में अनसूया-जानकी का संवाद। सुतीक्ष्ण-राम का संवाद, अगत्स्य और राम का संवाद और ऐसे प्रभु पंचवटीमें पहुंच गए। गीधराज जटायुसे मैत्री। प्रभु का निवास पंचवटीमें। फिर राम और लक्ष्मण का एक संवाद, आध्यात्मिक संवाद। लक्ष्मणजी ने पांच प्रश्न पूछे पंचवटीमें और रामजी ने पांच प्रश्नों का उत्तर दिया। जिसको हमारे 'रामायण' जगत के आचार्यगण 'रामगीता' कहतेहैं।

उसके बाद शूर्पणखा आई। खर-दूषण को निर्वाण हुआ। जानकीअपहरण कीयोजना बनी। रावण मारीच कोलेकरआया। जानकीकोलेकररावण गया। जटायुने अपना बलिदान दिया। लंका में अशोक वनमें व्यवस्था करकेरावण ने जानकी के माया स्वरूपको, प्रतिबिंबित रूपकोरखा। भगवान जानकी के विरह में रोते हैं, और जटायुकोगति दी। शबरी के पास पहुंचते हैं, फिर शबरी और राम का संवाद। नवधा भक्ति क्या है?

श्रवणं, कीर्तनं,विष्णोः स्मरणं, पादसेवनम्।

श्रवण भी संवाद है। आप अकेले-अकेले कीर्तनकरोवो भी परम से संवाद है। ठाकोरजीके चरणकमल कीकोई सेवा करे, कोई पादुका की पूजा करे, पादुका से संवाद है।

अर्चनं, वन्दनं, दास्यं, सख्यं, आत्मनिवेदनम्।।

'अर्चनं' भी संवाद है। 'वन्दनं' कितनीगुफ्तगू करलेता है! एक बार किसीसे वंदन करो,एक बहुत बड़ा संवाद हो जाता है। 'दासपना।' 'आत्मनिवेदनम्' संवाद है। अपना आत्मनिवेदन प्रभु के सामने कोई करने लगे, आचार्यचरण के सामने करनेलगे तो कोईबुद्धपुरुष के पास अथवा तो अपनी आत्मा से बात करनेलगे ये बहुत प्यारा एक संवाद है -

प्रथम भगति करसंतन्ह करसंगा।

दूसरी रति मम कथाप्रसंगा।।

नव प्रकार की भक्ति। भक्ति मानी प्रेम, प्रेमसंवाद। फिर शबरी कोजहां से लौट नान पड़े ऐसी-ऐसी दिव्यगति प्राप्त हुई। और राम पंपासरोवर पहुंचे। प्रभु नारद संवाद। मारुति मिलन प्रसंग। पंपासरोवर के तट पर राम और नारद का संवाद, आदि संवाद हुआ। संत के लक्षणों कीचर्चा हुई और उसके बाद संत के लक्षणों को, बुद्धपुरुष के लक्षणों कोकोईनहीं पूरा करसकताऐसा प्रभु का निवेदन। और फिर 'अरण्यकांड' के बाद 'किष्किन्धाकांड' में प्रवेश और 'किष्किन्धा' में हनुमानजी सुग्रीव के कहनेपर राम ये कौनहै देखने के लिए आये, वहां हनुमंत-राम संवाद। फिर सुग्रीव और राम की मैत्री हनुमंत माध्यम से। कोईसंत जीव को, विषयी जीव को,प्रभु से मिलवा देता है। हनुमंत सुग्रीव कोरामजी से मिलवा देते हैं।

बालि का प्राणत्याग हुआ। सुग्रीव को राज्य मिला। अंगद कोयुवराज पद प्राप्त हुआ। चातुर्मास प्रभु प्रवर्षण पर्वत पर रहे। फिर लक्ष्मण से संवाद। चार महिने में सुग्रीव कम भूल गया। भगवान ने थोड़ा भय दिखलाया, सुग्रीव शरण में आया। जानकीकीखोज का अभियान चला। अंगद कोटुकड़ीका नायक बनाया और दक्षिण दिशा में भेजा।

भगवान कोप्रणाम करकेजानकीकीखोज के लिए सब निकलतेहैं। हनुमानजी ने सबसे पीछे प्रणाम किया। हनुमानजी ने सीखाया पीछे रहना। पवनपुत्र है हनुमानजी। श्रीराम भगवान ने हनुमान कोनिकटबुलाया और मुद्रिकाका प्रसाद दिया, 'हनुमंत, जानकीमिले तो ये निशानी देना। इस मुद्री से संवाद करलेना।' मुद्रा संवाद है। संकेतसंवाद है, अदायें संवाद है। तो, बहुत जगह खोज करते-करतेसब निकले और थक गये। स्वयंप्रभा मिली। उनसे संवाद हुआ। फिर संपाति मिला, उनसे संवाद हुआ। फिर 'किष्किन्धाकांड' का संवाद पूरा हुआ। लंका में जाने के लिए हनुमानजी तैयार हुए और 'सुन्दरकांड' का आरंभ हुआ -

जामवंत के बचन सुहाए।

सुनि हनुमंत हृदय अति भाए।।

तब लगि मोहि परिखेहु तुम्ह भाई।

सहि दुख कंदमूल फल खाई।।

हनुमानजी ने लंका में प्रवेश किया। छोटा-सा रूपलिया। एक-एकमंदिर में देखते हैं, लेकिनसीता को नहीं देखा। रावण कोसोया पाया। उसके बाद 'भवन एक पुनि दिख सुहावा।' एक भवन देखा जहां भिन्न हरिमंदिर है। ये विभीषण का भवन है। हनुमानजी विभीषण के भवन में जाते हैं। विभीषण जागता है। विभीषण और हनुमानजी का संवाद हुआ। फिर हनुमानजी को युक्ति बताई और हनुमानजी अशोक वाटिका में आते हैं। और फिर माँ जानकी और हनुमानजी का संवाद होता है। हनुमानजी ने अपना परिचय दिया और फिर माँ ने बहुत आशीर्वाद दिया।

गोस्वामीजी कहते हैं, फिर हनुमानजी बांधे गये। लंका में पेश किये गये। हनुमान और रावण का संवाद। लंकादहन हुआ। हनुमानजी ने लोकमान्यता को जला दी और फिर श्रीहनुमानजी माँ के पास आये। सीताजी ने चूड़ामणि ऊतारकर हनुमानजी को दिया और माँ से विदा ली। श्रीहनुमानजी लंका से छलांग भर के समुद्र तट पर आये और फिर राम और हनुमंत का संवाद होता है। वहां तुलसीजी लिखते हैं -

यह संबाद जासु उर आवा।
रघुपति चरन भगति सोइ पावा।।

राम और हनुमानजी का संवाद जो कोई गायेगा उसको रघुपति के चरणों में प्रेम प्राप्त होगा।

अभियान आगे बढ़ा। सबको लेकर प्रभु समुद्र के तट पर आये। यहां रावण की सभा में विभीषण का त्याग कर दिया गया। विभीषण राम की शरण में आया। हनुमानजी के संकेत से प्रभु ने उसका स्वीकार किया। अब समुद्र को कैसे पार किया जाय? प्रभु के सामने सुजाव आया। कुलगुरु है समुद्र, विनय करो। तीन दिन बैठो, अनशन करो। समुद्र रास्ता दिखा दे तो हमें संघर्ष नहीं करना। प्रभु ने अपनी नीति नहीं छोड़ी। तीन दिन ठाकुर ने अनशन पूरे किए। प्रभु ने धनुषबाण उठाया ही और सागर के पेट में ज्वालायें ऊमटी। विप्र के रूप में मोती का थाल लेकर स्वयं समुद्र आया।

फिर 'लंकाकांड' के आरंभ में सेतुबंध की रचना हुई। उत्तम धरणी में भगवान शिव की स्थापना की। रामेश्वर नाम दिया। शिव के आशीर्वाद प्राप्त करके रामजी लंका में पहुंचते हैं। राजदूत के रूप में अंगद को भेजा गया। रावण और अंगद का संवाद। अंगद ने रामकृपा से अपना प्रभाव दिखाया। संधि सफल नहीं हुई और युद्ध अनिवार्य हुआ। धमासाण युद्ध होता है। और एक के बाद एक वीरगति को प्राप्त करते हैं। कुंभकर्ण का निर्वाण, लक्ष्मण को मूर्छा। इन्द्रजित का निर्वाण। और आखिर में रावण के सामने प्रभु का युद्ध चलता है और तीस बाण से दस मस्तक बीस भुजा को काटने की चेष्टा। इकतीसवां बाण नाभि में मारा गया, छेदन हुआ। 'राम' कहकर रावण पृथ्वी पर गिरा और उसी समय रावण का तेज प्रभु के चेहरे में समा गया। मंदोदरी ने प्रभु की स्तुति की। रावण का निर्वाण हुआ। विभीषण का राजतिलक हुआ। जानकी को बुलाया गया। मूल जानकी प्रकट हुई। पुष्पक विमान में जानकी सह अपने मुख्य-मुख्य सेवकों को लिए भगवान उड़ान भरते हैं। जानकीजी को सेतुबंध दिखाया। रामेश्वर का दर्शन किया। इससे पहले हनुमानजी को भेज दिया कि तुम भरत के पास जाकर खबर दे दो। सबके मनोरथ प्रभु पूरा करते हैं। यहां 'लंकाकांड' पूरा होता है।

हनुमानजी ने आकर भरतजी को कहा, 'मैं मारुतपुत्र हनुमान प्रभुजी की खबर लेकर आया हूं। प्रभु, लक्ष्मण और माँ जानकीजी सकुशल लौट रहे हैं।' सुनते ही भरत दौड़े! अयोध्या में विमान ऊतरा। प्रभु ने जन्मभूमि को प्रणाम किया। सब मिले। गुरु को प्रणाम किया। राम-भरत दोनों मिले तो अवधवासी निर्णय नहीं कर पाये कि कौन वनवासी? प्रभु ने ऐश्वर्य प्रकट किया। सबको दर्शन दिए। भगवान ने अमित रूप लिए।

माँ कैकेयी के चरण छुए। चौदह साल पहले जो राज्यारोहण के अलंकार थे वो प्रभु ने पहने। राजचिह्न धारण किया। दिव्य सिंहासन आया। राम के पास सिंहासन आया। सत् सत्ता के पास नहीं जाता, सत् के पास सत्ता जाती है। पृथ्वी को प्रणाम, माताओं को प्रणाम, गुरुजी और आचार्यों को प्रणाम करके, सूर्य को प्रणाम करके दशों दिशाओं को प्रणाम करके और जनता को प्रणाम करके भगवान गादी पर बिराजमान हुए। जानकी बिराजमान हुई और विश्व को रामराज्य यानी प्रेमराज्य का दान करते हुए गुरुदेव वशिष्ठ जी ने राम के भाल में तिलक किया-

प्रथम तिलक बसिष्ट मुनि कीन्हा।
पुनि सब बिप्रन्ह आयसु दीन्हा।।

दिव्य रामराज्य का वर्णन हुआ। समयमर्यादा पूरी हुई। जानकी ने दो पुत्रों को जन्म दिया। ये नरलीला है। ऐसे ही तीनों भाई के घर भी दो-दो पुत्र जन्मे। रघुकुल के वारिस का नाम बताकर तुलसी ने रामकथा को विराम दिया। शेषभाग में गरुड की कथा है, कागभुशुंडि जी की आत्मकथा है। गरुड जी के सामने सात प्रश्नों के जवाब देकर बाबा कागभुशुंडि जी कथा को विराम करते हैं। यहां याज्ञवल्क्य महाराज का संवाद जो भरद्वाजजी से चल रहा था, पूरा हुआ। और भगवान शिव ने कैलास के ज्ञानघाट से कथा को विराम दिया। शरणागति के घाट पर बैठे कलिपावनावतार पूज्यपाद गोस्वामीजी अपने मन को संबोधन कर रहे थे, वो पूरा करते हुए बोले -

यह सुभ संभु उमा संबादा।
सुख संपादन समन बिषादा।।
भव भंजन गंजन संदेहा।
जन रंजन सज्जन प्रिय एहा।।

ये उमा और शंकर का मंगलमय संवाद कैसा है? सुख संपादन करनेवाला है, सर्वप्राप्य है। एक मात्र राम को स्मरो, जिसका नाम पतितपावन है। तुलसी अपने मन को कहते हैं, तू राम का स्मरण कर, उसका नाम जिन्होंने गाया-सुना उनमें से किसको गति न मिली? अधम से अधम को भी गति मिली।

तुलसी ने संवाद विराम दिया। उन चारों की छाया में बैठकर मैं मोरारिबापू मेरे सद्गुरु भगवान की कृपा से आपके सामने संवाद कर रहा था, मेरी बोली को विराम दूं। व्यासपीठ के बल से समग्र इन्दौरवासी, समग्र भारतवासी, समग्र मेरा विश्व परिवार सबके लिए हनुमानजी के चरणों में प्रार्थना। एक युवान का मनोरथ, उसके परिवार का उसमें शरीक हो जाना और आप सबको साथ में लेकर ये आयोजन का होना। खुश रहो, खुश रहो, खुश रहो। हम सबका संवाद प्रभुप्रेम के नाते बना रहे। पूरे आयोजन से मैं अपनी संतुष्टि पेश करता हूं। ओर क्या कहूं? ये प्रेमयज्ञ का जो फल है, सावन मास है, महादेव की मौसम है। इसलिए हम सब मिलकर ये नवदिवसीय रामकथा 'मानस-संवाद' धूर्जटि भालचंद्र शेखर भगवान महादेव के चरणों में समर्पित कर देते हैं, 'हर हर महादेव ...'

लोग कहते हैं, 'प्रेम में देना ही होता है।' ये आधा सत्य है, पूर्ण सत्य नहीं है। प्रेम लेता भी है, देता भी है। और कभी-कभी प्रेम न देता है, न लेता है। कभी-कभी प्रेम दोनों से मुक्त होता है। प्रेम में मिलना भी है, बिछड़ना भी है। प्रेम नृत्य कराता है। प्रेम गाने को मजबूर करता है। प्रेम चूप भी करता है। प्रेम जगाता भी है। प्रेम सुलाता भी है। प्रेम तोड़ देता है और प्रेम बिखरे हुए आदमी के विचारों को इकट्ठा भी कर देता है।

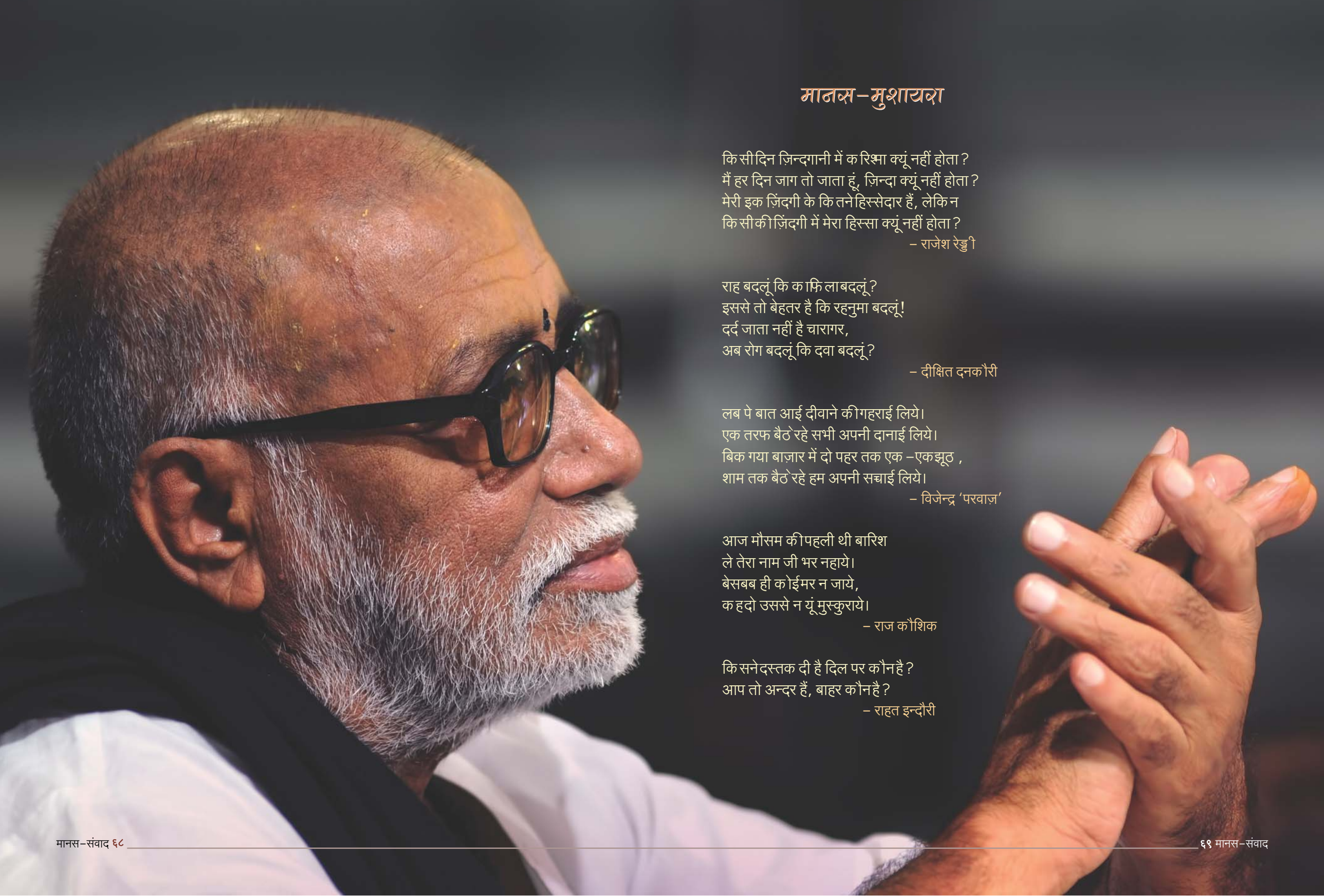

मानस-मुशायरा

किसी दिन ज़िन्दगानी में करिश्मा क्यूं नहीं होता?
मैं हर दिन जाग तो जाता हूं, ज़िन्दा क्यूं नहीं होता?
मेरी इक ज़िंदगी के कितने हिस्सेदार हैं, लेकिन
किसी की ज़िंदगी में मेरा हिस्सा क्यूं नहीं होता?
– राजेश रेड्डी

राह बदलूं कि काफ़िला बदलूं?
इससे तो बेहतर है कि रहनुमा बदलूं!
दर्द जाता नहीं है चारागर,
अब रोग बदलूं कि दवा बदलूं?
– दीक्षित दनकौरी

लब पे बात आई दीवाने की गहराई लिये।
एक तरफ बैठे रहे सभी अपनी दानाई लिये।
बिक गया बाज़ार में दो पहर तक एक-एक झूठ,
शाम तक बैठे रहे हम अपनी सच्चाई लिये।
– विजेन्द्र 'परवाज़'

आज मौसम की पहली थी बारिश
ले तेरा नाम जी भर नहाये।
बेसबब ही कोई मर न जाये,
कह दो उससे न यूं मुस्कुराये।
– राज कौशिक

किसने दस्तक दी है दिल पर कौन है?
आप तो अन्दर हैं, बाहर कौन है?
– राहत इन्दौरी

क्वचिदन्यतोऽपि

गीता का आरंभ संशय, मध्य समाधान और अंत शरणागति है

'संस्कृतसत्र' के समापन में मोरारिबापू ने गीता-दर्शन व्यक्त किया

हम सब ने मिलकर जिनकी वंदना की वे कांटावालासाहब नादुरस्त और वय के कारण नहीं आ सके हैं। परंतु उन्होंने अपने अर्घ्य का स्वीकार किया। ऐसी ऋषिचेतना को मेरा प्रणाम। मेरी दृष्टि से संस्कृतसत्र-१३ पूजनीय स्वामी श्री तद्रूपानंदजी से शुरू होकर पूजनीय भाणदेवजी की वाक् आहुति से अच्छी तरह से संपन्न हुआ। वह भी 'इदं अग्नये न मम' के भाव के साथ हुआ। मैं सबको अच्छी तरह से सुनता हूं। यह मेरा स्वभाव है। मैं एक वस्तु में हंमेशा मेरी प्रशंसा करता हूं। यह दोष है, पर मैं इसे निकालना नहीं चाहता। आपको इतना तो कुबूल करना पड़ेगा कि मैं एक अच्छा श्रोता हूं। पूज्य स्वामीजी से लेकर भाणदेवजी तक जितने भी आए उन सबकी मुझे वंदना करनी है। उनके स्वाध्याय, तप की। आप हमारे लिए कितना तप करके आते हैं! हम तो तैयार भोजन पर बैठ कर लुत्फ उठाते हैं।

आप सबने यहां आहुति दी है, हमें प्रसाद मिला है। यज्ञ के पास बैठे तो प्रकाश मिलता है, सर्दी के दिनों में उष्णता मिलती है, वातावरण भी प्रदूषणमुक्त बनता है। हम इस सब के साक्षी हुए और हमें बहुत उष्णता मिली। कल आदरणीय वसंतभाई कहते थे कि कुछ एक इतनी सारी ऊर्जा ले आये कि उसमें से पांच प्रतिशत ऊर्जा मुझे मिल जाय तो मेरी उम्र के पांच साल बढ़ जाय! सही है, ऊर्जा माने उत्साह।

आज के समारंभ में मुझे ऐसा लगा कि सन्मान कांटावालासाहब का हो रहा है या मोरारिबापू का! पर आप सबका प्रेम है, यह मैं समझता हूं। प्रेम लायक-अलायक को कहां देखता है? यदि वह ऐसा करता है तो वह प्रेम नहीं, विवेक है। इसीसे मेरी व्यासपीठ विश्व को प्रेम देने निकल पडी है। मैं रामकथा को प्रेमयज्ञ कहता हूं। मुझे पता है, जब मेरे बारे में कुछ कहा जाता है तब वह प्रेम मेरी व्यासपीठ को समर्पित होता है। व्यासपीठ शाश्वत है। वहां पर बैठनेवाले बदलते रहते हैं। जिसका वरण वह करे वही वहां बैठ सकता है। साहब, प्रेम की एक सुगंध होती है। मैं ज्यादा नहीं बोलूंगा, क्योंकि मुझे विषय नहीं दिया गया है!

अमुक वस्तु बुद्धि से पर होती है। गुरु निझामुद्दीन ओलिया ने अभीर खुशरो को एक काम सौंपा था कि शाम को पीर की दरगाह पर लोबान का धूप ठीक वक्त पर करना। एक दिन अमीर भूल गया। निझामुद्दीन ओलिया भीड़ के बीच अपना एकांत ढूंढ कर बैठे थे। समय हो गया। पांच मिनिट और बीत गई। गुरु की आज्ञानुसार कार्य हुआ नहीं। उसे एकदम याद आ गई। वह उतावला हुआ, पर दरगाह की ओर पहुंचे इतने में लोबान की सुगंध आने लगी थी! उसे लगा कि धूपदानी तो वहां थी पर मैंने उस में लोबान नहीं डाला था। वह सीधा बुद्धपुरुष के चरण पकड़ कर कहता है, 'बापजी, क्षमा करना, मैं भूल गया था। पर इसमें लोबान आपने डाला था?' उन्हों ने कहा, 'मैंने नहीं डाला। मैं तो यहां से उठा भी नहीं हूं।' अमीर ने पूछा, 'तो फिर, यह खुश्बू कहां से आती है?' निझामुद्दीन ने जवाब दिया, 'यह भरोसे की खुश्बू है।' भरोसे की भी एक खुश्बू होती है।

एक अफवा ऐसी भी आती है कि बापू एवोर्ड देते हैं, तो उनके लिए नाम भी बापू ही सजेस्ट करते हैं! बाप, प्रत्येक एवोर्ड के लिए कमीटी ही नाम तय करती है। पर मुझे ऐसे प्रहार आनंद देते हैं!

मैंने जिसके हाथ में फूल दिया था,
उसके हाथ का पथ्थर मेरी तलाश में है।

यह किशनबिहारी नूर का शे'र है। मेरा तुलसी कहता है, 'निंदा-स्तुति उभय सम।' हम थोड़े आनंदित-प्रसन्न रहना सीखे तो ऐसा ही होता है। मिलिन्द गढवी का शे'र है -

में हसवानुं शीखी लीधुं,
दुनियाने मुश्केली थई गई!

'प्रसन्नचित्ते परमात्मदर्शनम्', जगत्गुरु शंकराचार्य कहते हैं, ईश्वर दर्शन के लिए और कुछ नहीं; बस, आप प्रसन्न रहिए। प्रसन्न रहने के लिए किसी साधन की आवश्यकता नहीं। किसी की कृपा द्वारा मन को तैयार करने की जरूरत है।

धार्या करतां वहेली थई गई,
जात सदंतर मेली थई गई.
बे फळियां जे प्रेम कर्यो त्यां,
वंड भींतथी डेली थई गई.
घेट पाछळ घेट चाल्या,
समजण सामे रेली थई गई.

तरलता और सरलता कवि का लक्षण है। उज्जैन के शिवमंगलसिंह 'सुमन' जब कविता पाठ शुरू करे तब वह अपना परिचय स्वयं देते हैं। इन शब्दों में परिचय देते हैं -

मैं क्षिप्रा की तरह सरल-तरल बहता हूं।
मैं कालिदास की शेष कथा कहता हूं।

मुझे मौत भी डरा नहीं सकती,

मैं महाकाल की नगरी में रहता हूं।

कवि को सभी छूट होती है। मिलिन्द का विनोदी शे'र देखिए -

दर्पणमां अेवुं शुं जोयुं?

जमकुडो शर्मिली थई गई!

मुझे लगता है, आप सब यहां केवल प्रेम के कारण आते हैं। इसका मुझे बहुत आनंद है। 'गीता' के बारे में ओर कुछ बोलने की ज़रूरत नहीं है। फिर भी आप कहें, तो कुछ कहूं। ज्यादा बोलने की इच्छा भी नहीं है और 'गीता' को लेकर कुछ कहने की पात्रता नहीं है। कैलास आश्रम को बहुत ही आदर के साथ सागरजी याद करते हैं। वहां के पीठाधीश विष्णुदेवानंद गिरिजी है, जो हमारे दादा है। वे तलगाजरडा छोड़ के चले गए फिर कभी गुजरात में आए नहीं है। वे प्रवचन करने मुंबई आते थे। साहब, उन्होंने पत्र लिखा कि दूसरा चाहे कुछ करो या न करो, अपने घर में 'रामायण' तो है ही, पर एक मंडलेश्वर के रूप में सूचन करता हूं कि लड़के रोज 'गीता' पाठ करे और उस वचन को हम निभाते रहे हैं।

'गीता' का नित्य पारायण होता था। 'पंचरत्न गीता' पुस्तक आती थी। इसका पाठ मैं करता था। हमारे गांव में भागवतजी के कथाकार और संस्कृतज्ञ जगजीवनदादा शास्त्रीजी थे। उनके घर के सामने ही मेरे चाचाजी की दुकान। मैं वहां जाकर बैठूं और समय मिलने पर मैं दादा के पास जाकर थोड़े अर्थ समझ लूं। बस, वही मेरा 'गीता' दर्शन। बाकी मेरा कोई अधिकार नहीं है।

मैं पंडित रामकिंकरजी महाराज को याद करता हूं। उन्होंने एक सुंदर निवेदन किया है कि 'गीता' योगशास्त्र है। पर 'रामचरित मानस' प्रयोगशास्त्र है। 'गीता' में जिनजिन योगों का वर्णन है उसके प्रयोग 'रामचरित मानस' में हुए हैं। 'क्रोधात् भवति संमोह ...' पर इसके प्रयोग 'रामायण' में हुए हैं। इसमें से यह जन्मा, यह जन्मा, ऐसा सरस और सटीक है। तो, 'गीता' योगशास्त्र है ही। कितकितने एन्गल से 'गीता' को देखें तो समाप्त ही न हो और रोज नए विचार हम प्राप्त करते हैं।

आदरणीय अजितभाई ठाकोर कल ऐसा कहते थे कि 'रामायण' में 'गीता' नहीं है। 'महाभारत' में 'गीता' आई। अपने यहां ऐसी परंपरा हो गई कि ज्ञान, भक्ति, कर्म, योग, यज्ञ आदि-आदि जो 'गीता' के लक्षण है, जो प्रसंग में आते हैं उन्हें हम 'गीता' नाम दे देते हैं। अतः 'रामायण' में भी 'रामगीता' है, 'लक्ष्मणगीता' है। 'अनसूयागीता' है। 'भुशुंडि जीगीता' है। उसे 'गीता' नाम दे दिया है। कल उन्होंने अच्छी बात बताई कि युद्ध के मैदान में 'भगवद्गीता' का अवतरण हुआ यों 'रामायण' के युद्ध में 'गीता' नहीं है। मुझे विनम्रता से कहना हो तो ऐसी बातें जहां पर होती हो उसे हम 'गीता' नाम दे सकते हैं। 'रामायण' के युद्ध के रणांगण में धर्मरथ है और उसमें सबसे पहला विषाद विभीषण को हुआ है। रावण के भाई को हुआ है। तुलसी की पंक्ति है -

रावनु रथी बिरथ रघुबीरा।

देखि बिभुषन भयउ अधीरा।।

रावण रथ में है और भगवान बिना रथ के नीचे है। इस दृश्य को देखकर विभीषण का विषाद शुरू होता है कि यह कैसे पराजित होगा? फिर भगवान उसे धर्मक्षेत्र में कही गई 'गीता' नहीं, पर धर्मरथ में कही गई 'गीता' कहते हैं। 'विभीषण, जिससे विजयश्री मिले वह रथ ही दूसरे किस्म का होता है।' वह द्विधा में है। साहब, फिर एक दोहा है जिसमें 'गीता' के प्रायः सभी सूत्र आ जाते हैं। तो, हम कह सकते हैं कि 'गीता' के सूत्र सभी जगह मौजूद है। इस एक दोहे में कर्मयोग, ज्ञानयोग, भक्ति योग संयम-नियम सब की बात बता दी है -

सौरज धीरज तेहि रथ चाका।

सत्य सील दृढ़ ध्वजा पताका।।

विभीषण, जिससे विजय मिले, वह तेरा भाई जिस रथ पर बैठकर आया है, वह वास्तव में रथ नहीं है। विजयी रथ तो वह होता है जिसके दो चक्र शौर्य और धैर्य है और रथ के ऊपर धर्मरथ की ध्वजा और पताका सत्य और शील की हो। फिर उनके अश्वों का वर्णन है। लगाम का वर्णन है। वहां पर भगवान कृष्ण सारथि है, यहां पर भगवान स्वयं युद्ध में है। रावण के सामने लड़ना है। 'नहि पदत्राण', पांव में, पदत्राण नहीं है और राम बिलकुल पैदल है। तो, विजयश्री कैसे प्राप्त होगी? तो, धर्मरथ का जब वर्णन किया तब तुलसी इसके सारथि के बारे में बताते हैं -

ईस भजनु सारथी सुजाना।

बिरति चर्म संतोष कृपाना।।

भगवान का भजन ही सारथि है। साहब, कोई गलत-सही माला फेरता हो तो उसकी आलोचना मत कीजिए। साहब, माला इन्द्रियों को रोकने की लगाम है। हरिनाम की ताकत जप है। यहां भगवान का भजन सारथि है, वहां भगवान सारथि है।

संक्षेप में, जहां 'गीता' के सूत्र आते हो वहां उसे हम 'गीता' कहते हैं। अतः हम 'रामायण' के कथाकार कहते रहते हैं कि यहां-यहां पर 'गीता' है। 'गीता' कहां नहीं है? 'गीता' हर जगह पर है। 'गीता' सर्वत्र न रहे तो 'गीता सुगीता कर्तव्यां' इसमें कहीं वो हो जाय! गंगासती के भजन में भी 'गीता' है। अरे! अपनी लोकबोली में 'छूटा छवाथी छूटी गीया सागमटे संबंध, हवे तो एक ज राखवो अकबंध रावत द्वारकाधणी।' छोटी-छोटी पंक्तियों में भी अनासक्ति भाव है। 'गीता' सभी जगह पर है। जहां-जहां तक लीफ़ हो वहां राष्ट्र पति को जाना चाहिए। 'गीता' का योग 'रामायण' में कई प्रयोग करके ज्ञान प्रकाश प्रदान करता है।

मेरी दृष्टि से 'गीता' का प्रारंभ संशय से हुआ है, मध्य समाधान और अंत शरणागति का लगा है। मेरा चित्त द्वन्द्व के कारण भ्रमित है। इस संशय से 'गीता' का आरंभ होता है। कहीं मध्य में। संदेह तीन रीति से प्रकट होता है। मेरी दृष्टि से तो एक दृश्य देखकर संदेह प्रकट हो। 'ऐसा हो?' यों घटना हमारे मन में संदेह प्रकट करती है। दूसरे, सुनकर संदेह प्रकट होता है। हमें कुछ पता नहीं पर कोई ईश्वरदत्त प्रकृतिधारीयों ही कान में कुछ कहता है। यों किसी को सुनने से भी संदेह उत्पन्न होता है।

'भागवत' की पहली भक्ति श्रवण है। पर किसे सुने? उसे सुनिए जो कभी आपको लेकर बुरा न माने। आप चाहे जितना अपमान करे उसे बुरा न लगे। ऐसी व्यक्ति को सुने। हमारे वक्ता पर हमें भरोसा होना चाहिए। अपने बुद्धपुरुष पर हमें भरोसा होना चाहिए। हम चाहे जितने नालायक हो जाय तो भी मेरे बुद्धपुरुष को बुरा नहीं लगेगा। उसके गर्भ से सात वाणी का प्राकट्य हो यों वेद कहे और 'सप्तवाणी' कहकर विनोबाजी उसके अलग-अलग अर्थ प्रदान करे। अपने यहां परा, पश्यन्ति, मध्यमा, वैखरी चार वाणी है। ये सात कैसे? दूसरी तीन कौन-सी? कोई मुझसे पूछे तो मैं कहूं कि पांचवी वाणी गुरुवाणी है। अर्जुन 'शिष्यस्ते अहं' बोलता है। 'मैं आपका शिष्य हूं', पर वह आखिर में वचन पालन करता है। 'करिष्ये वचनं तव' यह तो आखिर में हुआ। हम भी कईयों को कहते हैं 'हम आपके शिष्य हैं', पर अपना मानना नहीं! तो, गुरुवाणी अथवा शास्त्रवाणी।

छट्ठी वाणी अपनी अंतर्वाणी। 'अन्तःकरण प्रवृत्तय।' हमें अंदर से जो कुछ स्वाभाविक सूझे और सातवीं चक्षुवाणी है। आंख की अपनी बहुत बड़ी वाणी

है। साहब, वह आंख खुलती हो तभी बोले ऐसा नहीं, बंद आंख भी बोले। बुद्ध की बंद आंख भी बहुत बोल गई। अब, ज्यों कोई मौनी हो और उसे प्रेम में बहुत उबाल आए तब वह मौन तोड़ डालताहै। आंख की वाणी मौन नहीं रह सकती। तो, उसके अक्षर अश्रुबिन्दु है। 'निशदिन बरसत नैन...' कलहमारा कच्छी भाडु गाता था 'श्याम विना व्रज सूनुं लागे।' यह कृष्णवियोगमें सूना लागे, यह गुजराती में कहाजा सके ।प्रेम की इससे ज्यादा अनुभूतिपूर्ण व्याख्या क्या? मुझे उसके बगैर सब सूना लगता है। गोपी कितनी सुंदर बात करती है कि नंदराय को संदेश देना; और एक ही मांग कि 'हम रंक पर रिस न किजे।' उर्दू काशे'र -

मुझे अपना बना ले यहीं मैं चाहता हूं।
इसके सिवा तेरे पास ओर कुछनहीं मांगता हूं।

बस, तो कोई बुद्धपुरुष की वाणी! अपने अंत:करणीय प्रवृत्ति द्वारा उत्पन्न अनुभूति और चक्षुवाणी। जो भी हो, में तो अपने ढंगसे सोचता रहता हूं।

तो, किसीकी बात सुनकरभी संदेह होता है। दृश्य देखकरभी संदेह होता है। तीसरा, संदेह उत्पन्न होने का कारण स्वभावगत संशय। मुझे जो लगता है वही कहताहूं। दो जनें बात करतेहो और तीसरी व्यक्ति का कोईलेना-देना न हो। उसे बस में जाना है, समय हो चुकाहै फिररूकजाता है; सोचता है, 'ये दो क्या बातें करते होंगे?' यह स्वभावगत संदेह है। 'महाभारत' में अर्जुन के मन में कहां-कहांसंदेह उत्पन्न हुए है यह भी बताना चाहता हूं। इसमें स्वभावगत संदेह भी है। घटना देखी, शंखनाद हुए, ज्येष्ठ जन देखे और इनमें से उसे द्विधा उत्पन्न हुई। वह किसीकाबहकाया हुआ नहीं है। यह आरंभ है।

मध्य में समाधान है। यह भी तीन रीति से होता है। एक तो हमें कोईदिखा दे। अर्जुन कोविश्वरूपदर्शन करनेसे समाधान हुआ। दूसरा, भगवान कृष्णकीवाणी ने समाधान करलिया। तीसरे, आखिर विभूति उसकीहै यह भी कारणहोगा। और 'गीता' के अंत में शरणागति है। हमारे शास्त्र में शरणागति छ :प्रकारकीहै। मैं जिसे निकटमानता हूं वह है भरोसा। दूसरा, किसीबुद्धपुरुष के वचन के अधिकारी बनिए। सुनकर शरणागति हो जाय। विभीषण प्रभु के गुणगान सुनकरशरण में आया है। अपना भीतरी भाव धक्का देता है कि तू वहां जा।

आप सबके आशीर्वाद से मैं 'गीता' को इस तरह से भी समझने काप्रयत्न करताहूं कि अपने जीवन में यदि संदेह हो तो समाधान इस तरह से पाए जाते हैं और अंत में भरोसा रखकरअपनी शरणागति सिद्ध होती है। विशेष न कहतेहुए, पुन: एक बार 'वाचस्पति संस्कृत एवोर्ड' कांटावालाबापाने कुबूलरखा। उन्हें साधुवाद करे, प्रणाम करे। आप सबको प्रणाम। आपने बहुत आनंद दिया है, साहब। 'मानस' कीचौपाई है -

सदा रहेहु पुर आवत जाता।

भगवान ने हनुमानजी को तो बिदाई दी ही नहीं है। सबको बिदा किया। जिनके पुण्य खत्म हो जाय उन्हें मृत्युलोक में आना पड़े ।हनुमान तो पुण्यपुंज है। उनके पुण्य खत्म नहीं हुए थे। इसीलिए वे वापिस नहीं आए। परंतु भगवान ने जब केवट को बिदा दी तब इतना ही कहा, 'तुम मम प्रिय भरत सम भ्राता', 'तू मुझे अपने भरत जितना ही प्रिय है, तो तुझसे एक वस्तु मागता हूं', 'सदा रहेहु पुर आवत जाता', समय मिलने पर तू अयोध्या आना। बाप, समय मिले, तलगाजरडा आईयेगा।

'संस्कृतसत्र-१३' के अवसर पर कैलासगुरुकुल,महुवा में प्रस्तुत वक्तव्य: दिनांक १०-९-२०१३